महद भक्त
हरिदास भाई
रचित
भक्त सुख मंजरी
ग्रंथ

Suresh Kanani
7878142900

महद भक्त हरिदास भाई रचित

भक्त सुख मंजरी

ग्रंथ

Suresh Kanani

7878142900

॥ श्री ॥

॥ भक्त सुख मंजरी ॥

महेद भक्त हरीदासभाई कृत

श्री गोकुलेशो जयति

॥ दोहा ॥ भक्त सुख मंजरी ॥ प्रथम प्रभाव ॥ १ ॥

चरण कमलरज चित्त धरो । करो नमन बहुवार ॥
यो ते सब रस पाईओ । वल्लभ लीला रस सार ॥ १ ॥

प्रथम ग्रंथ आरंभ निज । इष्ट देव जे सोय ॥
कृपादान सामर्थ्य ते । रस वृष्टि करे ततखेव ॥ २ ॥

श्री गोकुलेश सकलाभरण । पोषण गुण रससार ॥
निज इच्छा आशे समजके । वचन जु करु प्रकाश ॥ ३ ॥

जद्यपि कछु समज्यो नहि । पढ्यो गण्यो न विशेष ॥
तद्यापि चरण रज चित्त धरी । बाध्यो बलजु विशेष ॥ ॥ ४ ॥

रसना बहुत कहा कहु । तुम हो सदा सर्वज्ञ ॥
थोडे में विनंती कहो । निपर अग्यतर अग्य ॥ ५ ॥

प्रार्थना कर जोडी के । नमन करी मागो राज ॥
यह समजायो ओर ते । सब एच्छावश हे काज ॥ ६ ॥

अे निर्गली.... इच्छा ते उद्देश । इच्छावश सब हे रहे उद्यमको नहीं लेश ॥ ७ ॥

यह सम्.... रि कुछ कहो वचन विलास ।
वळी अैसी इच्छा सबकरन को नमन करी हरीदास ॥ ८ ॥

अब भक्त शिरोमणी ज्यों रसिक । या लीला रसके जाण ॥
ताके चरण की अेक रज । सो फीरी फीरी मांगो मान ॥ ९ ॥

जे रज दुर्लभतर अतीही । सर्व करण सामर्थ्य ॥
दाता प्राता दया ज्युत हीं । सकल अर्थ को अर्थ ॥ १० ॥

थोडे में थोडी करी । प्रार्थना जेमुल ॥
निज भक्त चरण रज शिर धरो । दास रहो अनुकुल ॥ ११ ॥

आरंभित अे ग्रंथ को सो संपूर्ण करवी आश
इच्छा वश ते प्रारथी । नमन करत हरिदास ॥ १२ ॥

स्वरुप नेष्ट सुख मंजरी। यह भक्तनके सुखहेत ॥
पुष्टि सृष्टि नीके सुने ॥ सब वचन सुं स्वरुप समेत ॥ १३ ॥

रसीक भक्त सुख मंजरी । यह कह्यो ग्रंथको नाम ॥
हरिदास कहे जाके पढे । अनुराग बढे अभिराम ॥ १४ ॥

प्रथमप्रभु प्रागट समे । शुभ लग्न सुं कह्यो प्रकार ॥
ग्रहगत जे जाणें रहे । अेक अेक तेसार ॥ १५ ॥

भाग्यरास गर्गादीकन तें । हे सोमा जोषी नाम ॥
उनिल ग्रस्यष्टि करीके लीख्यो॥ सो सब कहो अभिराम ॥ १६ ॥

भाग्यरास जब कृष्णदासी । कह्यो जु वचन रसाळ ॥
गोकुलनाथ प्रगटे अबही । सोही धर्यो इष्टकाल ॥ १७ ॥

संवत सोलसे पर । वरस भये जब अष्ट ॥
अगहनमास सुदी सप्तमि । भइ महारस वृष्टि ॥ १८ ॥

वार शुक्र निशी। प्रथम गत छप्पनपल घटी अेक ॥
नक्षत्र पुरवा भाद्रपद । योग सिध्धी नाम विषेक ॥ १९ ॥

मिथुन लग्न कीयो स्पष्ट । तब धन संक्रांत को मास ॥
राश कुंभ तब सिध्ध भइ। अब ग्रहगन कीयो हरिदास ॥ २० ॥

गुरु दुजे राहु तीसरे । षष्टम् बुध सहाय ॥
शुक्र मंगल रवि सप्तमही । रहेंशुं अपने भाय ॥ २१ ॥

चंद्र शनिश्चर केतसो । नवमें रहे हें आय ॥
वांचित ग्रह गणके भये । प्रगटे गोकुलराय ॥ २२ ॥

कोटिकल्प विते प्रथम। मनोरथ कीनो जो ही ॥
जोग राशी ग्रह तारिका । सब पूर्ण काम कीये सोही ॥ २३ ॥

स्थूल मान सब कह्यो हे । भाव अनंत अपार ॥
सु कहत बढे विस्तार । बहु तो कोहु न आवे पार ॥ २४ ॥

अब आगे लीला कहो ललीत। मांगल्य वधाइ मोद ॥
थोडे में बहु प्रगटी हे। आनंद परम प्रमोद ॥ २५ ॥

॥ सवैया ॥ श्री विठ्ठलनाथ के घर मंगल ॥ मंगल मंगल पूत भयो हे। रात ही मंगल प्रात ही मंगल मंगल गान ते मांहे गायो हें। मंगल बाजत मंगल गाजत । मंगल राजत नेह नयो हे । मंगल फुले नग फुले शिशु फुले अरु नार फुली वेही रस भरे त्यां । फुले नर फुले नार फुले हर फुले बाग फुले जल जंतु फुले कमल जु सरते । फुली ब्हेन फुले भ्रात फुली काकी फुली मात फुले हरीदास सबघर फुल्यो घरते मोद बढ्यो मही मंडलमांज श्री विठ्ठलनाथके वल्लभ आयो। मोदसो दान दिये बहु विप्रको रानी रुक्ष्मणी पुत सुजायो । मोद भयो घर ज्ञाति पहीरावत भूषण वस्त्र । जिन्हे जोइ भायो । मोद भरी जु सखी हरीदाससु श्री मुख देखी सुहाग बढाये

॥ दोहा ॥ प्रागट्य समे कछु इक कह्यो । यह लीला मूरतवंत ॥
अति अपार अगाध्य बहु । क्योंउ कहु न पावे अंत।
कोउ पृथ्वी रजकन। गनी शके । ये लीलाको नहि पार ॥ तो ते थोडे में कह्यो।
अे लीला अतीही अपार । में आंखनी सामे वसी रही कवित पढे जब कोइ।
थोडेमेंही अनुभव लहे । हरीदास कहे सब कोइ ।

अब कछु बाल चरित्र कहो । थोडे में रस रुप । गुन निधि गोकुलनाथकी। लीला अति ही अनुप

। इति श्री भक्त सुख मंजरी ।

। येन प्रभु प्रागट्य वर्णनो नाम । प्रथम प्रभाव ॥ १ ॥ संपूर्ण ॥

। श्री । श्री । श्री ।

॥ भक्त सुख रस मंजरी ॥

॥ द्वीतीय प्रभाव ॥ २ ॥

॥ **सवैया** ॥ गुसांई श्री वीठलनाथके मंदिर उच्छव मंगल नीत्य बढे है। छट दीना आदी ते उच्छव ज्यों वही पलना अलंकार गढे हें। छाटे बडे कहां लो गीनीये अन प्रासन उच्छव वीप्र पढे है। उछव हे हरीदास महा जन्मोच्छव उछव ओप चढे हे ।

श्री वल्लभ राजकुमारके वल्लभ याने श्री वल्लभ नाम धर्यो हे। गवइ पुरतें सुन देखन आवेसो भक्त ओर ज्ञातिसो मोंन भर्यो है दीन ओच्छव यों चलेजात नीत प्रत दासनको सब काज सर्यो हे हरीदास सुने सबलोग कहे। वीठ्ठलेश राज जु तप कोंन कर्यो हे।

बाल विनोद भरे बहु मोदसुं बालकृष्ण शिशु पे धसी आवे। श्रीमुख देखी हसे कीलके रुची बालक कों अेह देखे ही योंही भावे । नीचे नीहोरी कहेअे। लला तही धरके सबही सचुपावे। सु ओर नीबाही कहे । हरीदास अे बालकृष्ण सो प्रती कहावे।

अति बड भाग्यनी सुं परम सुहागनी। तु माहारानी रुकमनी कमनी बीराजे हे। मगइ जो नागवेली जाकोरस रंग रेली। कनक कचोली कर सोहे सुत काजे हे । पाओजु पसारी सीस गोदमें पोढाये पाछे रस प्यावे मुख तरजनी भ्राजे हे। कहे हरीदास वारी कटोरी उलटी डारी तनमनधन वारे सुखीजु समाज हे।

श्री वल्लभकोजु नव्हावती सहीज अरु पोढाइ रुकमनी रानी शीतल दव्य चंबेली गुलाब के तेल ते लावती हे वहेबानी चंदनकेसर अंबर ओर सुगंध अनेक अरगजा छानी। सुं डारती अंग सखी हरीदास अरु तातो समोइ सुहातो जु पानी

नीके नहवाइ अंगोछती आपुन गोद ते राखी रुकमणी माइ। अतिकोमल वस्त्रलीये सखी सुत लायक गोकुल नाथके जो नुत्तदाइ। स्वच्छ भये फीर तेल सुगंध चढाइ सखी नहु आंख अंजाइ कोमल नाज धीछे हरीदास झुलावत हे पलनाजु पोढाइ

श्री गोकुल नायकु गोद लीयेनु खीलावती हे जो रुकमणी रानी मोद भरे हुलसे बीलसे कछु बोल्यो जो चहाय अलप सुबानी पे आवे ही सीनुता बसते जब मात तबे मनमें मुसकानी। आई सखी हरीदास ततक्षणसो कही फीर यही कहानी।

श्री वीठलनाथ श्री गोकुल नाथकुं ले कनीया अंगनामे ठाडे हे। देखत रुप अनुप निरुपम त्योंही हुलास जु बाढे हे। करसों गहे मालसु खेलत बाल तबे श्री गुसाइजी चांपत गाडे। न छोडेनु माल कहे हरीदास नुजान भविष्य जु आनंद बाढो हे।

बाल वीनोदमें श्री रुकमणी दे चुटकी सुतको जो खीलावे। भक्त सबे घेर घेर रहे यह देखन के रस को घनी आवे। कीलके ललके चमके चिलके रस रास मइ सखी मीली कंठ लगावे। चुंबन गाल करे परीरंभन चांपी कुचबिच ताप नसावे सखी गोद खीलावती गोकुलकोनाथ। चुंमत याथले मोद भरी हे। भुषण भार उतार धरे शिशु कोमल जान दया जु धरी हे। लखी हरीदास सखी जीयकी यहते अपनी मन आध हरी हे। छाती छुआय सुहाय सुहागन वल्लभ चांपत चार सही हे ॥ १० ॥

सखी आज रुकमणी अपने लालको नीके बनाय श्रीगारु करे हे। चोटी गुही य चौआ भरी सीस फबे फुदना पचरंग धरे हे। चंदनकी बींदुली तीलके बीच आंजे हे लोचन लाल खरे हे। आइ सखी उतते अबहु ललना कीलके पलना उलरे हे।

श्री वीट्ठल नाथके मोंन भवनमें भोरही भीर भरेजु लुगाइन आवत। वल्लभते वीछरी हुती रातसु प्रात उठी अकुलाये के धावत। बाल चरीत्र वीचीच भइ सब तोतरी भाषा ये। बाल बोलावत लेत उठाये रुदय दे धरके हरीदास कहे तन ताप नसावत

अपने अपने मन भावती लावे रसाल बे । सीसुके मिस आइ खीलावे । इन ते ऊनपे इनते छुटवन चले सबपे धसी आवे । अपने अपने मन भावती चाह खीलावत है सबही सचु पावे ॥ गोकुलनाथ सनाथ करी सबही हरीदास ये भो नही भावे

बाल बीनोद प्रमोद रुकमणी दे चुटकी सुतको जो खीलावे । नींद भरे जु अेडात हे गात तबे पलना में पोढाइ झुलावे। आइ गइ जब ओर वधु तब नींद गइ संग खेलबो भावे । जुके कहे मात सखी हरीदाससो काहे नित: प्रति आय जगावे ॥ १४ ॥

घुंट्या जो चले घुंघरु धुनने घुघराटी लटे ललके सुख देनी चंदनकी बिंदुली धरे भाल वीसालसे नेंन सोहे भ्रुपेनी तीलक गोरोचन गोरे लिलाट दीठो नाहे । स्याम उपमा यह लेनी कहे हरीदास रुकमणी मायसो आय भीलीसो धसीजानो त्रिवेनी ॥ १५ ॥

अंगुटीन गहे चलना सीखावे आंगना माहे आंनी दामोदर दासी । पेड चले दोचार तवेदुर बेठ गये दोउ आइ हे हांसी। कंठ लगाय के चुंबन चारु कीये फीर गोद लीये सुखरासी । फुदी फीरे लीये वल्लभको हरीदास कहे घरमे कमलासी ॥ १६ ॥

क्षीर भर्यो मुखनीर सो धोवत सोभाजु वल्लभको धरीहाथही।
केस सुदेस कछु उरझे कर कंगही ले जु समारत माथही।
वस्त्र भींजोयके पोंछत अंगही रंग भरी लीये गोकुल नाथही।
ठाडी सखी हरीदास सु समुहसो देखी प्रसन्न भइ सब साथही ॥ १७ ॥

अतिफुल फुली माय फुलसो ललाको लाय लीये बंक लेउ बहु आनंद के। भरते फुलयो तन फुल्यो मन फुलयो फीरके जोबन फुल्यो हृदय कमलजु वल्लभ उचरते ॥
फुलकर वारीजु श्रीवदन अंबुज फुल्यो । फुल्यो हे सरोज नेन कलेउ के करते।
पाया ओर सत्याजु फुले सोभाजु यमुना फुले हरीदास सब बाग भयो धर ते । ॥ १८ ॥

खीलोना खीलावतहे बहु भांतके भीतर मंदीर मांज महेतारी । बाहर आयके बोली सुनावत भक्त सखी नवजोबन नारी । धाय चले घुढुआ धमी धाम ते हे हरी आय खीलोना जु डारी । हरीदास उठायले आतुर चुंवत वल्लभ उपर जाउं हु वारी ॥ १९ ॥

।। सवैया ।। सखी आय लीने मोद वल्लभ खीलावे गोद नीत्य प्रत्य के बिनोद केसे कहो बतीयां । देखी देखी मन मोहे अेह उपमा को कहे सुंदर वदन सोहे नाहानी नाहानी दतीयां । बोलत अल्पवेन सुनी सुनी होत चेन चंचल चलावे नेन लाय लाय छतीया ।। चुमेहे कोमल गाल रसीक कपोल भालदेखे हरीदास ख्याल नइ नइ मतीयां ।। १ ।।

ठाडे रुकमणीलाल भींत टेकके रसाल जुरीबहु बाल ख्याल सब मद माती हे । अतिही आनंद भर नीरखे वल्लभ वर छोटे छोटे दोउ कर मठरी सुहातीहे । तन मन वारी सखी मागे मनुहार करी दीनी हस डारत वजाय छुही छातीहे। हसी हसी लोट पोट आछे जुकीनी चोट देख हरीदास ओट में आया मुसकाती हे ।। २ ।।

नेक दुरी ठाडे हे बुलावे सखी आपु तन पेंडु चार चली तब बेठी जात हसके । छोटे छोटे छोटे कर टेकी उठत हुलसके । दव्यो हे टेकोची याको चाकजु चरन तर फीर बेठ गये तब छाती दाबे धसके।। हरीदास कुच अग्रजु कसोटी श्याम कंचन वरन जु वल्लभ छांडे कसीके ।। ३ ।।

शीश पर सोहती हे सुंदर सुंदेस श्याम मकमल बीलायती की फुलही सुचारु हे। जटीत जडाव फुल फुले बहु भांतीकेजु नंग नाना रंगके रुचीर श्रीगार हे। रचेशुक सारस जु हंस मोर आस पास मोतीनकी जोती जगमगती अपार हे । रानी जु रुक्मनी जु समारी हे । वल्लभ हीत सखी हरीदास देखे सब वार वार हे ।। ४ ।।

अती रस मोद गोद खेलत गुसाइजीके परम विनोद सुत वल्लभ नवीनो हे । तब कृष्णदासी पास आयके जु ठाडी भयी लाइ हे मीठाइ सीध्ध भोग कछु कीनो हे ।। कह्यो अेहे लेहो लाल तब आपुकीनो ख्याल रुची रसाल बाल लीला रस भीनो हे शीशते उतार करी कुंडल टीले आगे धरी फुल्ये हरीदास तब सब हसी दीना हे ।। ५ ।।

अेक कर कमलमें कमल सनाल सोहे । दुजे कर कमलमें आम्रजु रसाल हे ।। खेलत आंगन माहे। सखी बहु आइ त्यांहा काहु हंसी गही बांह करे बहु ख्याल

हे ॥ वारी जु डारे हे सुमारे मनमानी ठोर देखी हसे ओर सब रस बस बाल हे ॥
कोउ मदभाती हरीदास ले लगावे छाती कोउ बाललीला रस चुबें दोउ गाल हे ॥ ६ ॥

॥ **दोहा** ॥ अब लग ये सवेया कहे । आगे कहु छंद प्रकार ।
पढत बढे मन मोद अती कर्णपंथ रसजु अपार ॥ १ ॥

॥ **छंद** ॥ **त्रि त्रभंगी** ॥ भज वीठ्ठलबाल गोकुल पालं ।
रसीक रसालं देह धरं। जय रुकमनी गोद में। परम विनोदं। प्रगट प्रमोदं।
मोहकरं जय सुंदर वक्रं। बाल चरीत्रं। परम पवित्रं।
मनुहारी जय जय रसरुपं । गोकुल भुपं परम अनुपं सुखकारी ॥ २० ॥

जय मंगल मंगल सहजसु मंगल दुरीत अमंगल जन त्राता। जय आनंद दायक।
बहु सुख दायक । दक्षण सहायक रसदाता। जयकंठा भरणं। परमसुवर्णं ।
अंगद धरणं रुचीकरता। जयलीला कर्णं माहा रस भरणं आधि सुहरणं भयहरता ॥ २१ ॥

जय लीला ललीतं सुफलीत फलीतं । कामसु दलीतं जयकारी जय जय वल्लभवर
। क्रीडा रसभर काम जुध्य कर देह धारी। जय रुचीरं बालं । प्रीती प्रपालं नयन
नचालं ॥ सेंन करं जय पुरववर्णं भकताभर्णं सीसुतन धरणं सिध्धवरणं ॥ २२ ॥

जय क्रीडा लोलं । केलीकलोलं अर्धसु बोलं । पूर्णफूलं जय उछवकारक ताप
नीवारक लीलास्मारक यशअमलं जयपुरणानंद । आनंदकंद स्मित सुछंद । परंम
वीभं जय जय अनुरुक्तं भक्त संयुक्तं अव्यक्तं हरीदासप्रभुं ॥ छंद ॥ संपूर्ण ॥ ॥ २३ ॥

॥ **दोहा** ॥ अेह भांत लीला कहुं बहोत पे ग्रंथ बढे वीस्तार ॥
रस सागर चांच क्यों आवही अेलीला अति ही :पार ॥ १ ॥

। इति श्री भक्त सुख मंजरी ।
। प्रभु बाल लीला वर्णनो नाम । द्वितीय प्रभाव ॥ २ ॥ संपूर्ण ॥

श्री । श्री । श्री ।

।। भक्त सुख रस मंजरी ।। प्रभाव ।। ३ ।। त्रीजो ।।

। अथ । स्वरुप वर्णन ।

।। दोहा ।। प्रागमे प्रगटे प्रभु । करी लीला बाल कुमार ।।
कीसोर जब पुरन बढयो । गोकुल आये तीहीवार ।। १ ।।

अब अपनो अनुभव कहु । श्री गोकुल लीलाधाम ।।
श्री गोकुलेस रस वस ही । विविध भांत अभीराम ।। २ ।।

सो कछु संक्षेप कहुं । जो पढे गावे गुने । सब कोय
सुनत सुनावत रस बढे । सहेजही अनुभव होय ।। ३ ।।

अब स्वरुप रुचीर वर्णन करु । उपमा उपमे नही लेश।।
थोरे ही वीस्तारमें । कहु रुचीरसुं सुंदर वेस ।। ४ ।।

।। अथ रुचीरं स्तोत्रं ।। प्रभु वेसं रुचीरं । केसं रुचीरं। तीलकं रुचीरं ।
चलकं रुचीरं । चलहं रुचीरं । रुचीरं रुचीरादी मये सकलं रुचीरं ।। १ ।।

वर्ण रुचीरं । कर्ण रुचीरं । कुंडलं रुचीरं ।
मंडलं रुचीरं । रुचीरादी मये सकलं रुचीरं ।। २ ।।

गलस्थलं रुचीरं । भ्रुचल रुचीरं । नासा रुचीरं ।
वासा रुचीरं । रुचीरादी मये सकलं रुचीरं ।। ३ ।।

नयनं रुचीरं । सयनं रुचीरं । दान रुचीरं ।
पानं रुचीरं । रुचीरादी मये सकलं रुचीरं ।। ४ ।।

मुख कमलं रुचीरं । अमलं रुचीरं । अधरं रुचीरं ।
मधुरं रुचीरं । रुचीरादी मये सकलं रुचीरं ।। ५ ।।

दंत रुचीरं । पंत रुचीरं । रेखम रुचीरं ।
शेपं रुचीरं । रुचीरादी मये सकलं रुचीरं ॥ ६ ॥

वचनं रुचीरं । कुचजुग रुचीरं । हास्यं रुचीरं ।
श्वासं रुचीरं रुचीरादी मये सकलं रुचीरं ॥ ७ ॥

ग्रीवा रुचीरं । शीवा रुचीरं । भाला रुचीरं ।
रक्षा रुचीरं । रुचीरादी मये सकलं रुचीरं ॥ ८ ॥

करजुग रुचीरं । हृदयं रुचीरं ।
नाभी रुचीरं । रुचीरादी मये सकलं रुचीरं ॥ ९ ॥

कटीतटं रुचीरं । पृष्ठं रुचीरं । वसनं रुचीरं ।
कसनं रुचीरं । रुचीरादी मये सकलं रुचीरं ॥ १० ॥

त्रिवली रुचीरं । जंधनं रुचीरं । संघन रुचीरं ।
रुचीरं रुचीरं । रुचीरादी मये सकलं रुचीरं ॥ ११ ॥

चरणं रुचीरं । वरणं रुचीरं । भरणं रुचीरं ।
करणं रुचीरं । हरीदास मये सकलं रुचीरं । इति रुचीरं स्त्रोत ॥ १२ ॥

॥ राग गौडी ॥

सखी आनंद रुपी अवेव गोकुलनाथको **॥ ध्रुवपद ॥** अे रसदाता रस
भोगता रस मइ सकल सयदेह ॥ नीरखी नीरखी नव
नायकाको बाढ्यो नवनव नेह ॥ गोकुलनाथ के ॥ १ ॥

केश सचीकण सोहे ही श्याम सुदेश सुढार ॥
कुंतल अलक बीराज ही । छबी घुघर वारे वार ॥ गोकुलनाथ के ॥ २ ॥

केसर तीलक सुभाल ही । मध्य रेखा स्याम सुरंग ॥
भ्रकुटी कुटिल असे बनी । दोउ छोटी धनैया संग ॥ गोकुलनाथ के ॥ ३ ॥

नेन चमल चीत चोरही । छुटे मानुनी के मान ॥
तन मन वेधन नीकस ही । यो बंक वीलोकनी बान ॥ गोकुलनाथ के ॥ ४ ॥

नवल नीरुपम नासीका । चंपक वरन सुचारु ॥
मुख वीलास सकल माधुरी । दंतावली कीरन अपारु ॥ गोकुलनाथ के ॥ ५ ॥

अधर अरुण अती राजही । अमीय भरे रस रास ॥
चोको चींबुक सो ठोर नही । मनहरे मधुरे मृदु हास ॥ गोकुलनाथ के ॥ ६ ॥

काननी हीरोटी जटीत जलके । ललके अती लोल ॥
जोती जग रवी कीरण ज्यों प्रतीबिंबनी झांइ कपोल ॥ गोकुलनाथ के ॥ ७ ॥

ग्रीवा माला गुजा धरे । तुलसी बहु नीत नीवास कनक ॥
मुक्ता की राजही बीच पन्ना लाल प्रकास ॥ गोकुलनाथ के ॥ ८ ॥

कुच कमनीय बीराजही । कीशोरीन के मन भाय ॥
हृदय रुचीर रोमावली चीत्त लालच रहे लपटाय ॥ गोकुलनाथ के ॥ ९ ॥

बाहु वीसद बिरदावली । सदा जय कारक रुप ॥
आलिंगन इछाकरे नायकाजु रुप अनुप ॥ गोकुलनाथ के ॥ १० ॥

अंगुलीदल मुदरी खचीत । नील अरुनसी तरंगी ॥
राजस तामस सात्वीकी लीये सब हीनके मन संग ॥ गोकुलनाथ के ॥ ११ ॥

नाभीकुप गंभीर अे । कोइ वयां हु न पावे पार ॥
गजगामीनी के मन क्रीड ही । अती रुची वारंवार ॥ गोकुलनाथ के ॥ १२ ॥

धोती उपरना धरे । सुंदर सोभीत वेस ॥
कटीनीतंब झंघा दोउ । को वरणे मध्य प्रदेस ॥ गोकुलनाथ के ॥ १३ ॥

चारु चरन चीत चुंभी रहे । अंगुली दल पदम पराग ॥
नख दीन मणी प्रकाश ते फुल्या पाद मुल अनुराग ॥ गोकुलनाथ के ॥ १४ ॥

श्री वल्लभ सबके वल्लभ । सबहीनको पूरेआस ॥
निज मारग उद्योत दान दे । सो क्यो बरणे हरीदास ॥ गोकुलनाथ के ॥ ॥ १५ ॥

॥ धमार संपूर्ण ॥

॥ **दोहा** ॥ सीख नख सहज हीये कह्यो । अब नख सीख कहुं रस रुप ॥
बरन सलहो आरंभीके । रीस सुभ गोकुल भूप ॥ १ ॥

अब नखसीख जात अमीलोंनो । सब नखसीख स्लोक अनुपम ॥
भावते गोकुलेस नीहारे । परम कवनी जननीय स्वनी ॥
जय जय श्री वल्लभ भूप । मन भावते गोकुलेश नीहारो ॥ ध्रुव पद ॥

पाद मूल आरक्त अती । आनंद मह अनुराग । ध्वज वज्रांकुश सहीतजो ।
सब भक्तनको ज सुहागे ॥ मन भावते गोकुलेश निहारे ॥ १ ॥

नखमणी मंडल अती अमलज गमक करीत सुभ भात ॥
दसहु दीसा जग बीजय हीत शोभीत सुंदर पात्य ॥ मन ॥ ॥ २ ॥

अंगुलीदल दल भजन भल संग्राम सुभट महावीर ॥
अंगुष्ट आगे अगणी सो सुभ लक्षण वरधीर ॥ मन ॥ ॥ ३ ॥

चरण जुगल प्रफुलीत कमल प्रगट सहीत मकरंद ॥
मत्त मधुर आस्वाद ले भक्त मधुपके वृंद ॥ मन ॥ ॥ ४ ॥

गोंटी गुढ दृढ अवलव्यो रस रमण केलीभर भार ।
प्रगट कहत कछु ना बने जे जे अनीरवचनीय रुप अपार ॥ मन ॥ ॥ ५ ॥

जानु जुगल जन आभरन । भरन करन समाइ ॥
हरन कामदल भजन जे । अरन सदा सुखदाइ ॥ मन ॥ ॥ ६ ॥

उरुलंक मन हरनअती । कंदील कदील रस रास ॥
अच्युत पदवी पावही । ज्यां हा अलौकीक काम निवास ॥ मन ॥ ॥ ७ ॥

नितंब बरनीको क्योंसके । मध्यप्रदेस सुभ अंग ॥
अनीरवचनी केसे कहे । ज्यां प्रगटीत नाना रंग ॥ मन ॥ ॥ ८ ॥

कटीके हरी कली माधुरी । मधुर मधुर रसदानी ॥
मधुर मधुर के वार कहुं । सब मधुरताकी खानी ॥ मन ॥ ॥ ९ ॥

धोती उपरेना धरे । सुंदर सोभीत वेश ॥
स्वच्छ शुभ्र अती जगमगे । सात हु काछ वीसेस ॥ मन ॥ ॥ १० ॥

पीठ प्रनाली प्रगट रस संदुरी । आवत कटी तट पास ॥
अपनी ठोर फेले बहु । गेहेरे स्थल करीजु निवास ॥ मन ॥ ॥ ११ ॥

नाभी कुप प्रगेहेरे गंभीरे । अति अमोघ चीरसुमिष्ट ॥
आसपास सबरस मड़ । ज्यां सदाजु रसकी वृष्टि ॥ मन ॥ ॥ १२ ॥

परम रुचीर रोमावली । स्याम सुदेस अपार ॥
रस श्रीगार की धार अे । वहे बारो भास अनीवार ॥ मन ॥ ॥ १३ ॥

त्रवली रेखा रम्य अती । रुचीर रमनको ठोर ॥
तीनहु लोक वीजय करे । जु रसीक थलके शीर मोर ॥ मन ॥ ॥ १४ ॥

पारस्व जुगल छबी राजही । नीत्य रसके उठत तरंग ॥
प्रमाण प्रगट सब देखही । माहारस सागर के अंग ॥ मन ॥ ॥ १५ ॥

रीदे कमल कवनीय अती । चारु वीचारुं पराग ॥
सुवास सबजग फेल ही । बढे भक्तन मन अनुराग ॥ मन ॥ ॥ १६ ॥

उरोज अती उन्मत्त रहे । उन्मत्तता रस रास ॥
रसीक भक्त रुस बाढही । रससो रस संग निवास ॥ मन ॥ ॥ १७ ॥

स्कंध मुल चमके बहु । बाहु बीसाल सुढाल ॥
कर कमलनी दल अंगुली । नखमणी जोती अपार ॥ मन ॥ ॥ १८ ॥

मुद्री गोल अरु जटीतजो । श्रीअंग ते सोभा पाये ॥
बाक चक्ष ज्यों देखीओ । सो मुख करी कहीये नजाय ॥ मन ॥ ॥ १९ ॥

तुलसी माल बीसाल बहु । दुलरी तीलरी सोहे ॥
गुंजा माल बिराज ही । त्रिवीधी भक्त मन मोहे ॥ मन ॥ ॥ २० ॥

मुद्रा खट सोहे शुभ्र अती । धर्म खट सास्त्र प्रमेह ॥
उपवीत सहीत मर्यादज्युत । पुष्टी पुष्टी सो नेह ॥ मन ॥ ॥ २१ ॥

ग्रीवा गोल सुढार कबु । सोहे रुचीर बीराजे रेख ॥
अचवत जल कनठे देखीये । लागे नहीं नेन नीमेष ॥ मन ॥ ॥ २२ ॥

चींबुक चारु चीत चोर ही । चतुरा चाहे रसाल ॥
मधुर रसाश्रित ठोर ओ । रस इकठीत ज्यों सब रसबाल ॥ मन ॥ ॥ २३ ॥

अधर मधुर रंजीत सनही । बहु वहे रस धार ॥
प्रगट रसीक भोग दान के । दाता अमीत अपार ॥ मन ॥ ॥ २४ ॥

दंत पांत्य परमा वीधी ही । कीलकत कल अव्यक्त ॥
मधुर पान पान सामर्थ ज्यों । मधुर दांन दे भक्त ॥ मन ॥ ॥ २५ ॥

जीव्हा लोल आरक्त अती । नागवेली रस रंग ॥
वचन वीलासज्यु हास ते । सुवास उठतजु तरंग ॥ मन ॥ ॥ २६ ॥

चोको चारु मोसर सहीत । सुभग सहेजे ही सोहे ॥
नेन नीरखी नीज भक्त को । अनुराग सहीत मन मोही ॥ मन ॥ ॥ २७ ॥

नासा चंपक वरन ज्यों । सहेज सुवास उसास ॥
आमोद सकल सम भोग्य जो । सुगंध सबनको नीवास ॥ मन ॥ ॥ २८ ॥

नेन चतुर चतुर चीतही । चोरन कोजु प्रविन ॥
अमल कमल दल राज ही । भक्त नेत्र भमर रस लीन ॥ मन ॥ ॥ २९ ॥

भ्रकुटी वीकट तट बरनी । अती तीक्षण तनमन अंग ॥
श्याम सुभग तन सोही ही । सुनाचती नाना रंग ॥ मन ॥ ॥ ३० ।

गाल सुभग तील राजही । दक्षण भाग सुरंग ॥
आरक्त स्याम आभा लीये । सोहे छोटे बडे दोउ संग ॥ मन ॥ ॥ ३१ ।

कांनन कुंडल राजही । हीरक पांतीअमोल ॥
कल धुतनीसो जटीज्यो । सो जग मग लोल कपोल ॥ मन ॥ ॥ ३२ ।

सुंदर भाल तीलक रुचीर । केसर रेखा पीत ॥
स्याम सुभग कमनीय वीच । अनुराग श्रींगार सोप्रीत ॥ मन ॥ ॥ ३३ ।

केस सुदेस कुंतल सोहतां । सचीकण श्याम सुख रास ॥
नीज अंग प्रगटीत सृष्टि। ज्यों नखसीख नीरखे हरीदास ॥ मन ॥ ॥ ३४ ।

। इति श्री भक्त सुख मंजरी ।
। स्वरुप वर्णनो नाम । तृतीय प्रभाव ॥ ३ ॥ संपूर्ण ॥

। श्री । श्री । श्री ।

॥ भक्त सुख रस मंजरी ॥ प्रभाव ॥ ४ ॥ चोथो ॥

। अथ नित्य चरीत्र वर्णन ।

॥ दोहा ॥ सीखनख नखसीख यह कह्यो । कछु इच्छा वस अनुसार ॥
अब आगे नित्य चरित्र कहुं । कछु पद अरु कवित प्रकार ॥ १ ॥

उषा समे आरंभके । फीर पोढे तहां लगु जोय ॥
श्री माहाप्रभु जो जो करे । अरु भक्त आचरन सोय ॥ २ ॥

नीत्य चरीच जो नीत्य करे । ओर नीत्य नइ नइ भांत्य ॥
सो सब कांहां लगी कही शकों । जद्यपी कहो करी खांत ॥ ३ ॥

भगवद इच्छा प्रारथना करी । जो कछु कहो हरीदास ॥
भगवदी चरनरज चीत धरो । अे पुरन करती आस ॥ ४ ॥

बडी रात पाछली जबे । श्री गोपाल उठत तब वेग ॥
दंत धावन देह कृत्य करी । सब करेसुं अपने नेग ॥ ५ ॥

अछुन अछुन जलघरे जाय । मती जागे ठाकोर जानी ॥
वात्सल्य सहित राखे सदा । बहोत बडाइ कानी ॥ ६ ॥

ईश्वरेश्वर बुध्धि इनके । रहे प्रगट प्रमान ॥
अरु लौंकीकानुं करनके । स्नेह भर सदा सर्वदावान ॥ ७ ॥

वीसुध्ध भाव अती प्रसन्न मुखी । पित्रु भक्ति भक्त प्रतीपाल ॥
सौजन्यशील मारग प्रसंन । क्यों गुन कहों श्री गोपाल ॥ ८ ॥

सो वेगे तेल लगाकर । नाह्य पोचे आय ॥
श्री नाथजु के मंदिर । नीत्य नेग टेहेल करे जाय ॥ ९ ॥

तब माहाप्रभु जागे जबे । अब सो करुं वीस्तार ॥
हरीदास दंडवत करी कहे । सुनो भक्त ओ रस सार ॥ १० ॥

॥ **सवैया** ॥ अ पोढे सुखसेज तेजु नक्षत्र निहार्यो जाये । आय अकुलाय धोती लीनी हे पलंगतो दंडवत करी गीरीराज जुमनाजी तन ॥ मनमें पढत कछु आप अती रंगते । धोती अंगीकरी मरगजी जु समारी लेत ॥ उठत तरंगजु सुगंध बहु अंगते भक्त कोउ कोउ दोडी ओर जल धर माहे । पावत दरस हरीदास ताके संगते ॥ ११ ॥

॥ **राग भैरव** ॥ उठ्या समे ति प्राणनाथ वात वहत जबही
॥ ध्रुवपद ॥ सत्वर चलेहे भक्त । जीनके मन तदा सक्त
अतिही अनुरक्त ॥ आय जल घर में तबही ॥ ॥ १ ॥

नीरखी नेंन सुखको धाम । अंग अंग पुरणकाम ॥
आतुर अभीराम । बारी कर चटके तबही ॥ २ ॥

हरीदास नीके तन मन धन दे आसीस ।
अबला जन पावती हे दरसन रस आनंदीत अबही ॥ ३ ॥

अरुन उदीत मुदीत अजे वल्लभ मुख देखे ॥ **ध्रुव** ॥ सुंदर
नेनारवींद अधीमीले ते प्रेम फंद भक्त अेसु छंद वंद नीरखही विसेरवे॥ ॥ १ ॥

बोलत बांनी गंभीर सुर सुभट परमधीर । सनमुख संग्राम वीर नरवक्षत अब रेरवे ॥ ॥ २ ॥

फेली रह्यो आसपास अंग राग अती सुवास ।
भावत हरीदास समझी कृत कृतकरी लेखे ॥ ॥ ? ॥

॥ **ध्रुव** ॥ तीलक रेख खंडित भाल भ्रकुटी कवनी वीसाल पीक
लीक लाल गाल कहु कहु अब रेख ही ॥ ॥ १ ॥

धुर्णीत नेना नीमेष राजती अती अरुन रेखही
परम रुचीर वेष देखी देखी देखी देखीही ॥ ॥ २ ॥

जंभा वीकसीत सुवदन तेहे कोटी मदन सोभाके सदनको हरीदास कहा वीसेषही ॥ ३ ॥

॥ **सवैया** ॥ डगमग पगधरे चलेहे चोखंडी तेह अनंग
भरे हे अती चले चाली अटके । पीढा धरी राखे ज्यांहां
चोतरी उपर त्यांह गडुआ कसेडीं सीत उसन भरे छटके ॥ १ ॥

दात्यों निश वारी धरी आंगाडी सिध्ध करी छीलके बनाइ चीर उतरे जु सटके
ओढी लइ चादर खवास धरी आदरसो कहे हरीदास तबपीढा बेठे लटके ॥ २ ॥

बाहर भटी हे भीर भक्त बहु जुरे आय कछुन सुहाय दरसन रस भावेही ।
खोले नीज मंदीर के द्वार जु अपार भीर अती अकुलाय धाइ
आतुरसो आवे ही ॥ नीत्य सबनके मनहरे दरसन करे मोद माहा सुख पावेही ॥
रातके वीयोगको संजोग अेनीवेर भयो कहे हरीदास तनतापजु नसावेही ॥ ३ ॥

दांत्योन करी नीत्य नेग तबे उपरेना सो पुछत श्री मुख चारु हे ।
श्री हस्त अंगोछीके मोछकी गोछज्यु पोंछतहे फीरी दुसरी बार हे ॥
चरणामत थेली जो देत खवाससु अपुन लेतहे श्रीकर सारहे ॥
श्रीमुख मेली सीखावतहे हरीदास को अे आवस्यक प्रकार हे ॥ ४ ॥

॥ **दोहा** ॥ उठी ठाडे भाये आप तब देह कृत्य के काज ।
लटकत मधुरी चालसो नीरखत भक्त समाज ॥ १ ॥

पाछे ज्यों आये कोउ उरसन दीनो ताही ॥
तब त्यांहां पाऊधारे प्रभु वे प्रमुदित मोद न माही ॥ २ ॥

जै जै कार भयो तबही फीरी हरसन दीनो सृष्टि ॥
भक्त सबे रीझे तबही आनंदकी भइ व्रष्टि ॥ ३ ॥

॥ सवैया ॥ प्रहसीत बदनसु चलेहे चोखंडी तन लोचन सुचारु मनोहर अभीराम हे दरसन पावततु भावततु तापज्यु नसावत हे ॥ पूजे मन काम हे चरन क्षालन कीये आचमन लीये तन पाय चरणामृत लीये गोकुलेस नाम है ॥ पोछीके श्री मुख आछे भीतर चलेहे पाछे संग हरीदास तेल लाय वे के ठाम हे ॥ तेलके वीछाना गादी बीछाये हे सुंदर भांती ठाडे हे वल्लभ लाल लटकसो आयके ॥ धोती पहेरी तेलकी सु कछयो हे सुंदर काछ उपवीत बांधीकटी बेठे हे सुहाय के कंगही जु लीनी कर केस सुरझावत हे अग्रभाग प्रथम उरोज तन लायके हरे हरे पाट के चमेली कटोरा भरे मनोरथ करे हरीदास सीर नायके ॥ कोउदोउ छुटु करे मरदन तेल ॥ कोउ दोउ चरन संवाहन करत हे ॥ सीसमें खवास तेल मेल अंजुली करी श्रीमुख हुंकारी आगे करजु धरत ॥ अमेठी केस जुरा बांधी धर्यो तब कांगसी फेरकर मुख चुप रहत हे पाछे दोउ भुजा तेल लगाये पीठ हृदय जुत नितंब सुहाइ हरीदास यों करत हे ॥ गगरा भरीके सब सीध कीये हे समारी केजु जल सीतल ताते । खवास कह्यो जल सीध्ध भयो तब छोरी काछजु चले मुसकाते ॥ भीतर ते कछु टोककी बात कहे कहे आवतहे मद माते । देखी सबे हरीदास तब मन रीझवे वीसरी सुधी साते ॥ कोउ रीझे मन दंडवत करे कोउ ठाडी ठगी सीर ही मुख हेरे । कोउ वल्लभ लाल रसालके उपर वारती प्रान शीश कर फेरे कोउजु नीकेही देख्यो इ चाहती पासजु जाय नीहारती नेरे ॥ जब नाहानकोजु कसेडी लइ ॥ हरीदास कहे जै जै तह वेरे ॥ कसेडी धरे जु खवास भरे जल ठाडेहो नाहत हे अध अंग ही बेठी के पाछे दोउ भुज भुल मुल जु डारत हे अतीरंग तरंगे ही ॥ मुखमुंद पखारके करण छीरकत शीश कसेडीजु ढारत उमंगही जब नाहाइ कसेडीजु भुमीधरी तब जै जै करी हरीदास सुं संग ही ॥ थेलीले धरी खवास अंग वस्त्र लीनो हाथ हृदय मुख पोंछी पाछे सीसकुं धरतहे बडे बडे वारजु समेटीके अमेठी कसी वाध्यो हे ॥ अंगोछो तुरे मन जो हरत हे ॥ दुसरे अंगो छे पोंछी कंध पाछे पहेरी लीयो नाक मुछ पोंछी पाछे धोती जु धरत हे । उपरेना ओढी छोडी अंग वस्त्र जुरा बांध्यो देखी हरीदास सोभा कही न परत हे ॥ चोतरीजु बेठीके जु आचमन लेती वार देखी नर नारी वारी डारे प्रान तन हे । धारी शीश कर पर तीलक कीयो सुंदर देखी के जु जुवतीवारे अपनो जोबन हे ॥ मुद्रीका ले बांधी उपवीत सो उरसी कटी ठाडेजु भये हे । बोले जै जै भक्तगन ही ॥ पामरी को जोरा तोस हे । खवास कर कर ओढी हरीदास कहे सोभा जाने मन ही ॥ दीवेट समारी ज्योत प्रगटीत हे उद्योत जगमग होत पाऊधारत हे लटके ॥ दरसन को

जग मोहनको ठाडी बाल अती ही रसाल नेंन ते कहुं न भटके ॥ कसेडी लीये खवास भक्त दोउ आसपास बीच बीच वाहे दाहे काहु न करीके ॥ जलधर द्वारकी गलीयों पाऊधारे जब जब हरीदास फेरी कर चटके ॥ भींतर पधारीके जगायवे को नाथजुको प्रबोध पढत छंद अतीही रसाल हे ॥ चढीके अटारी कोउ सुनती मगन रस बेठींके अेकांती ठोर रसीक जो बाल हे ॥ नाथजु जगाय लीने पाछे नीत्य नेग कीने आसन बेठाय वेगधर्यो भोग बाल हे ॥ जग मोहन में भीर भारी नरनारीन की हरीदास गावे पढे नये नये ख्याल हे ॥

॥ पद ॥ राग भैरव ॥ भक्त भाग्यरास ही श्री वल्लभ जस गावे ॥ ध्रुव पद ॥ रसमें रसहेतक रसदाय श्री गोकुलेश प्रगट परम प्रेमनेम आनंद जुत भावे ॥ श्री वीट्ठल सुत वरेस सुंदर अती रुचीरवेश ॥ कृपासींधु भक्त हेत दरसज्यु दीखावे ॥ नीजजन के त्राता अदेदान दाता मनोरथ हरीदास नीको अंतको पहोंचावे। १ । **छंद । सींहा वी लोकन ।** श्री वल्लभ वल्लभ नामवरं वरणीय नीजांगीय अष्टी करं करणी भरणीय रसालायं ॥ रस लालणतो खणपालल्यं । २ । परी पालन कारण कार्य जयं जै जै जै कारक रुप मयं मयणां मनमोहक रुप धरं ॥ धरणी रमणीय प्रमेहनरं । ४ । नर आक्रत्य आनंद अंग खीलं । अखील जन शोधन देह कुचीलं । ५ । सुचील रुची कारक रमण परं परमा वीधी ताप अंग अंग हरं । ६ । हरणाक्षीक सुंदरी वसीकरणं करणीवर वारणया वरणं । ७ । वीवीधा रस स्वाद भरे भरणी हरीदास आस्वाद परे । ८ ।

॥ सवैया ॥ भोग सरायके खोले हे द्वार जु भीतर आय धरयो सब साथही ॥ झालरी घंटा बजाइ जबे तबे लइ आरती आपुने हाथेही ॥ जगमगे श्रीमुख फरी चहें तब आरती वारी नमावत माथही ॥ ओटनमें बहु बेटी सबे हरीदास को सीखवेजु सुपाथ ही । १ ।

॥ दोहा ॥ दरसन मंगल देखी के ॥ दंडवत करे सब भक्त ॥ मंगल मनोरथ सीध्ध भयो ॥ तब भवन चले अनुरक्त । १ । मंगल गान सुने सबनी अरु मंगल लीने नाम ॥ मंगल श्री गोकुल पती ही। महा मंगल पुरनकाम । २ । घर आये सबको तबही करे वेग ही अपने काम । मनमें लालच सबही के फीरी दरस अती अभीराम । ३ । लौकीक काज देखे सबे ज्यों संसारी लोग । भगवदीकाज ज्यों ज्यों कर ही सब भगवदार्थ उपयोग । ४ । अपन अपने घरनिके सब काज करे नीत्य नेग । दरसन दुजी वारको पावनको अतीवेग । ५ । अब भीतर काज अभ्यंग करी नाथजु

न्हावाये राज ॥ श्री गोपाल वीट्ठलरायजु ॥ श्रींगार टेहल करे काज । ६ । तब आवे सब आपापते दरसन अर्थ समाज पाऊंधारेगे अबही प्रभु जुमनाजी नाहावे काज । ७ । गहे काज सब छोडी के आये हे नरनारी ॥ दरसनको अकुलात हे अनुरक्तजु मनही अपार । ८ । आपुन श्रींगार करी भोगधरी ज्यों गोपी वल्लभ नाम ॥ तब बाहर पाऊधारी हे नीज भक्त पुरन काम । ९ । श्री महाप्रभु आये तबही जल घरके पेंडे आप ॥ वधाइ नीज मंदीर भइ सुनी हरे सबनके ताप । १० । प्रात उठी नाहाइ श्रींगार कीओ हरीदास लीला कही सोय ॥ अब आगे यमुना स्नान ते कहुं राजभोग लग होय । ११ । चारु वदन मुख प्रसन्न मन अती सुंदर नेंन सुहाइ ॥ लावण्य सहित दरसन करे सब जगमोहन में आयकर ।

। इति श्री भक्त सुख मंजरी ।

। नित्य चरित्र प्रातः काल लीला वर्णनो नाम । चतुर्थ प्रभाव ॥ ४ ॥ संपूर्ण ॥

श्री रमणेशो जयती

| भक्त सुख मंजरी | प्रभाव | ५ | पांचमो |

| अथ यमुना स्नान वरणनं |

भीतरते आवत जब लटकंत ॥ **ध्रुवपद** ॥ नीरखत ॥ भुज चरणनकी डोलनी मोहनीको मन अटकत ॥ पेखती सब मीली प्राण नाथको ॥ नेना नेक न मटकत नीकट गये सब दे आशीस बहु ॥ सीस फेरी कर चटकत पाछ आय जो चढी खट धरी ताको मन अती खटकत ॥ दरसनको अकुलाय बहोत ॥ वे नेक हु न रहेतीत हटकत ॥ भींत टेकी ठाडे गोकुल पती दीनो दरसजो हटकत ॥ ता छीनकी हरीदास भीर कोइ मुरे नचुरी कटकत **॥ सवैया ॥** सुनीयह बात सब खीरक हवेली माहे ॥ वल्लभ पधारे नीज मंदीर में अबही ॥ धाम काम छांडी छांडी धाय धाय आवत हे ॥ सत्वर करनी गती लीनी मीर जु सबही हे ॥ आवे अती मद भरे मन मनोरथ धरे ॥ सब कोउ आस केरे आयपोंची जबही मंदीर में भारी भीर कोऊ न धरती धीर फीरी हरीदास दरसन दीयो तबही ॥ १ ॥ जै जै कार करी सब बोलत रसाल वानी प्रेम रस सानी महाप्रभुको सुहानी हे लजीत जु कोटी काम ॥ अंग अंग अभीराम नीरख नीरख वाम महा रस दानी हे ॥ डग मग पगधरी चरण क्षालन करी आचमन लीये फिरी बेठेजीये जानी हे ॥ कर मुख पोंछ आछे ॥ पतरा पढो हे पाछे चले हरीदास जुमनाजी रती मानी हे **॥ दोहा ॥** पाछे पधारे दरसनको चारोहु घरकु वेगी ॥ गुंसाइजीके सेव जानके ॥ दरसन करे नीत्य नेग ॥ १ ॥ द्वारकानाथ गोकुलचंदके वीठ्ठलेस दरसन पाय ॥ नवनीत प्रीयके दरसको चटाइके समे जाय ॥ २ ॥ खवास आगे चली घाट त्यांहां स्वच्छ समारे ठोर ॥ पीढो थेली त्यांहां धरे शीप तीलक की ओर।

॥ सवैया ॥ गोकुल जीवन प्राण पहेरके चरण त्रटन चले जमुनाजी नाहु अतीरस भरते ॥ भक्तनीज चले संग बाढे हे बोहोत रंग मनमन रंग सब चले घर घरते ॥ कोउ जो गागरी लइ कोऊ नाहायेवेको भइ कोऊ आगे पीछे गइ मरयादा करते ॥ रहे हरीदास घेरे सब आस पास देखन सुख वीलास वानी जु उचरते ॥ १ ॥ रतन चोक मे आय घोडा जु चढ्यो सुहाय ॥ चपल चढे हे धाय चौक मांही स्वार हे ॥ पाछें खेंचके लगाम थाप कंध दीनी वाम चुचुकारी करी लीयो नाम चंचल अपारहे कानद्वे उठाय फीर कर पुछजु फेलाई भइ आप रुप धरी करी खरीजु समारीहे ॥ दुरी देखे आवते वहुजी मन भावतेजु चारो नेंन मील हरीदास तेही वारहे ॥ २ ॥

॥ सवैया ॥ २ ॥ दोउरस रस चाहे ॥ सोभाजु कहीन जाय ॥ दोउ मन मोद अती फुले गात गात हे दोउ कवनीय रवनीय बीराजे ॥ दोउ कछु कछु मंद मंद दोउ मुस्कात हे ॥ उमंग भरे हे दोऊ हारीजु न माने कोऊ टकु झकुलाय दोउ सबन सुहातहे ॥ दोउ जु संभारी फीर कछुजीया संक धरी कहे हरीदास महारस कह्यो जात हे ॥ ३ ॥ रेती माहे करत धोराइ धोरा घणी भांत राजत रुचीर देहु भेदजो नचावत हे ॥ कायजा सहित जु चलतहे करत भेद देखी देखी भावही सब सचुपावे हे ॥ अेकवार डार्यो हे निसंक उपकंठ ठाडे दीनी हे दमानक खुरीसों फेरी लावे हे ॥ देखी यह भांती सुख पावे सखी पांती सब उतरे हे आय हरीदास मन भावे हे ॥ ४ ॥ दोहा ॥ घोडा चढी पाउधारे प्रभु सो कछु कह्यो संकेत ॥ श्री जुमनाजी नाहत अबेसो कहों रुचीजु समेत ॥ सवैया ॥ अेडी भर बेठी आचमन करी पेठी जल नाभीलों छुवाइ पाछें प्राणायाम कीने हे ॥ तब जुरो खोलीके आवरत्त जलमांह करे कांन नेन मुंदी तीन बुडक जु लीनी हे कोउ कोउ भक्त जाय धीर वस पाछे नाहे मोदन समाये मन अती रस भीने हे ॥ कीने नीत्य नेग वेग फीर उपकंठ आप जाअे हरीदासजो रसीक दान दीने हे ॥ थेलीमें ते अंग वस्त्र काढी ॥ अेक लीनो हाथ पोंछीं मुख माथ पाछे कटीजु धरत हे ॥ पोंछी गेहेरे अंग आछे नाक मों लोंछी धर्यो धोती उपरना जुरा मनजु हरत हे ॥ पाखरी ओढी उपकंठ आचमन कीने पाछे ॥ पीढे बेसी रेती बींदुजु करत हे तीलक केसर करी पाछे दोउ संध्या करी नेम करीके हरीदास त्यां फीरत हे ॥ २ ॥ कालींदी की रेती कीधो जोती जगमग होती कीधो यह मोती कीधो मोहनी अह ये खरी हे ॥ कीधो करपुर यह पुर अती राख्यो यहां ॥ कीधो अे पराग पान लीयो आप हरी हे कींधो यह हीराचुर भक्त जीवनी मुर कीधो यह चांदनी चंद्रमा आप धरी हे ॥ कहे हरीदास अे वीतर्कते बनत नाही यह नीरधार ॥ जो इच्छा ते आप करीहे ॥ ३ ॥ फीर पाऊधारे भक्तबिंद जो नीहारे साथ घेरी घेरी हारे कोउ पोंचे नाही संग में ॥ वात कछु करे करे बडे डुग भरे ॥ कोउ जाने हरे हरे चले जाय रंग में ॥ मुंदरी चमके चारु कुंडल लोल अपार जुरा लटकतसारु सोभी अंग अंग में ॥ आवेहे आगनमां पनही उतारी तांहां ॥ देखी हरीदास चीत चोर्यो भ्रुअभ्रंगमें ॥ दोहा ॥ पाछे तीबारी बेठी प्रभु षट मुद्रा धरे ज्यांही ॥ पांचहु वीधी मर्याद जुत वल्लभी सरवोपर सोही ॥ १ ॥ तब होमधर पाऊधारीके ॥ करे वैश्वदेव आचार आवस्यक जो नीत्ये हे वेदोत्क धर्म प्रकार ॥ २ ॥ सवैया ॥ सुंदर रस सामग्री धरी तबकडी सीध्ध करी दुध की जो लोटी भरी अती ही उजागरी ॥ होम समे साधी करी आगेही ते जाय धरी ॥ बहु अनुराग भरी सब गुन

आगरी ॥ दान दीनो रस भरी ताते ले अवश्य करी आये हरीदास फीरी सबको सुहागरी ॥ १० ॥ अेक समे माग लीनो वल्लभसु दान दीनो ॥ तब यह नेम कीनो ॥ भाग्यरास नागरी ॥ १ ।॥ **दोहा ॥** फीर पाऊंधारे महाप्रभु ॥ दरसन पायो सब भक्त ॥ चर्णक्षाली ततपर पोहोचे ॥ भीतर अती अनुरक्त ॥ २ ॥ ग्वाल सरतहे तबही त्यांहां करे आप सबकाज ॥ तत्परता सेवा वीधीही सब करही देखावे राज ॥ ३ ॥ भोग जु बहु प्रकारके सो क्यों करी कहु वीस्तार ॥ समे समे के भीन्न भीन्न ॥ ऋतु ऋतुको भीन्न प्रकार ॥ ४ ॥ दुध भोग बहु भांतके ओर स्नेह पक्व पकवान ॥ मेवा सबही प्रकारके अनेक मीठाइ आन ॥ ५ ॥ बीच बीच सखरी कछुक समे समे की रीत ॥ अति वाछल्य सो अरपही ॥ भाव सहित बहु प्रीत ॥ ६ ॥ श्री आचार्यजु उक्तजो सेवा के जो प्रकार ॥ भींतर जो जो होय सो सब क्यों करी कहे विस्तार ॥ ७ ॥ सेवा जाके होय सो कछु अनुभवते लह्यो सोय ॥ वीस्तार केसे करी सके यह समजो सब कोय ॥ ८ ॥ सेवा स्नेह प्रकार सब करी जु दीखावे नीत्य ॥ जो भक्त सबे कोउ समजही सेवा जुकी रीत ॥ ९ ॥ अब बाहार भक्तकी भीर जुरी जगमोहन जलघर मांहा ॥ को अटाली चढी रहे कोउ नीज बेठक त्यांहा ॥ १० ॥ श्रंगार आरतीको समो अब नीपट थोरो रह्यो आय ॥ अब दरसन वेग ही होयगो ॥ सो सबहीनके मन भाय ॥ ११ ॥ तबही द्वार खोले सबे घीरी भीतर आये भक्त ॥ को उदवे कोउ गीरतहे दरसन रती आसक्त ॥ १२ ॥ जै जै जै जै उचरे ज्यां त्यांहा ते सब कोय ॥ श्री माहाप्रभु दरस देखीके अती आनंद मनहोय ॥ १३ ॥ आरसी आप प्रभु प्रेम सहीत सु प्रकास ॥ फीर चीतवत तामें जबे सचु पावत सबदास ॥ १४ ॥ आरती प्रकासीत जगभगात महाप्रभु के करजु सुहाइ ॥ झालरी घंटा बाजही आरती करत मन भाय ॥ १५ ॥ वहुजी आये ओटे रहे वहु बेटी सबसंग ॥ आरती करत अेक वेर तांहा दृष्टि करत मनरंग ॥ १६ ॥ आरती वारीके फीरचहे ॥ भक्त ओर केताल ॥ झलक झांइ प्रति बींबही श्रीमुख सुंदर भाल ॥ १७ ॥ आरती लइ प्रभु हाथ तें भीतरीया जो कोइ ॥ नमन करत लावण्य ललीत जुत नीरखे हे सब सोइ ॥ १८ ॥ **सवैया ॥** खीलोना खीलावी सार भक्तको ना अपार फीरत फीरकी मन फीरी फीरी जात हे ॥ झुंझना झुनात तन झुझनी चढतजात बंगीके बोलत सुर भंग कहवात हे लट्टुके फीरावत जब चटपटी होत तन कोयलके बोले मन केसे करेयत हे ॥ चकइके डोरेमन मोहत हेजु डारडार चुह चुआ सुनेतो चीत चले पात पात हे ॥ **दोहा ॥** दंडवत करत सबको तबे ॥ भक्त मुदीत मनभाइ ॥ चलोचलो श्री मुख कहे कोउ देह उरीला घट न जाइ ॥ २१ ॥ कर क्रमे करी

आग्या करे ॥ अटारी नेंन के सेंन तब सबको धसी नीकसही ॥ हसत कहत मुखबेन ॥ २२ ॥ राज भोग आयो तबही सो सामग्री क्यों कही जाय ॥ नाना वींजन पाक बहु ॥ सबे समर्पे ते आप ॥ २३ ॥ भगवदी सबे घर जायके नीत्य नेग करे बहुकाम ॥ फीर राजभोग के समे रुचों आवनको प्रभुधाम ॥ २४ ॥ राज भोग जब धरी रहे प्रभु डोल तीबारी आय ॥ श्री गोपाल वीठ्ठलरायजु संग बेठे हे मन भाय ॥ २५ ॥ श्री गोपाल तब पुछही कोउ श्लोककुंपदको भाव ॥ यह अरथ तुमसो कह्यो हे यों कही बोलेराज ॥ २६ ॥ तब श्री गोपाल फीरयों कहे यों मोकु सुमरन नाहीराज ॥ तब प्रसन्न हेके फीर कहे सीध्ध होय सबकाज ॥ २७ ॥ प्रथम कह्यो सो ओर भांत ॥ दुसरे ओर प्रकार जीतनी बेर फीर अर्थ कही नइ नइ उक्ती अतीसार ॥ २८ ॥ श्री गोपाल मन रीझे देख्यो रायजीकी ओर ॥ मनही मनजु प्रसन्न हे दोउ हसे नेंनकी कोर ॥ २९ ॥ यह भांत प्रसंग अेकांत्य नित्य सो क्यों कही सकेजु कोइ ॥ जाने श्रीगोपाल भ्रात दोउ जीनके अनुभव होइ ॥ ३० ॥ तब भोग सरावनको उठे समय भयो जीन जान ॥ बहार भीरजु भक्त की बहु भरीहे आन ॥ ३१ ॥ राज भोग सर्यो वेगही खोले नीज मंदीर द्वार ॥ पुरववत आरती देखही फीरी काहा कहु वीस्तार ॥ ३२ ॥ वेगही परदा डारही अब आवहीगे नीजधाम ॥ चटाइ बेठेको समे कछुक कहों अभीराम ॥ ३३ ॥

। इति श्री भक्त सुख मंजरी ।

। नीत्य चरीत्रे मध्यान लीला श्री यमुनाजी स्नान वर्णनो नाम ।

। पंचम् प्रभाव ॥ ५ ॥ संपूर्ण ॥

श्री रमणेशो जयती

। भक्त सुख मंजरी । प्रभाव । ६ । छठ्ठो ।

। अथ चटाई को वरणन ।

॥ **सवैया** ॥ प्रभुआवत जानके भक्त बहु जग मोहन ठाडे रहे सबही ॥ नीहारतहेजु नीमेख वीना प्रीय वल्लभ आवतहे अबही ॥ कोटी प्रकासजु तेज मइ माहा आंखीन आगे रहे तबही ॥ हुं बलीहारी जाउं कहे हरीदास चले नीज मंदीरको जबही ॥ १ ॥ माहा मंदिर मांहे भरी बहु भीर ॥ सबे जै जै महाराज कहे हे ॥ आनंदकंद श्री गोकुलनाथको सुंदर श्री मुखचारु चहे हे ॥ अंग अंग रसालजु मोहन भइ नीरखे मनको अती मोह महे हे ॥ हरीदास कहे परमावीधी देखी भये दीनसो जायके फीरदाह दहे हें ॥ २ ॥ नीत्य नेगसो जायके चोतरी आय पधारत पाय सुहात सबे ॥ मनही मन रीझेसुं अंतर भीजे कहो कहा कीजे जु यासो अबे ॥ गडुष करे कर पोंछीजु पोंछत हे मुख वस्त्र तबे ॥ चटाइ बीछी हरीदास कही बहु भीर भइ भेटुं आये जबे ॥ ३ ॥ बेठेहे चटाइ प्यारो लाल श्री वल्लभवर श्री कर समारे केस नखमणी चलके ॥ बडे बडे वार सोहे देखी मन मोहे श्याम अरु सचीकण सुदेस लर ललके ॥ सुंदर चीर चारु जटीत नंग अपार ॥ बीच बीच कहुं कहुं मुदरीजु झलके ॥ सब सुखको नीवास कहे हरीदास पास अतीं सुवास छुटे चीकुर जु सरके ॥ ४ ॥ श्री गोकुल वरेंद्र वर राजे अति क्रिपा भर सब वीधी दान पर सोहे सभागनमें ॥ बेठे श्री गोकुलनाथ पास ब्रह्म सभा साथ आवेसो नवामें माथ आनंदीत मनमें ॥ देखी देखी नीजजन फुलतजु मन मन वारती हे प्राण धनरसजु मगनमें ॥ सोहे हरीदास चीत्र तब लीखी आस पास कोउ काढे न उसासके जु रही तनमें ॥ ५ ॥ श्री वल्लभ बेठे हे ब्रह्मसची मेहे ॥ चले चरचाजु अनेक प्रकार हे ॥ कहे भली भांती सुने सब ख्यांतजु ठाडी हे पांती वहे रस धार हे ॥ सुबोधनीके रस नेह प्रमेहके मेह बढे कोउ पावे न पारहे ॥ पास सुने हरीदासन महुल्लास बढेजु बहतीह वार हे ॥ ६ ॥ **दोहा** ॥ अनल मुरु सब रस कह्यो अब कहो कछु लौकिक दान ॥ सो सब संक्षेपे सुनो अे दान कोन ही प्रमान ॥ १ ॥ **छंद** ॥ **छपय** ॥ माहाराष्ट्रद्र तैलंगद्री वडे दक्षण ते आवही ब्रह्मचारी संन्यासी नारी बाल संग लावही ॥ उत्तर दीशा तेजु कनोजके पंडीत रहेजु कासी हे ॥ १ ॥ गोवर्धन आदी व्रजवासक मथुरीया पावे मान ॥ हरीदास कहे केसे जु चटाइ इसमें दे दान ॥ १ ॥ **फुनीहां** ॥ काहु दीयो हे दान बहु

सनमानसो बीरामें मेलीजु द्रव्यजनाओं आनसो ॥ आशीरवाद पढे शुभ मंत्रजु वेदके ॥
फुनीहां ॥ यों यों देतहे दान अनंत अपरभीत भेदके ॥ १ ॥ कोउ वेद पढे पदन्यास जटा क्रम
साथही ॥ छंदके भेद प्रकार सों डारत झुलकी महि ॥ श्वर जाये जब सीखवे तब अपुन रंगमे ॥
फुनीहां ॥ हरीदास सबेजु प्रसन्न देखत संगमें ॥ २ ॥ कोउ जु मागे वस्त्र कोउ चहे दाम ॥
कोउ कोउ जो जाचत पात्रसु आपने कामके ॥ कोउ जोडको जु कभाय कोउ सारी चहे ॥
फुनीहां ॥ यह आंगन मांहेजु भीर यों नीत्य भरी रहे ॥ ३ ॥ चादर चहे दुपटा ॥ पेटी परदनी
कोउ कोउ पटुका वरी जाचत ओषध सोउ कोउ सीधा सीध्ध प्रकार मीठाइ लोंन सो ॥
फुनीहां ॥ वेरागी वेरागिनी मागत चुन्नजो ॥ ४ ॥ कोउ जाचत धोरा बेल कोउ गाडी चहे ॥
कोउं बंद छुडावन आयजु आस ओही रहे ॥ काहालो कहीजु प्रकार अे अनुभव जाणेही ॥
फुनीहां ॥ आपु ने आपने मान सबेजु प्रमाने ही ॥ ५ ॥ जीन्हे जाच्यो हे जोड़ सोड़ दीयो तवे
अे पुरनताको प्रकार नीत्य यो धर सबे हरीदास अनंतप्रकार पार केसे लहे ॥ **फुनीहां** ॥
चटाइ समेके दान कोउ क्यां करी केहे ॥ ६ ॥ **सवैया** ॥ श्री गोपाल सहज भाय सबहीनको
सुहाय हसत आय रसोइ में ठाडे हें ॥ देखी बहु विंजनसु पाक मन रंजनसु फुले नेन खंजनसु
सबगुन बाढे हे ॥ वहुजीसुं पुछी अबे तातों कीयो फीर सबेजु हा कही तबे मन फुले अती गाढे हे
सामग्री सीद्ध करी थारजु कटोरा धरी आपे हरीदास फीर आनंदजु बाढे हे ॥ १ ॥ श्री गोपाल
आये हे सु सबमन भायेहेसु ठाडेही सुहाये हे सुं देखी सुचुपाये है ॥ जुडा तब बांध्यो वेग करजु
पखारे नेग ॥ लेंचडी दीभाषा कही ॥ तीलंगी सुहाये हे ॥ ठाडे भये प्राणनाथ जै जै वाणी बोले
साथ अटारी उपरते श्रीरायजु बुलाये हे ॥ भोजनको पाऊंधारे सबसो नीके नीहारे तारे हरीदास
ताणसीस तब नवायेहे ॥ २ ॥ **दोहा** ॥ चटाइ समे संक्षेप अे लीला कही हरीदास ॥ अब आगे
भोजन समे कहुजु अती हुलास ॥ १ ॥

। इति श्री भक्त सुख मंजरी ।

। नीत्य चरीत्रे चर्टाइ वर्णनो नाम । षष्ठम् प्रभाव ॥ ६ ॥ संपूर्ण ॥

श्री रमणेशो जयती

। भक्त सुख मंजरी । प्रभाव । ७ । सातमो ।

। अथ भोजन समेको वरणन ।

उहां पेंडो नीहारतेहे वहुजी रोहिणी गोपदेवीजु आदीसबे ॥ प्राणमती रुकमां छोटी सब काहु चहे प्रभु आवे कबे ॥ परीचारकनी स्त्री वर्ग ही ज्यों कहे पावहीगे दरसन अबे ॥ हरीदास कहे प्रीया आये जबेसु पीयुसते मीठेज्यु लागे तबे ॥ ३ ॥ जगमगे ज्योत ही भोजनसालजु बाल सबे उतते इत आवे ॥ देख्योजु चाहत श्री मुखचारुसु घुंघट ओटते नेन चलावे ॥ सबको करुना रस पोषतहे श्री गोकुलचंद्रजु ताप नसावे ॥ कहे हरीदाससुं छोटे बडेजु सबे नीरखे हरखे सचु पावे ॥ ४ ॥ परम चतुरवर आपश्री वल्लभवर सबकी आरती हर बेठे आप थालजु पीढो पडघी प्रकार गडुओ कनकचारु जगमगे है अपार ॥ सोहेहे रसालजु आप सब भट वेगी जमाइ भाणेज नेग ओर कोउजो वीसेस बोलेहे गोपालजु ॥ गोवरधनेस तब छोटे हरीदास कही नाम ले बुलाये हे जु कहे ते ग्वालजु ॥ ५ ॥ राजती शोभा अपार ॥ वीठ्ठलकुमार चारु सबको सुहाग भाग अती अभिराम हे ॥ बेठे दोउ जोटी श्री गोपाल श्री वीठ्ठलराय सबको बेठाय आय आपने जोठाम हे ॥ दाहानी तीबारी ज्यांहां बेठे भीतरीया त्यांहां परम प्रमोद लेके गोकुलेश नाम हे ॥ बांइजु तीबारी भरी भगवदी हरीदास गह गही भर्यो सोहे सुंदर सुधाम हे ॥ ६ ॥ पुरी पुरी लावतहे पातरजु भरी भरी ठोर धरी धरी वहु बेटी आवही ॥ वहुजी परोसे महाप्रभुको स्नेह भरी फीरी फीरी लावे तातो तातो जोइ भावेही ॥ व्यंजन वीवीध नाना भांती खटरस भोग पाक रुचीकारी गोप देवीजु लावेही ॥ समेत रोहीनी प्रानमतीज्यु सबही ठोर कहे हरीदास परसोत सचु पावे ही ॥ ७ ॥ पुछत परम प्रवीन प्रीया सब वैष्णवको जु परोस्यो सबे ॥ हाज्यु कह्यो परोस्यो श्री गोपालज्यु श्रीमुखके कह्यो लेहो अबे ॥ सुबाहर आयके कह्यो सबको प्रभुआग्या दइसु सुनीजु जबे हरीदास सबेजु अनंद घमंडसो पातर छुहीके लेत तबे ॥ ८ ॥ भोजन करत मन भाये रस चाही चाही परम चतुरवर सब रस भोगीहे ॥ न्यारे न्यारे स्वाद सब चाखत सु भाखत हे ॥ वल्लभ कहेत ज्योंइ ज्योंइ जु संजोगी हे ॥ श्रीगोपालराय श्री वीठ्ठलराय नेन सेन पेखत प्रसन सबरस वीनीयोगी हे ॥ पार्वती वहुजी समेत सोहे वहु बेटी देखी हरीदास सब वस्तुजो आरोगी हे ॥ ९ ॥ आगनमें धरेहे खवास पीढा त्रष्टी जांहा ॥ बेठे आय त्यांहा गोकुलेस जु सुहावे हे ॥ अचवतहेजु कर खरीसो

भींजत दोउ गडुआ कीधारसों खवास जलनावे हे ॥ गंडुकजो डारतसु भक्त को नीहारत मुनन मन वारतसु अती मन भावे हे ॥ सीक घसी डारी तब पायोजु पखारीद्यो चरणामृत वारी बहु बेटी सचुपावेहे ॥ १० ॥ मंद मंद पाठ करे अंजुली जु नामी धरे फेरी कर हरे हरे भक्त मन भावे हे ॥ कोउ बहु प्रेमधरीअ धरीअतही आनंद भरी ॥ इत उत चाह करी रेगी चली आवे हे ॥ पेखे ठाडी ओटी बीच जलकर लीनो रची मथत हथेली सची देखी सचुपावे हे ॥ नेन कमल रोचनां भरे हे प्यारहु कोना भीरत भवर छोना तापजु नसावेहे ॥ ११ ॥ समे भयो भोजन करीके फीरी आयवेको अति अकुलाय धाय आवे भक्त दोरी हे ॥ अति अलबेलीजु नवेली गती आवे कोउ कोउ राजतीजु अती परम कीसोरी हे ॥ आय आय ठाडी रहे ॥ वल्लभ को देख्यो चहे भीरजु जुरी हे सींहद्धार पोरी हे ॥ कहे हरीदास दरसन रस आस मुखके वीलास हास्य लेतज्यु हीलोर हे ॥ १२ ॥ भोजन भवन तेजु गवन करत प्रभु नवन करत बहु बेटी बड भागीहे ॥ अती रवनीयके खवनीयजु अवनी पर गलीजु सुहावे भावे भक्त अनुरागी हे ॥ आवत मधुरी चाल देखी देखी मोहे बाल परम रसाल प्यारो लालजु सुहागीहे ॥ आये नीजधाम पास पूजे हे दरसन आस कहे हरीदास प्राणवारे रस प्रागट हे ॥ १३ ॥ जुरा लटकेजु सीस भाल भ्रगुटीके बीच तीलक झलके कानकुंडल रसालहे ॥ नेन अनीआरे अती कारे कारे भारे तारे श्रीमुख वीलास हास्य ग्रीवा सोहे माल हे ॥ उदर नाभी गंभीर ॥ देखी कोन धरे धीर धोती उपरेना सोहे मटकत चाल हे मुद्रीका चमके कर आओहे वल्लभवर पास हरीदास देखी मोही सब बाल हे ॥ १४ ॥ पधारे नीजधाम हे सुपुरे भक्त कामहेसु भीरभरी वामहे सु जै जै कही बोलते है ॥ बेठे आय चोकीपर केस सुकवत कर अतीही अमोदभर बीरा लेके खोले हे ॥ गंठोडा श्री मुखे मेली चीरी करी करी नाग वेली चुनोरंग रेलीजु भरोंची कोंन तोले हे ॥ अंगुष्ट चुपरीधरी नीजकरी चीपकरी देखी हरीदास मुख डारत अमोले हे ॥ १४ ॥ बीरा बहुखात ख्यांत करत रसीक वातको उन अघात रस मगन अपारहे ॥ सुंदर सुवेस केस छुटी हे सुदेस लट तीलक सुभालनेंन चपल सुचारहे ॥ पानगाल भरे ज्यों हे वदन कमल सोहे अधर सधर चले माधुरीकी धार हे देखी हरीदास चहु पास दास धेर लीये चोकीपरसोहे मोहे कोटी मार हे ॥ १५ ॥ कींधों यह केसके सुदेस की सचीकनता कींधों श्याम सुभगओ कामके श्रींगारहे ॥ कींधों रस सागर के आकर तरंग यह कींधों उछली तरस अमीत अपार हे ॥ कींधों यह मुरती समुहहे श्रींगार कींधो फेल्यो फुल्यो आप ओकीलो सुचार हे ॥ ललकी सलकते वलक कहीन परे कहे हरीदास केसे झलकत वार हे ॥ १६ ॥

सेज जो समारी राखी सुंदर तीबारीमांज जाजम उपर बहु सुपेदी कोमल हे चादर बीछाइहे जु सादर सुंदर भांती अतही उज्वलजु वीमल हे सीराहने दोउ पास गीरदा अती सुवास धरे हरीदास देखी अतीजु अमलहे ॥ ओढीवे सुपेदी धरी बोधनु सुरंग खरी चादर भीतर नीर मोलज्यु कोमल हे ॥ १७ ॥ बीरा संगदे बरास जबही पहोंच्यो खवास केस सब सुके तब जुरा बांधी लीनो हे ॥ सेज पाउधारे सब सखी प्राण वारे हे ॥ ज्यु सुंदर वल्लभ पर परम प्रवीनो हे ॥ बैठी उपरेना आछे शीश सो लपेटी लीनो अतीरस भीनो हरीदास सुख दीनो हे ॥ सब नीको आग्यादइ श्रीमुख सुपेदी लइ परदा डारे हे जब तब सुख दीनो हे ॥ १८ ॥

॥ **दोहोरा** ॥ सब वारी फेरी दंडवत करे आसीस देत अपार वेगीय पोढे उठके प्रभु दरसन दीजे सारा ॥ १ ॥ भक्त कौउ कोउ तबे सुधे रसोइ धर जाय माहाप्रसाद लावे मुदीते सो सबहीनके मन भाय ॥ २ ॥ भगवदी श्रष्टी धर आयके ले प्रसाद नीत्य नेग अबही हरीदास दरसन होयगो फीर उथापनको वेग ॥ ३ ॥ पुर्वार्ध नीत्य चरीत्र अे कह्यो सबे रस रास अब आगे उतरार्ध कहु सो सुनो कहे हरीदास

। इति श्री भक्त सुख मंजरी ।

। नीत्य चरित्रे भोजन समय नाम । सप्तम प्रभाव ॥ ७ ॥ संपूर्ण ॥

| भक्त सुख मंजरी | प्रभाव | ८ | आठमो |

| अथ उथापन समे वरणनं |

|| दोहा || वीसराम कीये में जागही अेकवेर रसरास सो लीला संक्षेप कहु कछु सुनो हरीदास।। १ ॥ उठके जल अचयो तबही बीडा लीने सार ॥ २ ॥ अेकांत समे कोउ नही मन ईच्छीत भयो प्रकार। सो अनीरवचनी क्यों कहे सकुं कहु वचन आवे सोय संक्षेप में समजो सबे जाको अनुभव होय ॥ ३ ॥

|| सवैया || नयोरस नवला नवेली भांत आइ ये हे जान अेकांत पीया सोहे ही सुहातीहे। हरे हरे डग भरे छाती धुक धुक करे क्यों क्यों कहु चरनज़ छोहे भली मांती हे वल्लभ रसकी रीती पुछत परम प्रीती भाजी सब मीती जब तब मुसक्यातीहे कहे हरीदास पूरीआस नीज दासनकी अतीही मुदीत अंग अंग झलकातीहे ॥ १ ॥ गोकुल नरेस माहा गोप वरेस अती गोकुल भरन ज्यों वरन करी चाखे हे। वल्लभ कुमार के कुमारकी कुमरताइ छाइ सब जगमेंसु सुरस सी साखी हे नायक नवीन अे नवल रस दायक हें नइ नइ भांती नव नव अभीलाखीहे प्रगट प्रमेह देह नेह की अवधी अेह कहे हरीदास मुखकाहा काहा भाखी हे ॥ २ ॥

|| दोहा || रस राखत रसही वीसे रसज्युत पुरन काम सबही रस संपन्न करी रसीकजु अभीराम ॥ १ ॥ अधरामृत रसदानदे रसरस पठइ सोय। फीरी पोढे हे आय प्रभु जाने नही इह कोय ॥ २ ॥ कछुक नींद तब फीर लइ माहा प्रभु रसीक सुखरास उथापन तें आदीही फरी जागे कहे हरीदास ॥ ३ ॥ अचयो जल बीरालेइ तब पहोंच्यो आय खवास भाग्यरास जल घर हुते सो सब आवेही पास ॥ ४ ॥

|| छप्पैया || सेज मरगजी देखी मनमोही त्रीया। तब दलीत कुसुमकी दाम देखीके वामा समुझी सब सु अंग चहे न सव अेन नेन देखे रतनारे मुख विलास कछु हास्य । भाव गैयत सब न्यासे नेंनकी सेंन समुझे सखी तुटी तीलरीअे नायक श्री वल्लभवर ॥ १ ॥ अरुन नेन मद मेन वेन गभीरजु बोलही अनंग अंग रसरंग तरंग अतीही अमोलही सुंदर केस सुदेस तीलक कछु खंडीत भालही। कुंडल लोल अमोल ज्योती जग मगही रसालही सेजही बेठे देतहे जु दरस रस

आनंदमय। हरीदास भने सबकोउ सुने वल्लभवर गोकुलेश जय ॥ २ ॥ समे भयो हे जानी भक्त दरसनको आवही आतुर अती अकुलाइ आय आपको बधाइ हे। प्रफुलीत मन अभीलाख लाख लाख वीधी धरी हे वल्लभ देखन काज। राज मंदीर अनुसरी हे जोइ जोइ आवत जोइसो सींधद्वार बेठे चहे। हरीदास कहे अेक चीत सब द्वारनही चीतवत रहे ॥ ३ ॥

॥ सोरठा ॥ देह कृत्यको जाय फीरी आये तबही प्रभु क्षालत चरन सुहाय अचवन कीनो वेगही बिछोना कीये अपार। जाजम पर दुलीचो सोहे गादी तकीया सार। कफइ वीलातीके सुभगर खोंदा सोहे पाटसूया ममीह मखतुलके। झबा अतीही सुघाट जगमग जोती बीराजही ॥ ३ ॥ चरन वस्त्रसब साज दुलीचा परम सोहाइ। तब पाउंधारे राज आसन रची राख्यो ज्यां हां ॥ ४ ॥ दुलीची त्यांहां प्रभु आय चरन वस्त्र पर ठाडेही अती कोमलजु सुहाइ पोंछत भक्तसु मन मुदा ॥ ५ ॥ जब बेठे परम उदार पाघ बांधी धारी। सुहे चोलना कटाव कोसार। भरी बेठो सब अंगमें ॥ ६ ॥ तब राजतहे जु अपार अचयो जल बीरा लये तब खोले माहारस द्वारा। भक्त सबे आये धसही ॥ ७ ॥

॥ सवैया ॥ दरसन पावतहे भाव न्यारे न्यारेधरी भीरबहु भरी नीज वल्लभ आंगनमे कोउजु अटारी चढी कोउ चढी सीढी घरी कोउ जल घरे भरी मोद जुत मनमें कोउ वेदीपर रही कोउ चढी खुंटी ग्रही सबजु मगनभई पीये दरसन में। आगनमें भीर नरनारी सब अेकमेक पास ठाडी कोउ हरीदास भइ तनमें ॥ १ ॥ माहारस सागर जु भर्यो हे भरलेतजु हीलोरे भक्त अतहीत रंगमें नाना अंग नायकाके रत्नते अधीक अतीनेन मदमांते मीन क्रीडत हे रंगमें। नाव हरीदास चीत चपल परे हे। दीठी वादनान वस्त्र ध्वज अंचलसु संगमें मोती नीरमल मन पावे नही काहु थाहा वल्लभ ज खेंचीकाढी लीने भ्रुअ भंगमें ॥ २ ॥ दरसन करत जु पावत सबही सचु बेठे ठोर ठोर आपु आपु [illegible]जु पांतीहे। मंदीर तीबारी सब आंगन अटारी भरी ओर अरीजो आवत रस सागर समावतहे। भट नीजद्वार पास बेठे हे जु अे कर ओर सनमुख सब कोउ आपनीजु भांती हे। कहे हरीदास पूरे दरसन रसआस जोड़ जोड़ मनोरथ करे करीखांत्यहे ॥ ३ ॥ चलकत केस अती झक तीलक भाल, ललके कुंडल ज्योती जगी जु अपार हे। भ्रकुटी बीकटती चंचल चपल नेन चलत अपनी रुची चतुर सुचारु रहे। वदन सरोज फुल्यो मकरंद को सुवास अधर सधर सोहे माधुरीकी धारहे धोती उपरना धरे माल तुलसीकी गरे पावे हरीदास दरसनरस सारहे ॥ ४ ॥

॥ **सोरठा** ॥ श्री गोपाल वीठ्ठलराय सब कोउ आवे पढनको सो माहा प्रभुके मन भाइ अतीहीत जुत पढावही ॥ १ ॥ पोथी खोली हाथ टीका रुचीर सुबोधनी सोभावत हे सबसाथ तामस प्रकर्णको कल पढे ॥ २ ॥ सुनमुख बालक सोह पोथी लीने हाथ में श्री मुख नीरखे मोही वचन पढावे रस भरे ॥ ३ ॥ पढत जु हे भली भांत मन बुध चीत अेकत्र करी सो भक्त सुने करी ख्यांत जाको कछुक प्रवेसहे ॥ ४ ॥ टीका अतीही रसाल सहित टीपनी देखही । पढावतहे जु क्रपाल लीखत स्वतंतर ओरजो ॥ ५ ॥ बीच बीच शास्त्र प्रेमर मांहा गुढभाव आवे अतही। सबरस बरसे मेह अवधारे कोउ क्यांहा लगी ॥ ६ ॥ भट ब्राह्मण जो साथ पढे गुनेअती जोग्य जो सो सुनी सुनी धुंने जो माथ । वचन कह्यो कछुना परे ॥ ७ ॥ जब पुरन भयो प्रसंग पोथी बांधीहे सबही उपज मनही तरंग वचन कहे सो चीत बसे ॥ ८ ॥ कीये दंडवत श्री गोपाल वीठ्ठल राये समेत सब । अटारी । चढे सब बाल त्यांहां फीर चिंतन का करे ॥ ९ ॥ यहां महाप्रभु परम वीनोद हांसी टोक करे बहु । सो सुनत भक्तमन मोद जाको अनुभव सो लहे ॥ १० ॥ अधरामृत रसदान लीयो भक्तको प्रेमजुत आरोगे जलपान बीरा ले बरास जुत ॥ ११ ॥ कोउ गावतहे सुरबंध राग तान बहु मान जुत कोउ कवीत अरु छंद पढे प्रभुको जस मुदा ॥ १२ ॥

॥ **कवीत** ॥ वेदवीधी बोधनको सब वीधी सोधन को पुष्टी के नीरोधन को विठ्ठल कुमार हे परम रंजन को रसरीती अंजनको भारीलाज मंजनको जाने जीन मारहे । नायका नीहारनको वचन उचारनको तन ताप टारनको प्रानको आधार हे । हरीदास रस राखनको अती अभी लाखनको सबरस चाखनको वल्लभ खीलारहे ॥ १ ॥ ॥ **पद** ॥ **राग सारंग । सांमंत ।** श्री वीठ्ठल राजकुमार अंग अंग सकुमार रुपको अपार जाके देखे मार वारीये । बोलत मधुरवेन सुनतही अतीचेन । सबदीन रेन अेजा अेही चीत धारीये गुनको अगाधी । गुनीजन नीकी पुरे साधी जीनके आराधतही । सब आधी टारीये । रसनको सागरहे । आतीही उजाग रहे । नागर गोकुलनाथ केसे के उचारीये ॥ १ ॥ ॥ **सवैया** ॥ गोकुल मंडन । मायक खंडन । दुष्ट विहेडन हेतसु पाथज्यु । जगमें जस पावनहे मन भावन ताप नसावन हे गुन गाथजु गरु ओ दुखमां वीठल राजकुल उधारन वी सबको तारन माथे दे हाथजु । हरीदासके कारन नेह नीहारन आधी नीवारन गोकुलनाथजु ॥ १ ॥ विठ्ठल राजकुमार भजो अेह वल्लभ हे कुल वल्लभ टीको । अेक बहु चले सेहजही सेलपेंतो तब या वीन गोकुलकी कों अेड़ भले जब बेठत जाहीपे

ताही भले सब लागन नीको । हरीदासके पान आधार अेहे श्री गोकुल नाथके जीवनको ॥ २ ॥
अथ छंद । अरु मीठो तेल सुवासकगही सीध करी धरी त्यां भक्त रहे आसपास गादी गढे आयके नीज वल्लभ अती सुखदाय दुसरे तेल लगावही सो भक्त सबेमन भावे ॥ १ ॥

॥ सवैया ॥ धोती पहेरी तेलकीजु उपवीत कटी काछ्यो । तेलजो लगायवेको मल्लसाज साजे हे बेठे पद्मासन जु बीरा ले सुवास बहु खोल खोल आपुने श्रीहस्त अती राजे हैं । बंटी खोली ले बरास बेठाह वास पास लावण्य सो चुटकीले कोटी काम लाजेहे जुरा छोरी बडे वार आगे आनी राखे कर कंगही लइ ले केस मारजन काजे हे ॥ १ ॥ दांहे कर केस कंगही करे सुदेस अतीही सुवेस सोह पान गाल भरेहे पाछे सेही हरीदास सबभक्त गन घेरेहे ॥ ३ ॥ श्री वीठल राजकुमार । सोभा सोहेहे अपार नीरखेजु वारंवार भक्तमन मोहे हे झलके अपार अंग चलके कपोल चार ललके कुंडल सार । अतीही जो रोहे हे । नाहीवेको सांज सब सीध करी राख्यो तब तीलां छे । नेन भरे अंचलसो लोहे । हे हरे हरे डग भरे ठाडे भयेछ जातरे देखत हरीदास भक्त जुथ मांहे सोहेहे ॥ ४ ॥ चोक मांहे चोकीधरी राजनी अमोलखरी करी हे अठास पावा आठ अभीरामहे आव ठाडे भये ताहें । जलजु सरीपीठ पाछे । चंबेली भरत आछे खवासजु भरी भरी अंजुली धरतहे । सीतल दसम दवार भयो । पुरे पुरे कही चीकुर समेटी सील अेक ठोरे करे हे । इत उत फेरी घेरी सानी सुनी बेर बेर जुडा बांधी धर्यो हरीदास मन हरे हे ॥ ५ ॥ चंबेली भरेहे भुज चुपरे रसालजु झलकत वदन सुभात नीत्य येही ख्याल बाल मीली मीली सब रस रस हरे । हे काचो तेल लगावत श्रीअंगबल जानके जु जंधा जानु पीठ पाछे फीरे दाहेडे रे हे । इत उत फीरते नितंब चरण तितर सोहे हरीमीधरी कीरती अपार हे ॥ ६ ॥ थेली जु धरी खवास अंगवस्त्र लीनो सार । **दुहेरो** । करीके जो आछे नेन मुख पुछे हे । कर दोउ पूछीके रीदे कमल पोंछी पाछे डेढो करी आछे सीस केसजु अंगु छे हे । तातेजल नाहे अंग रातेजु सुहाते अती खेंचीके बांधन वार मांथे छोर गांठ हे । अंग वस्त्र पोंछी कंध पीठ पाछे पहेरे पुंछी रस अंग पाछे नाक मुछ लोंछेहे ॥ ७ ॥ धोती उपरेना स्कंध धारे हे धोतीजु धरत मन हरन कीसोरीन के अटारी उपर चढी अंगजु नीहारे हे । काछ गांठ छोरी आगे पीछे सब अंगी करी ओढी उपरेणो अंग वस्त्र छोरी डारे हे । नीचेजु उतरी जुरा बांधी आचमन करी तीलक हरीदास प्राण वारे हे ॥ ८ ॥ जै जै कही हरी हाथ सो कोउ निवारे जुरी जारे जाय फीरी टरतन टारे हे जतन जतन पेंडो कीयो पाउधारे प्रभु

कलेडी लेइ खवास संग अनुसरे हे। नेन रसमें दोउ ओरते कटाक्ष चले आगे हांगे हरीदास कों उचरे ॥ ९ ॥ मंदिर पधारेहेजु इंद्रा उवारे हे तहां रहे जु वल्लभको देखी ओ लमे पाय आवे हे श्री गोकुलेस भावेहेजु अतिसुखु पावेहेजु ब्रजमें वीतकके। ओर अेन जाने हेजु मन में न आवे गुसाइजु प्रमानेहे जु लीला अवरेखके हे वडे द्वारा आयहे जु पाओ जलनायेहेजु भीतर गोकुल हरीदास वारे पेखके ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥ उथापन लीला प्रभुअकी कहीजु माहारस। रास आगे संध्या समय सब व्याकुल भे हों हरीदास ॥ १० ॥

। इति श्री भक्त सुख मंजरी ।

। नीत्य चरीत्र उथापन लीला वरणन। अठम प्रभाव ॥ ८ ॥ संपूर्ण ॥

श्री रमणेशो जयती

। भक्त सुख मंजरी । प्रभाव । ९ । नवमो ।

। अथ संध्या समे वरणनम् ।

॥ दोहा ॥ संख नाद दरसन भये को भोग भीतर रहे तब आय सत्वरता सोंकाज करी डोल तीबारी जाय ॥ १ ॥ वागो वस्त्र वस्त्र सब काढ ही प्रात श्रीगार के काज मन भावे सब सीध्ध करे बेठा बेठा राज ॥ २ ॥ अटारी चढो भक्त कोउ दरसन पावे सार देखी देखी सचुपावही मनस्मारक श्रेष्ठ प्रकार ॥ ३ ॥ छोटी पलंग तीरछी धरेही ओट रहे बहु साज । अती आतुर जत करही सब अपने मनके काज ॥ ४ ॥ प्रभर अरु जरु चीर रची घोटे रस सार । जोती बढे जग मगही अती तब देवे वारंवार ॥ ५ ॥ पाछे पद्मासन रचही परम चतुरवर राय रंग ही रंग सुहात ज्यो । सो सो मलवे मन भाय ॥ ६ ॥ ओर रहे सखी देखही अपने मनके रंग । अतरंग के अंतरही बाढे भावतरंग ॥ ७ ॥ भोग सरायो आप तब दरसन पावे सब भक्त । अवकास बहोत हे या समे सब दरसन करे अनुरक्त ॥ ८ ॥

॥ सोरठा ॥ सब दरसन करी करी जाय । आवे सृष्टि बहु भांतकी सु प्रेमसही ठेराय जाको वरण कीयो प्रभु ॥ १ ॥ कोउ आंगन में सुहाअे कोउ भींत टेक के टीकर हे कोउ चढी अटारी जाय । कोउ जलघरमें ठाडी चहे ॥ २ ॥ बेठे फीर बंटा आय बडे वस्त्र श्री द्वारके सो सबकोउ दरसन पाय आप आप मन रीझही ॥ ३ ॥ प्रथम कह्यो ही भांत हे जेही भांत आसन भेद फीर फीर रचेसो देख निज्जननी पांत । अपने भावभर न्यामक नही कछुसो य मनमें उठत तरंग ज्यो सो वरनी सके नही कोय । वात पराये जान संज्या आरती भोगधरी अनअवसर भयो मान । द्वारा सबे मंगल कीये तब भक्त सबे धर जाय । वेग वेगी सब काजकरी तबही धसी मंदीर आय संध्या आरतीके समे ॥ ७ ॥ फीरी खोलेहे सबद्वार पुरव वत आरती करे दंडवत करही नरनार प्रफुलीत मन आनंद ज्युत ॥ ८ ॥

॥ चोपाइ ॥ बेठे प्रभु सींगासन आगे । घुंटु भरजु सहित अनुरागे । आरक्त चरन तर सब कोउ देखे जीवन जनम सफल करी लेखे ॥ १ ॥ प्रभु मन मन में अती सचुपो गावत रंग बहोत बढी आवे । नाथजुके भुषण वह ले अेक अेकेते अतही अमोले ॥ २ ॥ वीछोना चोकी सीध्ध करी

गये ग्वाल भोग को मन अभीलाखे । देख्यो ग्वाल बन मन भायो जह महाराज कही सब सुनायो ॥ ३ ॥ तब वैश्नवको आग्या दीनी ग्वालही साथ मानीग्नी लीनो सबी सबी सेवा चढावे तातो फेनु रेख्यो नावे ॥ ४ ॥ भरी भरी माहाप्रभु आगे धरही सेवाकी सब सौंधी ग्वाल भोग सर्यो तापाछे जसुधा भोग आयो अती आछे ॥ ५ ॥ सीखरी दार भात अनी साग चार छे अती सुहाते । सौंधो घोजो ओर दुध जो तातो गुर डायो जीनकु सुहानो ॥ ६ ॥ धर्यो भोग प्रभु जल धर आये संध्या वंदन करत सुहाये । बड भागी तांहा दरसन पावे । ललीतजुत अती सुहावे ॥ ७ ॥ हांसी टोक कछुक त्यां करही । भोग सर्यो भीतर अनु दुसरो भोग तबही फीर आवे तातो दुध भातमें नावे ॥ ८ ॥ **अथ आरती प्रसनाव** । सरसबचन ही आनंद भक्त दरसन को व्रंद खोले द्वारा तब भीतर आये श्री मुख देखी सुचपाये ॥ १ ॥ मोतीन थार दोउ कर सोहे बीवीध सुरंग चीत्र मन मोहे । लाल झंगाली पीतदां सुहाती देखे देख फुलतहे छाती । भक्त सबे तब दंडवत करही बारी फेरी सीस करी ॥ ७ ॥ बेगी बेगी सब बाहार पठाये । भोग राग सब नेग जु करके पाउधांग तब फीरके ॥ ८ ॥ **अथ स्व भव नागमन प्रस्ताव** । दीवी जोती प्रगट तब करही मोद प्रभु आगे धरही नीज मंदीर को प्रभु पाऊँधारे नीरखी भक्त तन प्रान उवारे ॥ १ ॥ मंद हसन बातजु कहेही जाको अनुभव सोइ जु लहेरी ही । अती प्रसन मन मोदजु बाढे जे जे कहींके बोल गाढे ॥ २ ॥ जाको प्रीत अपरमीत बाढी सो त्रीया रही जग मोहन ठाडी ही । कहु कहु हंसत कछु असीतही ॥ २ ॥ दीपक जोत प्रगट अतीराजे देखजु मोहत भक्त समाजे झालरी घंटा नाद जुवाजे । ओट बहु बेटी जु बीराजे ॥ ३ ॥ श्री गोकुल पाल बीठलराये ठाडे दोउ नी मन आनंद बाढे । आरती थार ले सोहत भारी । भक्त सबे देखत नरनारी ॥ ४ ॥ नीकी भांत नाथजु फीरी फीरी के आरती उवारे बहु बेटी तन पाछे हेरे आछे भक्त हे त मुख फेरे ॥ ५ ॥ श्री मुख जग मग जोतीजु सोहे देखी भक्त सबको मन मोहे । प्रभु प्रागट्य समे मदमाते रती पुष्टी ते सबही सुहाते ॥ ६ ॥ सुही विरीया सनेरे कोटी प्रकासजो प्रगट बीराजे । अंग अंग अती सुंदर छाजे ॥ ७ ॥ आय मंदीर बेठे आनंदही । सेजे कही बोले सब व्रंद ही अंतही अनुपम रुप बीराजे देखत कोटी काम अती लाजे ॥ ८ ॥ **अथ स्वरूप वर्णन प्रस्ताव** । श्याम सचीक्कन जुरासोहे मुरतवंत श्रींगार ही मोहे भाल तीलक रेखा रुची धारी बीच कमनी सोहत है कारी ॥ १ ॥ कानन कुंडल अतीही अमोल ही ललकत झलकही रुचीर कपोल ही । भ्रकुटी नेन

विराजे चंचल सब रस सुहेजु द्रगंचल ॥ २ ॥ केसे कहो नासीकानी काइ कीर फुल तील कछु न सुहाइ । पीया दरसन जब पायो नीके ताप नीवार तब सब जीके ॥ ३ ॥ लावण्य ललीत सहित मन भावे मटकत चालजु परम सुहाये । चंचल नेन अतुरा फीरी फेरे भाव सहित रस प्रगट जुहेरे ॥ ४ ॥ दींवट जोतीजु जग मग कर ही । नीज मंदीरको प्रभु अनुसर ही सींध द्वार में जे कोउ ठाडे तीनके मन आनंद जुबाढे ॥ ५ ॥ आंगन मांहा भीर बहु बाढी । प्रफुलीत प्रेमसहित सब ठाडी ॥ रसीक सीरोमणी वल्लभ आवे भक्तजुथ सबके मन भावे ॥ ६ ॥ दोढी जाय कोउ श्रीमुख हेरे सींध द्वार पाऊधारे अेकटक ठाडी मन अटको ॥ ७ ॥

॥ **सवैया** ॥ उपरेना लटकत भुज मुल मटकत आये नेग फीरी चरण परवारे । श्री गोपाल बोलन पाऊधारे । व्यारुको जब वेगी सीधाये । भये हरीदासन के मन भाये ॥ ८ ॥ **फुनीहां** । भीतर वहु बेटी सब फुली फुली हे अंतरमुख रसरीती प्रभु अनुकुल हे । सु अेक टक पेंडो नीहारत हे ज्यु चकोर ज्यों ॥ **फुनीहां** ॥ देख श्री गोपाल चंद उद्योत चहु ओर त्यों ॥ १ ॥ श्री पारवती वहुजी मन मोद सुहावही । व्यारुको वल्लभ आवेसु अतीमन भावही तातो कीयो मुखवीलास हास्य रसनीको । जोहे देखत सबरस फीको ॥ ३ ॥ अधर अमीत रस रंगजु सोहें उपमा कोउ याकी सम कोहे । माला तुलसी गुंज लटके ग्रीवा मटकत में मन अटके ॥ ४ ॥ उर उतंग छबी सोभा छाजे जोबन मत्य त्रीया सोउ लाजे । नाभी उदर कटी त्रवली सोहे । अेक अेक अंग सब मन मोहे ॥ ५ ॥ मुदरी सहित ज्योतीजु दीये झलकत झांइजुअतही समीपे धोती उपरना मरगजे आछे पीठ पनारी सांहत पाछे ॥ ६ ॥ चरण कमलकी सोभा राजे । सचु पावे सब भक्त समाजे । वारी फेरी सीसकर चटके कोउ आय प्रभु सुखरास सुहावेही ॥

॥ **फुनीहां** ॥ वहु बेटी सब परीवार के मन भावेही ॥ १० ॥ भक्त भक्तको उचल बलकरी परवे आये हे । अती सुंदर सेवकरुप देखी मन भाये हे । पुरववत अचवे सब त्रीया सचुपायहे ॥ **फुनीहां** ॥ **दोहा** । माहा मंदीर में आसन रुचीर रची राख्यो नीत्य नेग अबही प्रभु पाउं धारे हे चरन वस्त्र बीछाये वेग ॥ १ ॥ भक्त सबेको आवेही समय भयो जीय जानी पीये दरसनको व्याकुल बहु मत्य प्रेम रस ताको पुरन दानहे । अब तातो दुध परोसत बुरा समेत हे मनमें बहु आदर भाव सुहेत समेतहे । फीरी उजल ताता मात सुवास सो लावही ॥ **फुनीहां** ॥ परोसत अती मती हेतसु प्रभुको भावेही ॥ ८ ॥ फीरी हांसीकी बात चले कोउ भट के गेह की वहु बेटी

जो ओट हसें न रहे सुधी देहकी श्री मुख चारु प्रसन्न कहे आनंदमें । **फुनीहां** । छोटी के लाल हसे सबको बंद में । पीछो त्रश्रीअ नीवास आंगन मांहां गडुआ भरी सीक खरी धरीके ठाढे त्यांहां । उठी अचवन सब सीध्ध जो जो प्रभु कोरुचे । **फुनीहां** । नाहा नीहारीके नेन जुगल खंचन वचे ॥ २ ॥ धरीराखे पीढा थार सदा नीत्य नेग ज्यों बेठे हे प्रभु आपुन आयके वेगी त्यों । श्री वल्लभ राजकुमार जुयां सोहे । **फुनीहां** । सब भोन में फुलेजु कमल जोंनो रवीसो मोहे ॥ ३ ॥ श्री गोपालजु वीठलराय आदी बालक सबे जमाइ भाणेज नेग सो बेठे हे । तबे तीवारीजु सुहाय श्री वीठलनंदयां । **फुनीहां** । ज्यां नक्षत्र मंडळ मध्यजु पुरनचंद त्यों ॥ ४ ॥ श्री बहुजी जु परोसत अती आनंद भरे नीरखी सचुपावत श्री सुंदर वरे । पातरीयां भरी भरी सबकोउ को धरे फीर आय पसोसत नाहको वाछल्य बहु करे ॥ ५ ॥ ठाडे मुंग तातो दारजु घ्यो सोंधो वसे । अती कोमल रुचीर सुवास भात सुंदर लसे । व्यंजन जो रुचीकारक सबे अनुसारजो । **फुनीहां** । कचरीया पापर वडी प्रेम सुख स्वादसो ॥ ६ ॥ फीर सब काहुको परोसत सत्वरता लीये फीर श्री गोपाल परोसावत काहु कोहु को नामले । **फुनीहां** । फीर आये परोसत ॥ ७ ॥ कोउ पेंडा हेरत परम प्रेष्टको पलसात ज्युग सम होय । ताके परीताप तें पावही दरसन वेगी सब कोइ ॥ ८ ॥ दीवट जोता उद्योत तब देख्यो गली प्रकास सींग द्वार तें मुदीत भये सब पेखत हे हरीदास ॥ ९ ॥

॥ छप्पो ॥ लोक रहीत जु प्रकास भयो अव्यक्त प्रकासही ज्यों ज्यों नीवारेआय प्रकास उद्योत उदे करे । त्यों त्योंसमु अधीक रती सुत्र षाजु बढे अपरंपार तन मन प्रान संज्यम सहित पान करे द्रग ओक धरी हरीदास सांनी ॥ २ ॥ आवत मन भावती अतीही अपनी अपनी भोंती प्रीये दरस रसरंगी सुभग मद परम सुहाती ॥ ३ ॥ मोदभरे उछलीत रस वल्लभ देखन आस धर धरते नर नार सब आवतहे हरीदास ॥ ४ ॥ भोजन साला तेप्रभु पाउधारे बेठक धाम मनहीमन आसीसदे । बहु बेटी अती अभीराम ॥ ५ ॥ माहा मंदीर सब गहे गही भर्यो अती सुहाग्य भर भक्त कोउ रहे सींध द्वार में परम प्रेम आसकत ॥ ६ ॥ खवास कर गडुआ लीये मंदीर आये अनुरक्त सुदेखत परम प्रमोद जुत फुले हे सब भक्त कहे कसे कहों नेन अधातन क्यों हुं करी ।

॥ सवैया ॥ देख्यो जु परमरुप आवत गोकुल भुप अतीही अनुप । रस रसजु रसतहे केस पास जो रसाल । तीलक सोहत भाल नयन वीसाल मुखमंदजु हसत हे । ग्रीवा माल लटकेजु बसन

लसत हे। ठाडी सबह रहेसु आय गये नेरे जु चपलद्रग फेरेहेसु । मनमें वसतहे डोढी में पधारे सब तन मन वारे जै जै कही के उचारे कोउ आपन संभारे हे । मंदीर में आय भये भक्त मन भाये तन तापजु नसाये सरवस वारी डारे हे । चरनजु लोहे बेठे गादीपर सोंही देखी देखी मोहे मन छोटे मोटे वारेहे। पुजइ सबकी आसके हरीदास दास घेरी बेठे आसपास नीके जु नीहारे हे ॥ २ ॥

। इति श्री भक्त सुख मंजरी ।

। नीत्य चरित्रे नीसा भोजन वरणनो नाम। नवम प्रभाव ॥ ९ ॥ संपूर्ण ॥

| भक्त सुख मंजरी | प्रभाव | १० | दसमो |

| अथ सुख सेज्या समय वरणन |

|| सवैया || वीरा वेहु पास धरे बंटा ले बेठो खवास कपुर अती सुवास भीमसेनी नाम हे || खोली लेत जात डारत फीरात पात || मोद मन न समात देखी देखी वामहे || गंदोडा जु अंगी करे पान सोहे बांये करे || चुनोजु अंगुठे धरे राजे अभीरामहे || चीरी करी करी पाछे रंगचुपरत आछे || चीपके आरोगे हरीदास पुजे कामहे || १ || मंदीर तीवारी जलधर नीज आंगन भर्गे बेठे सब ठोर ठोर आपने जो भाये हे || कोउजु चढी अटारी कोउ वेदी पर ठाडी देखे नीज वल्लभजु सब सुखदाये हे || आये श्री गोपाल श्री विठ्ठलराय आदी सब || बेठे दंडवत करी तातजु सुहावे हे || भर्यो होमधर वहु बेटी हरीदास केहे परम प्रमोद कथा सुनवे को आये हे || २ || दीपक जो ज्योती करी चौकी पर पोथी धरी || भट कोउ आय तेहे समे सीर नावे हे || वसना खोले हे सार अेक अेक ते अपार || अतीही सुचार भक्त करी करी लावे हे || पत्र पुठा हाथ धरी पाछेजु नमन करी || मंगला चरण करे अती मन भावेहे || जयति जन निवास देव की जनम वाद सुनी हरीदास असलोक सर्व सचुपावे हे || ३ ||

|| चोपाइ || अेह असलोक पुरो पढ्या छे || श्री मुख वचन केहने हे आछे || पुष्टी मारको भुषन जोड़ || मर्यादाको दुषन नसोड़ || १ || अेसे बचन कहे || नीत्य गाढे सुनत भक्तमन आनंद वाढे || २ || परा पुरव संबंध मीलावे || तापाछे फीर कथा चलावे || फल प्रकरन तामसको कहही || ३ || मुख्य भक्त के वचन जुआछे अगीआरे असलोक अेक अेक पाछे || भाव अपरमीत क्यों कोउ पावे || सुबोधनी टीका मन भावे || ४ || सुबोधनी टीका उचारे || सुनी सुनी भक्त अपनपो वारे || श्रीगोपाल जीयु जीयु कही बोले || मन मे रीझी शीश कछु डोले || ५ || बहु बेटी मनमां रीझे || सुन सुनी अती अंतर गतभीजे || लीखन सुतंतर कही लीला रस || अपने भाव ओर कहे रसवस || ६ || तब जै जै कही सबकोउ बोले || कहे या रसके कोउ कबहु न तोले || गदगद कंठ गीश भइ भारी || चीत्र लीखे जु सुने नरनारी || ७ || वहु बेटी सब घरकी आवे || सुनी सुनीके सब आस्यजु भावे || भट भाणेज सबे सचु पावे || मन मन रीझे शीश डुलावे || ८ || श्री गोपाल पुरे कही भाखे समझी ठोर कथा त्यां राखे || जै जै जै कही

सब कोउ गाढे ॥ बालक भये दंडवत करी ठाडे ॥ ९ ॥ जायजु अपने ठोर ठीकाने ॥ रंगे मन यह रस जु रवाने ॥ बहु बेटी अपने घर जाइ ॥ सबके मनमां मोदन माइ ॥ १० ॥ छोटी वहु बेटीनके आगे ॥ कथा सुनावे अती अनुरागे ॥ श्री गोपाल सुनके मन रीझे ॥ भीतं ओट अंतरमन भींजे ॥ ११ ॥ यांहा महा प्रभु रस मद माते ॥ हांसी टोक करत बहु बाते ॥ प्रभु भक्तनको अधरामृत दीनो ॥ रसीक समे रस सुचन कीनो ॥ १२ ॥ अचये जल जरसे रस भीने ॥ पाछे बहु बीरा फीर लीने॥ खवास बंटा आगे राखे ॥ मुखमें कपुर भरी चुटकी नांखे ॥ १३ ॥ कथा अनंतर सखी सुजाती ॥ मीली मीली वाते कहेत सुहाती ॥ ओर कोउ जो सुनन न पावे ॥ अपनीवात आपन पो भावे ॥ १४ ॥ कोउ कहे हम भइन पोथी ॥ ठाकोरजीके श्रीकर सोहोती ॥ कोउ कहे जो होती पुठा ॥ माहा प्रभु राखत धरी मुठा ॥ १५ ॥ वसनान भइ भाग्यजु वसते ॥ श्रीजी अपने करग्रही कसते ॥ को कहे भइन नीवार सुहागी ॥ वल्लभ कर सोहाती अनुरागी ॥ १६ ॥ असे वचन बहु बहु बोले ॥ सब अपने मन मनकी खोले ॥ प्रेमासक्त बढ्यो बहु रंगही ॥ चढीज अपने भाव तरंगही ॥ १७ ॥ भक्त कोउ पढे प्रभुको जस ॥ नाना छंद प्रबंध मीष्ट रस ॥ कोउ कवीत कोइ छप्पैय पढेही ॥ सुनी सुनी मोद सबही नमन बढेही ॥ १८ ॥ कोइ गावे अती राग बंधाने ॥ कोउ वीण बजावे मीठी ताने ॥ कोउ चोपाइ कोउ दोहाजु पढही ॥ अपने ओसर आनंद बढही ॥ १९ ॥

॥ अथ प्रमाणिक छंद ॥

रसात्मक स्वरुपकं । जय ओ चलं । अनुपमकं श्री गोकलैक भूपकं । सुरेसारु चीर रुपकं ॥ १ ॥ तुलसी माल धारनसु पक्ष रक्षकारनं । परंपरा उधारनं । सुअधम श्रृष्टी तारनं ॥ २ ॥ खटशास्त्र वेद पारकं । सुमुद्रा खट धारकं । सुधर्म खट उश्चारकं । संसो समुह वारकं ॥ ३ ॥ सुकर्म धर्मन मदं । सुभार्थ झयो यक्षेमदं । संपूर्ण भक्त प्रेमदंभं । नाना मनोरथपे मदं ॥ ४ ॥ मरणीये भक्त सारकं । सीध्धांत ग्रंथ कारकं । लीला रसाब्धी पारकं । अंगत्व विस्तारकं ॥ ५ ॥ अपार पार पारगं । नमामी गोकुलेसकं । प्रमेह श्रृष्टी कामदं । जनेसुभ सुखावहं ॥ ६ ॥ मनसा सु नीरोधनं । सुचीत चतुर बोधनं । सुजाग्रत फुलगोधनं । सुतन सम्यक सोधनं ॥ ७ ॥ परीधान यो सुवास सं । सर्वांग योग रस राससं । सुवास यो म्रदु हास्य सकीं । कर्णयं हरीदाससं ॥ ८ ॥ पूर्ण छंद ।

॥ सवैया ॥ विठ्ठलेस को कुमार सोहत अनुपचारु । अती सकुमार ज सलोनो नाह । देख ही प्रेम पुलकीत तन रीझ रीझ मन मन नीरखती सब । धन लगेन नीमेखेही । अेहे सुपन के सत्य सोचती हे । अेकचीत परम भावतो मीत्र फीरी फीरी पेखही । कहे हरीदास रीझीमन पुरी आम । चरन निवास रुप अवरे खही ॥ १ ॥ रस रस रस भर । रसीक वल्लभ वर सब वीधी दान पर । रसको उदार हे । चंचल चलावे नेन मोहक ॥ २ ॥ कोटी मेन बोलन मधुवेन सरस सुचारु हे । धीरा धीर धरे ओट करे जो कटाक्ष चोट भये । दोउ लोट पोट रीझके अपार हे । देखी हरीदास दास जीये में बढ्यो हुलास । आसपास समजेन कोउ तीहीवार हे ॥ २ ॥

॥ छपैया ॥ जय वल्लभ वर नाम काम अभीराम । धाम जादेय जब रुचीकारकरुप । भुप गोकुलंके प्रेम पर । जय अद भुत रसदान । मान प्रीती परमा वीधी । जयवरण संसीध्ध भरन भावैक महानीधी । जय जय जय श्री वीठ्ठल सुवन । गोकुलेस रस रास मय हरीदास भनें रुकमणी तनय । भक्त क्रपा नीधी अती सध्य ॥ ३ ॥ जय जय तीलक सुभाल भ्रअ । अव्यक्त मधुर अती । जय जय नयन वीसाल महा सुखरास चपलगती । जय जय कुंडल लोल । अमल उध्योत उदेकर । जय जय मुखसुं वीलास हास्य परम सोभा भर । जय जय जयती लावण्य ललीत । सुसर्वगि रुचीरा भरण हरीदास अभीलासीत चरनरज । जय जय जय संसुख कारण ॥ ४ ॥ जय रुचीकारकरुप । अनुप भुप गोकुलपती । जय रती पती मन मोह सहज सुंदर । वसीम अती जय सींचीत संसोध । सुबोध नीरोध रमण रती । जय जय लीला सागर । नागर नित्य नवीन गती । जय जयती वरन संसीध्ध करन । वीरहा दुख दारुण हरन । हरीदास भने रुकमनी तने । जै जै जै जन सुख करन ॥ ५ ॥

॥ सोरठ ॥ वीच वीच बीरा आनी खवास लीवावत जातहे समय भयो जीये जानी । बीरा पामइ वीश्रामकी ॥ १ ॥ तब बोल्यो वचन जु आय । अवेर भइ हे । आज कछु सो सुनी भक्त मन भाव ॥ सेज्या पोढे महा प्रभु ॥ २ ॥ तब जै जै जै कही बानी । भक्त सब कोहु बोलेही । प्रीय वल्लभ परम सुजानी । भक्त वत्सलजो वीरदहे ॥ ३ ॥ तब उठे महाप्रभु धीर । भट सबन आडवा करे । भरीजु अतीसे भीर । पास आय ठाडे सबे ॥ ४ ॥ प्रभु परम करुणाल । मान सहित आग्या करे । वृध्ध तरुण अरुबाल । अेक अेक को नामले ॥ ५ ॥ वह दंडवत करी घर जाय । भाये सब हीनके भये । सुफुले अंग नमाय । महाप्रभु संतुष्ट कीये ॥ ६ ॥ प्रभु देह कृत्य को जाय । धार

पनैहा चरनमें । कोउ भक्त अधिक अकुलाय । जाको पल सतजुग समही ॥ ७ ॥ तब काढी हे सुख सेज । परम रुचीर रमनी अती । सोपेखे अतीगती हेज । जाको अनुभव मनही में ॥ ८ ॥ बीछावेहे नीत्यने खवास भावते भगवदी । सीध कीये सब वेग । पलंग पोस पहरावही ॥ ९ ॥ चारोहु ओर समारी कगुरा हु रुचीर करी । सुपेदी पीछे नीहार । समे सुभग अनुसारकी ॥ १० ॥ अेक अेक पर सार । तन सुख मल मल छींट ज्यों । बांधनुं कसुंभी आपार । अती उची कोमल बहु ॥ ११ ॥ तापर चादर बहु मोल । खासा कीजु बीछाव ही । सीरहाते नीरमोल कोमल मखमलजु वीलातकी ॥ १२ ॥ पांयतको रहे अेक । सो चादर केतर धरे । सीराहाने करी वींवेक लपेटनो उरसे तरही ॥ १३ ॥ फोंधा सोहे पाट सुभग श्याम मखतुलके । झबा रुचीर सुघाट सुंदर सीरहाने धरे ॥ १४ ॥ कसना चारहु पास कसे सु सुंदर । लटकही प्रथम कहे रस रास । सामपाट झबा सहित ॥ १५ ॥ गीरदा अतीही सुवास सोंधो । चुपरी गलेफ सो सोहे दोउ पास मीठीवास वहे बहु ॥ १६ ॥ सुपेदी ओढनकाज अती उची कोमलधरी । भींतर चादर साज तनसुकझो महा सुखसो । १७ । परधी दोउ संग धरे । सीरहाने आरको सो सुंदर अतीही सुरंग । फीर फीराय राखे, सुद्दढ ॥ १८ ॥ सेज्या अनुराग समेत समारीहे । रुची रुची रुची त्यों वहुजी कहेत सेज समारी, दुसरी ॥ १९ ॥ अती कुसुम की माल सीरहाने की ओर धरे । अतीही वीचित्र रसाल रुची आमोद परागजुत ॥ २० ॥ स्हेज समारी सीध्ध देखी भक्त मन फुलहीं पाइ हे । महानीध आछादी राखी रुंचीर ॥ २१ ॥ अपने मन मन रंग भाव अपरमीत भक्तके । बाढे बहु जु तरंग । कोउ काहु सो ना कहे ॥ २२ ॥ काहुके मन होय सुपेदी । मसरजी नही । वल्लभ हमपर सोय तब बहुते सचुपावती ॥ २३ ॥ मन काहुके रंग चादर क्योंन भइ हमही । लपटी रहत श्री अंग । ठाकुरजुके संग सो ॥ २४ ॥ काहुको जु तरंग कस ना होतीतो भले । सोहती सेजके संग । लटकी रहत सब मोह ही ॥ २५ ॥ काहुको जो वीचार । कुसुम माल होती जु हम । अती आमोद अपार । श्रीजीके मन भावते ॥ २६ ॥ दोउ सखी मनरंग । गीरदाजु होती हम ही । दोउ गाल सोहती संग । अेक बांयक ये दांयने ॥ २७ ॥ अे वीधी बहु बहु भांत नाम । क्यांहां लगी सब गीनो । ठाडीहे सखी पांत्य अपने मन मनोरथ धरे ॥ २८ ॥ उहां प्रभु फीरी आय दरस दीयो । खनीयती चौखंडी तन जाय सुंदर चाल सुहाय ही ॥ २९ ॥ बेठे पीढा सोही प्रभु मुदीत मन समजे । सबेसु देखी देखी मन मोही क्षालन चरनजु राजही ॥ ३० ॥ खवासजु बेठे पासधरे मृतिका मुठीसो । कछु टोक कहेसु वीलास सुने भक्तमन मोदजुत ॥ ३१ ॥ क्षाले चरन उदार

आचमन कीने । नेगजुत फीरी बेठे सकुमार सनमुख दरसन देन हीत ॥ ३२ ॥ लोळतहे कन्मार । मुख पोंछत लावण्य जुत सोहत हे जु अपार । भक्त सबनको मन हरे ॥ ३३ ॥ उहां चरन पोंछीबे काज । दुलीची वस्त्र बीछावही आवन हे अब राज । सेज नीकटजु सुहाइ ही ॥ ३४ ॥ गडुआ भरे जुसार । चोकीपर दरे सोहही । बीरा बरास बहु अपार । बंटी बसारकी संग धरे ॥ ३५ ॥ ठाडे भये करुणाल । पाउ धारत अती ललीत गतीसो नीरखी नीरखी सब बाल । तन मन प्रान उवारही ॥ २६ ॥ आये सुख सेज के पास । चरण वस्त्र पर राजही पुजे नीजजन आस । पोंछत चरण जु प्रेम जुत ॥ ३७ ॥

॥ सवैया ॥ सुखसेज के पासजु ठाडे रहे हे सेज श्री गोकुलनाथको पेखती नारी सर्नेन जु झुंड चडी हो ॥ १ ॥ पाघ लायो हे खवास सोंधो लपेट्यो सुवास फेली रह्यो आसपास महामहे महे हे । जुरा छोर्यो हे सुवास सोहु महेके अपार छोरकर लीने चार सखीगन चहे हे । गादी शीश धरी पाछे पेचजु समारे आछे जानी रुप काछे ॥ २ ॥ सुखमा जु वहे हे कहे हरीदास पाघ बांधीहे अती हुलास पीत तोरा दोउ पास रुचीर जो रहे हे । खीर सी उज्यारी रात सोभा मनमां समात ससी नेरे आये जात दरसन काज हे । छीटकी रही हे भारी । जामनी अती उज्यारी । कामनी नीहारी । सब उजरो जु आज हे । बरनी सके सो कोहे । सेज जो उज्वल सोहे । सेत पाघ मन मोहे । उजरोजु साज हे । गोरे अंग गोकुलेस राजत अती उज्वल पास हरीदास भक्त उज्वल समाज हे ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥ शरण चोकीजु बिछायके । धरी सेज के पास चरण संवाहन करे हे । भक्त जो नीजदास ॥ १ ॥ शुध्ध दूध धृत कोमल सुखद । अरु शीतल अतिही सुवास । धरे सुहाहो ही । सब निरखत हे उल्लास ॥ २ ॥ प्रिय अति मीठी बाते करही । सो सुने भक्त सब कोय । हांसी टोक जु नित्य नइ । सुनी सुनी रस वश होय ॥ ३ ॥ श्री मुखरुचीर जुं देखही । सब अंग अंग कमनीय । हरीदास कहे रुची बाढ ही । देखी परम रमनीय ॥ ४ ॥

॥ छपैया ॥ तिलक रुचीर रुचीर भाल विशाल नयन रुचीकारी । कुंडल झलकत रुचीर रुचीर नाशा मनुहारी । अधर मधुर रुची रास सुहास विलास रुचीर मय । रुचीर कंठ शुभ माल । रसाल उरोज रुचीर मय । बाहु विशाल ज्यु मशरु चीर झलकत हे नखमणी रुचीर । रुचीर अंग हरीदास देखी सब दे आशिष । त्यंजी उचीर ।

श्री रमणेशो जयती

। भक्त सुख मंजरी । प्रभाव । ११ । अगियारमो ।

। अथ प्रेम विरह वरणन ।

॥ **चोपाइ** ॥ अब इंहां सब भक्त अपने घर घर। पांच सात मीली अेक भाव भर। बात निज वल्लभ की कर रही । अपने अनुभव को अनुसर ही ॥ १ ॥ शोभा वरनत श्री अंग अंगकी। दरसन जो करी आइ अब की। कोउ कहत हे शीख ते नख लों । कोउ कहे फीरी नख ते शीख लों। २ । कोउ कहे निज मंदिर शोभा । जांहा तांहा प्रगटी आनंद लोभा तीबारी की छबी कोउ क्यों बारने। अतिसुंदर त्रिभुवन आभरने ॥ ३ ॥ शमीयाणा जरकती राजे । तीन तीबारी ढीग जु भ्राजे । कोउ कहे जो नुं चित्र लीख्यो हे । दिव्य लोक ते अति रच्यो हे ॥ ४ ॥ कोउ वरणे जु चित्र भित्य के । नाना भांत्य अनेक रीत्य को । अप्सराय छीनी परि कीन्नरी । चित्रित चित्रनरी शोभा भरी ।। ५ ॥ को कहे दिव्यांतर चित्रित सब । क्यों करी वरने जाय सबे अब । हयदल गेंदल पेंदल राजे । राज सभा सोहत जु समाजे ॥ ६ ॥ चित्रित वेली वृक्ष लपटांनी । मोर कीरजनु बोलत वानी । इक कहे सब आल बउ द्रिपमां । कहां लगु कहे बण वन उपवन ।। ७ ॥ कोउ कहे बेठक सची राजे। शोभती सभा सहित जु समाज ही। कोउ कहे कथा जु सुनी हे । सो रमी रही काननीमें धूनी हे ॥ ८ ॥ कहे जु फीरी सब भाव संजुक्त ही। ज्यों ज्यों श्रीमुख कहे अनुरक्त ही। टीकी टीप्पणी व्यक्ति सहीत रुब। फीरी के कीही समजावती हे अब ॥ ९ ॥ समुजी समुजी फीरी सब सचु पावे । श्रीमुख के जु वचन मन भावे । सोइ समे मन में जु वसत हे। फीरी के आपन पौजु कसत हे ।। १० ॥ कोउ कहे हांसी बहु कीनी । अेक अेक ते महारस भीनी। सो फीरीके समजावे बातही । तब फीरी हांसीद उदरन मात ही ।। ११ ॥ को कहे टोंक बहु कीनी ज्यों । फीरी के समजावती सहीसो । ज्यों बधीर मुक हसें हांसी देखे । फीरी हसे जब समुजी विशेषे ॥ १२ ॥ कोउ कहे रस सुख सेज्या को । जाको अनुभव सों सबताको। को निवार कहे भरत की भांते । कोन लहे जु सिराना पांते ॥ १३ ॥ कोउ कहे छबी पलंग पोसकी। कोउ फूदनां कगुरा जो कोसकी। कोउ कहे जु सुपेदी शोभा । काहुको मन चादर लोभा ॥ १४ ॥ कोउ कहे शिरहांने आछें। कोउ को मन गीरदा पाछे । कोउ वरने कसना रुचिकारी। झांबाकी छबी बरने न्यारी ।। १५॥ कोउ वरने जु कुसुमकी दामही । कोउ कहे

थाक अभिराम ही । कोउ वरने जु लपटे सोंधाकी । कोउ चोकी गड्डआ बीडाकी ॥ १६ ॥ कोउ कहे पर छाप्या की छबी । को कहे चादर रचारी फूंट दबी । को कहे चरण वस्त्र सुखकारी । दुलीची पर सोहे मनुहारी ॥ १७ ॥ कोउ कहे सब नेनन तारे । प्रति प्रति वस्तु भाव हे न्यारे । प्रगट करत जु वचन क्यों आवे । अनुभवीय के मनमें भावे ॥ १८ ॥ प्रभु आय दुलीची पर ठाडे । तब सबके बहु आनंद बाढे । कोउ कहे तनीआ पहेर्यो जब । उपरना जब आछायो हे तब ॥ १९ ॥ कोउ वरने बेठे सेज्या पर । विविधी भांती रस ज्युत जु प्रेमभर । कोउ जुरा छोर्यो सो करही । अति सुवास जो महामहही ॥ २० ॥ कोउ वर्णन करे पाग जु भाइ । बीच बीच धारी श्याम सुहाइ । को कहे पीत पट बांध्यो पाछे । राखे तुरा दोउ अति आछे ॥ २१ ॥ कोउ वरने जु तिकल रुचिकारी । को वरने भ्रुकुटी अणीयारी । कोउ नासा पूट वानक वरने । कोइ गलस्थल कहे मन हरने ॥ २२ ॥ को कहे कुंतल केश जु आल के । कोउ वरने कुंडल जो ललके । कोउ कहे हीरा अति चलके । कोउ कहे झांइ कपोले झलके ॥ २३ ॥ कोउ वरने नेना जो चंचल । को कहे पेने बान दगे चल । कोउ वरने नेन के तारे । कोउ कहे गोल अति कारे ॥ २४ ॥ कोउ वरने वरनी अति पनी । कोउ कहे सेन सुख देनी । कोउ वरने दीरधताइ । कोउ कहे कछु कही न जाय ॥ २५ ॥ कोउ वरने अधर मधुर अति । कोउ वरने रेखा रंजित अति । कान्तकी लालीमा सों रति । कोउ शेभा वरने जु सुभग मति ॥ २६ ॥ कोउ कहे दंतपांती जो दमके । कोउ वरमें आभा ज्यों चमके । कोउ कहे राजे रुचिकारी । अनिवर वचनां शोभा कछु न्यारी ॥ २७ ॥ कोउ वरने अव्यक्त हास ज्यों । वरनीन आवे मुख करी केसे । कोउ वरने जीव्हा अति लोले । रसमय रुचिर कहु कहां तोले ॥ २८ ॥ कोउ वरने मुख कमल नीकाइ । लावण्य ललित महासुख दाइ । कोउ वरने ठोडीकी शोभा । अति विश्राम सहित मन लोभा ॥ २९ ॥ काहु को मन ग्रीवा अटके । माला तुलसी की बहु लटके । कोउ कहे गुंजा अति सोहे । जाके देखत ही मन मोहे ॥ ३० ॥ कोउ उरोज ज्युगल छबी वरने । अति उतंग ज्युवती मन हरने । कोउ हृदय कमल मन राखे । शोभा सहित सदैव करी भारवे ॥ ३१ ॥ कोउ वरने रोमावली । सुंदर श्याम सोहत विशेष । उदर थोंकवती ज्यों राजे । अति छोटी रवनीय जु भ्रांजे ॥ ३२ ॥ कोउ वरने जु नाभी गहेरी । अति ज्यां ते नहि निकसवेकी गती । कोउ वरने जु त्रिवली की रेखा । ज्यां देखे ना लगे निमेषे । ३३ । कोउ वरने पारस्व जु अंगे । सुख सागर की उठत तरंगे । कोउ वरने जु विशाल बाहु को । अपने अनुभव सबे काहु को ॥ ३४ ॥ को

करकमल अंगुली दल वरने । को नखमणी महातिमिर जु हरने । को कहे मुंदरी चमके भारी । पीत अरु नसीत असीत जुन्यारी ॥ ३५ ।। कोउ वरने पीठ्य पनारी । ज्याके शोभा अति मनुहारी । काहु कटीतर लंक जु भावे । वरन करे वरनी नहि आवे ॥ ३६ ॥ कोउ नितंब की शोभा कर ही । अपने अपने अनुभव लहही । कोउ वरने जु उर रंग राचे । ऐसे तोना उतरे सांचे ॥ ३७ ।। कोउ अव्यक्त अंग वरन्यो चहे हे । कछु हे अरु फीरी संकुचे हे । पाछे मधुर मधुर करी बानी । मोंन साधी मुख कछुअ आनी ॥ ३८ ।। तब उनके मनकी सब जानी । सोंहे सोह देखी मुसकानी । सब कोउ लीला सीधुं जो सांनी । मन समुजी मुख कछुअ न आनी ॥ ३९ ॥ कोउ वरने जानुं गोल द्वे । ज्यों अंग वरने तांहां थकीन के । कोउ वरने पग पिंडुरी कवनीय । पेंडु धरत सोहत अतिरवनी ॥ ४० ॥ कोउ वरने गुलफनी जु मनोहर । सहजी ही सदा स्वभाव मोहकर । कोउ कहे ऐ उभे भाव भर । समे साधित तब धीर धीराधर ॥ ४१ ।। ऐक कहे पटुली रुची राजे । चीत चुभी रहे ज्यांहां भक्त समाजे । ऐक समे जु वीररस साजे । कोटीकाम छबी देखत लाजे ॥ ४२ ॥ कोउ कहे अंगुली दल भ्रांजे । अग्रणीय युद्ध के काजे । काम कटिक सब अंग जु गाजे । रस रण जीती नगारे बाजे ॥ ४३ ॥ कोउ वरने नखमनी मनुहारी । ऐक ऐक की शोभा न्यारी । झलके ज्योति झगमगे भारी । मनमें वसे सदा रुचिकारी ॥ ४४ ॥ ऐक कहें चरण तल राते । अनुराग सहित सहित मदमाते । शुभ रेखा जुत अतिही सुहाते । भक्त सबनी सौभाग्य जु आते ॥ ४५ ॥ फीरी फीरी के फीरी ऐही वात ही । सिख नख लीला जुत जु सुहात ही । अपने अनुभवकी सुध आवे । काहु के मन अति ही भावे । ४६ । काहुको परिताप जु बाढे । कोउक मुख ते सासन काढे । कोउ पुरन रस मगन भइ तब । लीला सिंधु में लहरी लगी अब ॥ ४७ ॥ सबके देखन मुर्छा आइ । यह है अटपटी कही न जाइ । ऐक ऐक तन देखी रहत वहा जगदीश होयगे अब कहा ॥ ४८ ॥

॥ **सवैया** ॥ अबजु व्याकुल भइ कोउ नरनारी गही । कोउ ज्यु बुलाइ रही बोल कों न वात हें । कोउ देखे नासिका को सास हे । क्हे जु नारी कोउ देखे मुखमांज जुरी दंत पात्य हे । कोउ देखे छाती छोटी । नेंक धूक धूक तिन । कोउ राखे नाभी । भुज देखे अंग धातु हे । छाती आगी ज्यारी हेतु राह जेंसे मारी गयो । देखी हरीदास सब जुड्यो गात गात हे ॥ १ ॥ छीनुं फीरी ताती भइ देइ सब दाह दही । कहा कीजे दइऐ अंगीठी ज्यां जरत हे । देख सब गात गात

छूपो केसे जात हें जु कही न परति बात प्रान जु हरत हे । लाय लागी हे न तन आकन यु सखीगन धीरन धरत मन साहस करत हे । कहे हरीदास लेती दीरघ उसास अब विरह की ज्वाला काप टारी जु टरत हे ॥ २ ॥ सखी जु करे विचार कीजे कहा ओतीवार नेन निर बहे धार फीर याकी देखीके । चेतना अचेत जाही प्रान काहु हे के नाही जो पे दइ ओसी मार पनघ विशेष के । करीये कोन उपाये ओरु हे न कछुदा ओ बोलती नाहीने रीओ देखे न निमिष के । कर भींजे हे जु सब कछु नाही रह्यो । अब कहे हरीदास सास पूरे करे लेखी के ॥ ३ ॥ छीनुक चेतन भइ जरी जरी जरी कही सखी धीर धाय गही प्राननं ऊवारे हे । काहु मनमानी लइ जीवे कु जु आश भइ । कही जगदीश वारी राइ लोन भरे हें । भइ छीन ही मे छींन तरफती मानो मीन। सखी सबदीन बारी तीन तोरी डारे हे । कही नही जाती ओह रही न संभार देह सखी हरीदास गोकुलेश के उचारे हे ॥ ४ ॥ छीनु ही में चेत फीरी छीनमें अचेत होती वाकी गति आली कछु कही न परति हे । छीनु हीमे ताती फीरी छीनुं में सीरी के जाती । छीनु हीमे फरी जरी जरी जु कहती हें । छीनुंक मे फीर बोले नाही छीनु छीनु प्रतिरुप आ रही धरत हे । कहे हरीदास दास सखी घेरे आसपास विरहकी व्यथा काये टारीजु टरती हे ॥ ५ ॥ कबहु कहेरी हसी हसी जु निहारतीहे । प्रानधन पाय मन अति हरखती हे । कबहु करतकी केसरकी जु न्यारी होनी जेसे कोउ तोरे नेहा कानी नीरखती हे । कबहु रोदन करे नेकु नाही धीर धरें नेंन नीते नीर अंकधार बरखती हे । कबहुक अेसें ही जुलेती अंकवारी भरी कही हरीदास काकों मन करखति हें ॥ ६ ॥ ओर सखी आहे जु दीपक जगाइ वें को कह्यों समे थारे रह्यो प्रभु दरशन को । ज्योति जु प्रगट करी तब जु निहार्यो फीरी देख्यो हें कुचेन सुकुमारी नारी तन को । तब उपचार वें करको उपाय करे हाय हाय करीके झुकती सखीगन को । पेखी के प्रगट दोष अेसे कोउ बेठी रहें कहे हरीदास रीसकर जु सबने की ॥ ७ ॥ घसी घसी चंदन घोरी घोरी घनसार बोरी बोरी वस्त्र आछे अंग जु धरत हे । ओर जो उपाय अनेक विचारती हे । उशीर जुबारी कुम कुमा सो भरत हे । ज्यों ज्यों उपचार करे त्याही त्यों अधिक सरे भिजाइ जो धरे वर हरे वे जरत हे । विरह के आंच वेन जाने । दोष माने हे जु कही हरीदास तो सों पीर न टरत हें ॥ ८ ।। उनी हारी मानी सखी सेन समजाय छांनी बोली नाही बांनी तब मनही में जानी हे । प्रेममें मगन भइ तबही बलाइ लइ मनकी जु आघी गइ वारी पीवे पानी हे । सखी सब देखी रस रीती अब रेखी जानी जीयमें

विशेषी सोहे सोहे मुसकानी हे । कहे हरीदास तब बेउ बेठी पास करी चरन निवास सब लीला सिंधु सानी हें ॥ ९ ॥ करनो जु कहा कह्यो दरसन समे भयो ठाकुर ऊठे हे अब भोर भयो आवे हे । अेक सखी बोली हों उपाय याको जानती हों मानती हों सोइ उपचार फेरी फावें हे । कानमें पढोगी कछु जाते अे पावेगी सचु मोहनी को मंत्र जाको नाम जु कहावे हे । छांने कह्यो गोकुलेश आय तब उठी बेठी सखी हरीदास पाओ गही शीष नावेहें ॥ १० ॥ अेक अंकवारी भरे अेक रही बाते करे अेक कहे कोउ इहजाने कहा यह रोग हे । अेक कहे हे जु महाफल रसरमन को पुरन रसको दान चहे रस भोग हें । अेक कहे कोउ कहा समुजन हे जु ईह सलोने विरहवीन अलोंनो संज्योग हे । अटपटी बात इह दुखसो परम सुख कहे हरीदास कहा जाने कोउ लागे हे ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥ इह रस वस दरसन को चली । ओढे चादर चारु । वेगी वेगी सब धाइ हे । आइ हे सिंहद्वार ॥ १ ॥ अेसे ही रस वस ते सबही । घर घर तें आवे भक्त अेक अेक की ना लहे । पे सब ही प्रेम आशक्त ॥ २ ॥ कोउ रसकी जलघर धसे । कोउ गली प्रसाद भंडार बहार भीर भरी बहु ठाडत हे नरनार ॥ ३ ॥ तब करुणा नीधी परिताप हर वर वल्लभ उठे जु वेगी । महारस द्वार खोलत वही । दर्शन देनो नीत नेग ॥ ४ ॥ जे जे जे जे जे कहे । चहु ओर सबे नरनारी । पेमाशक्त जु व्यसन ज्युत । अेक ते अेक अपार ॥ ५ ॥ श्री गोकुलेश गोकुलपति ही । श्री गोकुल जीवन प्राण । दारुन दुख चुरन कर ही । महासुख दायक निर्वाण ॥ ६ ॥ दीनों दरशजु आति रस बढ्यो हस हस अपार । करी दंडवत जु बलाइ ले आशिष वारंवार ॥ ७ ॥ केली सहित रंग रेली बहु । सुरत चहें न अंग अंग । अति कवनिय विराज ही । छबी के उठत तरंग ॥ ८ ॥ तिलक रेख खंडित कछूक । आरक्त नयन सुखरास । अधर अरुण मुख हास मृदु । कछु आइ सुधी जु विलास ॥ ९ ॥ ओर सबे कहां लगु कहें । फीरी ग्रंथ बढे विस्तार । विरह तापनी आरत हरी । दर्शन अतिसार ॥ १० ॥ पूर्ववत दांत्योंणीक करी । चरणामृत ले नितनो नेग । सत्वरता देह कृत्य करी चरण पखारे बेठा ॥ ११ ॥ तब भितर पांउधारे प्रभु । तेल लगावन हेत । परम सुंदरवर सोहही । पर वेष्टित भक्त समेत ॥ १२ ॥ तांहा तेल लगायो नेग तीन । प्रथम कह्यो सु प्रकार । फरी आयें बहार सबे । दंडवत करे नर नार्य ॥ १३ ॥ श्री अंग जब झगमग कर ही । ज्योति न वरनीजाय । चाल मधुर अति सोह ही । नाहन के स्थल

जाय ॥ १४ ॥ परम सुंदरवर राज ही । ज्रों नित नेग त्यां नाही । भगवदी सृष्टि दरशन को [illegible]
कह्यो हु न अघाय ।। १५ ॥ उठे नाही अंग वस्त्र करी । धरी धोती नीत नेग । उपरेना नव [illegible]
के जुरा बांध्यो वेग ॥ १६ ॥ आचमन करी पीढे बेठी के । कीयो सुंदर तिलक सुभाल । [illegible]
पटु ओढी पौंधार ही अवलोकति हें रस बाल ॥ १७ ॥ तब नेंन निरखी सनमान करी हरे [illegible]
संताप । दीवटी ज्योति अति झगमगे मंदिर पौंउधारे आप ॥ १८ ॥ तब जे जे शब्द सुहावने ।
कहे मंगल मंगल रुप । हरीदास ओवार ही । पौंधारे गोकुल भुप ॥ १९ ॥ भगवदी सृष्टि [illegible]
जाय । धाम के काम करे नितनेग । दरशन को फीरी आवनो । मंगला आरती वेग ॥ २० ॥
इह भांति नित्य चरित्र नित । अरु नित प्रति नवरंग । नित्य चरित्रको कही समे समे ज्यों
प्रसंग ॥ २१ ॥ नीत नीत लीला नीत नइ । अरु नीत नीत नव नव भांत्य । रीतु रीतु के जो
प्रकार बहु । अब कहां लगु करी कहु खांती ॥ २२ ॥ संक्षेपमें अे कछु इक कह्यो । सबवरनं
शके नही कोय । यद्यपी कोउ के तो कहे। पे पुरन क्यों हुं न होय ॥ २३ ॥ ताते कछुक कह्यो
थोर में विस्तार । ज्यों ज्यों गेहरे पेठ ही । अे त्यों त्योंह अधिक अपार ॥ २४ ॥ भगवदी सृष्टि
को प्रारथो । क्षमा जु मोही करनी । छंद प्रवंध जानो नही । अनुचित उचित जो होय ॥ २५ ॥
ताते विनती करी कह्यो माग्यो अे तुम पास । अति आदर ज्युत अे पढे गाव हुं करे
हरीदास ॥ २६ ॥ अब आगे वसंत वर्णन कहो । ज्यों खट रीतु में रीतु राज । ज्यांहां सबरस
संजोग । भोग ज्युत लीला रस जु समाज ॥ २७ ॥

। इति श्री भक्त सुख मंजरी ।

। नित्य चरित्र प्रेम विरह वरणनो नाम । अेकादश प्रभाव ॥ ११ ॥ संपूर्ण ॥

श्री रमणेशो जयती

। भक्त सुख मंजरी । प्रभाव । १२ । बारमो ।

। अथ रीतुराज वरणनं ।

। धुमारा । राग गोडी ।

आयो माधो मास सबनी मन बढ्यो आनंद । फेली हे ललीतागन ज्यांह त्यांहा प्रफुलीत वृंद ॥ १ ॥ फुले हे द्रुम वेली । लत्ता लता प्रतिजाय । प्रफुलीत कुसुम सुवास सहित अंग अंग लपटाय ॥ २ ॥ प्रगट पलास मंजरी । फूले सब उद्याम । फूले वन उपवन कुसुमा कर नवल अभिराम ॥ ३ ॥ फूले हे सहकार । बडे सब मोरे संग । फूली सब ते छोटी । सीरसो अपने रंग ॥ ४ ॥ फूले कमल विमल जल । मत्त मधुप के टोल । लपटे पीत पराग ही । जांहा तहां कीरत हे लोल ॥ ५ ॥ फूले खंजन दंपति । नाचत नाना रंग । फूले सारस हंस अरु । चकवा चकइ संग ॥ ६ ॥ फूले कोकिल कीर । करत कल नाना नाद । माधो माही मंडन भयो । सबके मन आल्हाद ॥ ७ ॥ नाचत मोर कपोत । ज्यु फुले अंग न समात । फूले सकल विहंगम । जड जंगम सब ज्योति ॥ ८ ॥ पवन पराग सहित फूल्यो । जु फीरे सबगाम । उगर नगर पूर पट्टन । अरु नव ज्यों गांव ॥ ९ ॥ मन भायो माधो नृत्य भयो । अे सुनावत बात । सुनत रस लवन अति आनंद । फूले हे सब गात ॥ १० ॥ फूली कुल वधुनारी । अटारी चढी गावे हे गीत । आरज पथ मरजाद छारी कुलकी रीती ॥ ११ ॥ आलंबन उदिपन प्रगटे अति अभिराम । पंडित शठ फूले नरनारी । ठाव ही ठाम ॥ १२ ॥ फूल्यो हे सब दीप । कहां लगु कहु विस्तार । प्रबल प्रचंड महीपति । माधो होत ही बार ॥ १३ ॥ श्वेत सबको श्रींगार सोहे । व्रजमंडल धाम । ताको परम सुहाग । ज्यु फूल्यो गोकुलगाम ॥ १४ ॥ खटरीतु बारह मास । वसंत जुत सेवोही पास । सो महाराज गोकुलपति । सब वरनो हरीदास ॥ १५ ॥

॥ राग वसंत ॥

श्री गोकुलेश सुंदर वरके ढिंग । वसंत बारहमास । सहज सुगंध सदा निश दिन प्रति । मृगमद बीरी बरास ॥ १ ॥ चोवा अगर गुलाब अत्तर ज्युत । चंदन अबीर सुवास । प्रफुलीत भक्त समुह

सुशोभित । भ्राजत प्रतिदीन पास ॥ २ ॥ नव तरुणी नव वेली बिराजे । नगनी जटित बहु फुल । छोटे बडे भांति भांतिनी दे । पेखत प्रभु अनुकुल ॥ ३ ॥ कामीनी केली कल्लोल । उलोलति वसन विविध राजे । कूच फल फलित । मिलीत अति अति प्रित । सखीजन संग समाजे ॥ ४ ॥ घीरी आइ खेलन के कारणे । बाजे बहु वीधी बाजे । कंकन किंकिनी अरु नूपूर धूनी बिछूआं गन बहु गाजे ॥ ५ ॥ भरी लाइ अनुराग बहु बंग नेन अनी पीचकारी । तकी तकी डारती ओट जो दि जुरी । रंग मच्यो अति भारी ॥ ६ ॥ नायक निपूण निरंतर रसवश प्रगट प्रिती प्रतिपाल । अति अनुराग अरुण द्रीग जोरत बालनी भर गुलाल ॥ ७ ॥ क्यों बरनो आवे अद्‌भूत रस । सरीता पुर बढी । गावति जश हरीदास सखीजन अतिरस अटनी चढी ॥ ८ ॥ **इति वसंत** । नव नागर नवरंग रंगीलो । नव नव रुचीजु खिलावे हे आज । नव नायक नव भांति बिराजे । गोकुलेश महाराज ॥ १ ॥ नव केशर रंग नवल कुम कुम । नवल अरगजा नवल सु साज । नवल अबीर सुवास नये रंग रंग । नवल गुलाल जु नवल समाज ॥ २ ॥ नव नागरी नव नवल रुप नव भूषण बसन धरे नव बाल । नव जोबन नव नवल नेह अति । अंजन नेंन तिलक भाल ॥ ३ ॥ नवल नाह नव वल्लभ के हीत । सोंज नवल ले चली भांति । नवल वसंत पंचमी को दिन । वागे धरावती हे नव भांति ॥ ४ ॥ नव नव रंग भरती जु नवल रस । नव कुम कुम नव अबीर गुलाल । नवल अरगजा डारी नवल अंग । नवल अनंग भरी व्रजबाल ॥ ५ ॥ नव नव रुची छीरकती नव नागरी । नवल भांति नव नव अनुराग । नवल नवल बढी प्रिती परस्पर । नव नव रंग बढ्यो जु सुहाग ॥ ६ ॥ नवल कुसुमकी माल धरावती । नवल थाक राजत नवरंग । नव नव शोभा निरखी भक्त सब । फूले हे जु नवल अंग संग ॥ ७ ॥ नवल आरती साजी सोहे कर । नवल चित्र नव ज्योति प्रकाश । नव नायेका ओवारती आरती । जे जे शब्द नवल हरीदास ॥ ८ ॥ **धन्याशी राग** । श्री गोकुलनायक रसभरे खेलन हीत पांउधारे भूप । मदभरे मनमें बहु रीतु वसंत आगम सुखरुप ॥ १ ॥ ताल झांझ वीणा मृदंग डफ सारंगी मधुरे सुरतान । कर चूटकी दे दे गावे । गुणीजन री मनोहर गान ॥ २ ॥ सुणी सुंदरी सनमुख आवे । गावेरी पद धोल धमार । कोउ अटारी चढी देखे ही काहुको नही देह संभार ॥ ३ ॥ घर घर सब तोरण राजे । कदली खंभ रुपे हे द्वार । गली गुलाल अबीरसो । चिचित्र चित्र रचे जु अपार ॥ ४ ॥ हवेली सब रंगी रंगी रही । फुलेरी नवनायक नेह । पाट बिछावे प्रेमसे । पांउधारे

गोकुलपति गेह ॥ ५ ॥ मंगल कळश युगल राजे । किनेरी सोलह श्रृंगार । मृगनेंनी मन मोहीओ । निरखेरी विठलेशकुमार ॥ ६ ॥ पांउधारे गादी तकीया तांहां । जे जे शब्द मनोहर भांत्य । घेरी लीये नागर नारी मीली । ठाडी भइ ठोर बहु पांती ॥ ७ ॥ वागे वस न घरी वही । छीर कें री केसर रंग छींट । चोवा बिंदी करी तबे । नीरखे री नाह भरी मीट ॥ ८ ॥ अबीर गुलाल उडावही भावेरी यह खेल । रसाल माल धरावे पुष्पकी । अति सौभग सुंदर ब्रजबाल ॥ ९ ॥ आरती मोतीनी अति राजे । रंग रंग चित्र चोक बहु भांत्य । दीपक ज्योति प्रगट करी । राजत रूचीर रत्न की पांत्य ॥ १० ॥ तिलक भाल करीके पाछें । कर कमलनी दे बीरा सार । आरती वारती नागरी । शोभा नीरखीत मूरछीत मार ॥ ११ ॥ जे जे जे कही जश बोले । खोंले हे भीरत के द्वार । तांहां प्रभुको पधराय के । भोग राग रंग रस अपार ॥ १२ ॥ मनोरथ सब पुरण कीने भीने हे रस रास तरंग । तब बाहेर दर्शन दीनो । कीनो हे मन भायो रंग ॥ १३ ॥ प्रफूलीत परम प्रमोद प्रीया गण । घेरी लीये नायक रसराती । विठ्ठल रस सागर नागर गुण आगर प्रतिपालक प्रिती ॥ १४ ॥ लावाण्यामृत विनय वचन कही । आज्ञा मागी पुरणकाम । तब फीरी बाहेर आयके । पांउ धारत निज बेठक धाम ॥ १५ ॥ घेरी घेरी घर घर द्वारे । रोकत हे रसवश रस रास । मन भाये मनोरथ करे । सब सबके मनही हुल्लास ॥ १६ ॥ फीरी गावत आवत भावत । नव नागर हो नव नारी समाज । छांडी संकुच सब गावही । भावेरी प्रियको इह आज ॥ १७ ॥ मरगजे वसन सुहावने । लागतरी सब परम सुदेश । केसर सुरंग गुलाल अबीरनी । छीरकेरी सोहे मनोहर वेश ॥ १८ ॥ नीज मंदिर फीरी के आये । बाजे बाजत हे बहु भांत्य । उंचे अटारी चढी देखही । भक्त रसीक जनकी सब पांत्य ॥ १९ ॥ नीरखी नीरखी सचु पावही । रग मगे वागे अति रसरास । इह स्वरुप जीयमें वस्यो । लीला सहित कहे हरीदास ॥ २० ॥

॥ राग मारु ॥ हां श्री विठलनंदरी परमावधि आनंद कंदरी । जग जीवन गोकुल चंदरी । रस रसीक प्रेमको कूंदरी । मो मन मोही लयो ॥ १ ॥ ॥ **ध्रुवपद** ॥ केश सुदेश सुहावने । झलके बीच झीणी पाग । तिलक भाल बिराज ही । सुंदर सोहे अनुराग ॥ २ ॥ ललित लोचन रसभरे । कल कुंडल झलके कान । अधर अरुण रगमगे । मुख मधुरी मोहन बानी । मो ॥ ॥ ३ ॥ केसरी चोली चोलना । ताउ पेर्य सेत सोहाय । पीत आभा प्रतिबिंबही । रहे सबके मन

लोभाय ॥ मो ॥ ॥ ४ ॥ पटको कटी लपेट ही । छबी साटक लेउ संग । उपरेना उपर फल्यो । किनारी केसर रंग ॥ मो ॥ । ५ । कुसम माल सुवाहनी । विच थाक नाना भांति । इह शोभा निरखे नायका । ठाडी अटा चढी पांति ॥ मो ॥ ॥ ६ ॥ रंग रंग अबीर उडावही । चहु पास जुथ समाज । हो हो हो करी गावही । छूटी कुलकी सब लाज । मो ॥ ७ ॥ ताल पखवाज बाज ही । विना सोहे मुखचंग । डफ झांझ बजावे ढोलकी । सारंगी तान तरंग ॥ मो ॥ ॥ ८ ॥ सांग वनी बनी आवही । नरनारी नीके बहुरुप । आंगन में पेहे पटनचें । बेठकमें गोकुलभूप। मो ॥ ९ ॥ आरती आणी साजीके । मन फुले हु बहु फुल । ज्योति चहुदीश झगमगे । त्रिया ठाडी पीया अनुकुल । मो ॥ १० ॥ तिलक करी बीरा दे तब आरती वारती नारी । हरीदास शोभा क्यों कहे । अे लीला सिंधु अपार । मो ॥ ११ ॥ संपूर्ण ।

॥ राग गौडी ॥

फेल्यो अति फागुन मागुन फगुवा दिन आयो । खेलत फाग रसाल । बाल सबहीन मन भयो ॥ १ ॥ अपने अपने टोल । मीले सब सखी सुजाती । वय समान समशील । सबे जोवन मदमाती ॥ २ ॥ परम कवनी रवनी सब सुंदर रुप बिराजे । नाना वरन वस्त्र पहेरे । अति अदभूत भ्राजे ॥ ३ ॥ लेहें गान नव नव रंग । चुनाव बहुत अति गाढे । झीनी सारीमे झलकत । नव नव रुचि बाढे ॥ ४ ॥ अंगीआ अतलस वरन वर । सोहती छबी न्यारी । मंडनी नाना रंग अरु सोहती जरतारी ॥ ५ ॥ कबही केश समारी बेनी । ललके अति झलके । मांग भरी वदन उपर मुक्ता बहु चलके ॥ ६ ॥ शीश फूल नग खचित रचित झलकत अति भारी । करन फूलकी ज्योति जटित टेडी मनुहारी ॥ ७ ॥ भाल तिलक केशर रंग । बीच मृग मदकी टीकी । भ्रोंय ज्युगल अणीयारी । कारी लागती नीकी ॥ ८ ॥ नेंना नव नव रंग धरत जु करत मन भायो। अति सोहत मोहत रंजन अंजन जु सुहाय ॥ ९ ॥ नासा नकवेसर धरी । मोती विमल बिराजे । जटित नंग जग मगत । शींगार रुचिर प्रिय काजे ॥ १० ॥ मुख विलास मृदुहास । सुवास जु बीरा खाये । बोलत फूल झरत । आरक्त अधर जु सुहाये ॥ ११ ॥ चिबुक चारु कवनीय । रवनी बिंदी अतिकारी । गोरे गात रुचीर छोटी लागत मनुहारी ॥ १२ ॥ कंठ जंगाली पोति । तेरे मोतीन की दुलरी । ताके तरहर सोहत । जटित झगमगे तिलरी ॥ १३ ॥ अति ही उरोज

उतंग उपर । सोहे मोहन माल । पान पदक झलकत कुच । बीच राजत जु रसाल ॥ १४ ॥ कर कमलनी सोहे चारु । चारु चुरी अति गाडी । पीछे हाटककी झलकत । अति शोभा बाढी ॥ १५ ॥ आगे कंकन दो होरे । सोहे झगमग करही । अंगुठी आरसी जटीत मुदरी मनहर ही ॥ १६ ॥ उदर नाभी कटी छीना नितंब जु प्रीत बिराजे । जंधालंक सहित गुलफनी पर जे हरी आजे ॥ १७ ॥ अंगुठे अनवटा अंगुरीनी बिछु आगन गाजे । सादा सोहे शींगार । मीली सब सखी समाजे ॥ १८ ॥ गावती आवती भावती । मागन फगुवा काजे । राग रंग बहु तान तार ज्युत बिछुआ बाजे ॥ १९ ॥ लीने अबीर गुलाब फाग खेलन रंग राती । वीधीनीमे न समाती । आइ मंदिर मदमाती ॥ २० ॥ बेठे वल्लभभुप । सुरुप अनुप निहारे । लावण्य ललित मनोहर । देखी अपन पो वारे ॥ २१ ॥ लींरे बागे बने जु भाल तिलक अति राजे । कुंडल झलकत लोल कपोलनी आभा भ्राजे ॥ २२ ॥ भ्रकुटी कुटील अणीयारी नेन चपल गती भारी । बंक विलोकनी बान कटाक्ष करत मनुहारी ॥ २३ ॥ पान भरे हे गाल लाल अति मधुर जु सोहे । मुख विलास मृदुहास देखी मन मथ मन मोहे ॥ २४ ॥ क्यों करी बरनो रुप भूप श्री गोकुल नाथे । फगुवा मागन आइसु गावत ही हे गुण गाथे ॥ २५ ॥ तान मान बंधान सबे जु मिले सुर गावे । बीच बीच मीठी गारी । रसीक वल्लभ मन भावे ॥ २६ ॥ आगन में बाजे वाजत अति परम सुहाये । डफ ढोलकी मुख चंग छंद नाना सुर भायो ॥ २७ ॥ सारंगी विणा जु मधुर मुरली बीच बाजे । मधुर गान मनहरत मधुर सुर सखी समाजे ॥ २८ ॥ फगुवा को दिन आम लाज कछु रहतीजु नाही । श्री गोकुलपति पकरे सब देखत गही चाहे ॥ २९ ॥ फगुवा मागत हे कुलकी सब लाज छोडी । उत्थापनको समय जु भीर अपरमीत बाढी ॥ ३० ॥ भरती अबीर गुलाल धरी घीर ठाडी आगे । परम सुंदरवर रसीक वल्लभपे फगुवा मागे ॥ ३१ ॥ नाहनको जु अवेर होत कही मांगी मिठाइ । सरस वचन बांनी मधुरी सबके मन भाइ ॥ ३२ ॥ भरी भरी गोद प्रसाद मिठाइ मेवा दीनो । उठे जु तब महाराज रसीक रसवस रंग भीने ॥ ३३ ॥ दे आशिष मन भाइ वारी अपनपो वारे । जे जे शब्द मनोहर कही हरीदास उच्चारे ॥ ३४ ॥ संपूर्ण ।

૨।૭।- શ્રાવણ આયો સોહામણો રં।

॥ फगु दीओ की धमार ॥ राग गोडी ॥

॥ **परवे प्रथम प्रमोद** ॥ प्रियागण राचे हो । श्री मुख निरखे नेह । काम अंग अंग नाचे ॥ १ ॥ दुजे दुनो रंग । संग मीली मीली आवे । गावे रंग रंग गीत । प्रिती ज्युत प्रिया भावे ॥ २ ।। त्रीज त्रिया तकी तानती । भोंह कमान कसे । नेंन बाण अणीयारे । लागत नाह हसे ॥ ३ ॥ चोथी चतुरवर चीतवन । चपल नेंन जोरे । चतुर सखी चितवन चीतवीत तिनके चोरे ॥ ४ ॥ पांच्यो परम प्रत्तिण । प्रेमदा धीरी आइ । प्राणव्रिद गोकुलेश । रसीकन के मन भाइ ॥ ५ ॥ छठ्ठी छबीले छेलको । छीरकत छबी बाढी । केसर सुरंग अबीर । भरती सनमुख ठाडी ॥ ६ ॥ सात सुंदर त्यों यों सुंदर साज । बाजे बहु बाजें । ढोल मृदंग शहेनाइ । नगारे धन गाजे ॥ ७ ॥ आठ्यो यों अति रस मत । आंगन भीर भरी । नाचत गावत आवत । नाना भेख धरी ॥ ८ ॥ नौमी नवनवरंग । नव नागर नारी । सनमुख रही सब खेलत । रंग मच्यो अतिभारी ॥ ९ ॥ यसमी दीनो दान । दंपति रस राचे । अनिरवचनीय रस रास । कोक कला नाचे ॥ १० ॥ अेकादशी अंग राग । अंग सुगंध भरे । फूल गुलालकी माल । श्रीकर आणी धरे ॥ ११ ॥ द्वादशी दुनो खेल । दिन दिन रंग बढे । वागे वसन विचित्र । भुषण ओपचढे ॥ १२ ॥ तेरस ते रस रास । गोकुल गाजी रह्यो । गोकुलपति संग खेलत । खेल न जात कह्यो ॥ १३ ॥ चौदश चतुर चतुर मिली । वल्लभ घेरी लीयो । केसर अबीर गुलाल । छीरकी झाकझोल कीओ ॥ १४ ॥ पून्यो परि पुरणरस । हो हो हो होरी । गोकुलेश संग खेले हे । गोकुल की गोरी ॥ १५ ॥ परवे प्रगट श्री विठ्ठलको । जश जगत छायो । धर धर गाम ही गाम । डोल ही डोल भयो ॥ १६ ।। दुजे नाही वसन पहेरे । सब नये नये । हरीदास कहे क्यों जाय । रसीक ज्यों दान दीअे ॥ १७ ॥ संपूर्ण ।

॥ **दोहा** ॥ वसंत वर्णन क्यों करी सकों । नीत नीत नव अनुराग । भावही वसंत खेलाव ही । नीत्य गावे नव नव फाग ॥ १ ॥ वागे वसन धरावही । नित्य नित्य नवरंग । झोरी भरी भरी के गुलाल । सब खेलत वल्लभ संग ॥ २ ॥ प्रभु आप आयके खेल ही । श्रीनाथजी मंदिर माहां । बाल सब सनमुख रहे । खेल मच्यो बहु ताहां ॥ ३ ॥ भीर बहुत तब तांहा भरी । आंगनमां न समाय । रसिक भक्त संग राज ही । मुडेरी छजे सोहाय ॥ १४ ॥ नवल रसीकवर खेल ही ।

सब बालक के संग । बहु बेटी ओट जु देखही । नवल भांत्य नवरंग ॥ ५ ॥ गुलाल गुलफनी लगु चढ्यो । बढ्यो जु अपार । सब ही गाम उलटी आयो तहां । काहु देह नहि संभार ॥ ६ ॥ गुलाल उठ्यो भंडार ते सब । गांव में पायो सोय । उमगे आप जु खेलही । देखी थकित सब कोय ॥ ७ ॥ मीरत भोग आयो तबे । सो त्यों खेल जु सोय । जाको अनुभव सो लहे । मुख वरने क्यों करी कोय ॥ ८ ॥ सुंदरवर गोकुलपति ही । रसरंग भरे अति सोहे । सो कछु अब वर्णन कहों । ज्यों देखी भक्त सब मोही ॥ ९ ॥

॥ **सवैया** ॥ लाल लाल राजत हे वल्लभ रसाल लाल अति गति मन खेल खेले रस रंग में । निरखती हे जु बाल भाल लाल गाल लाल सोहत गोकुलपाल लाल सब अंग में । फबी हें जु टेढी पाग धसी जु दछीन भाग । भरे अनुराग फाग खले हे सु सगंमे चोलणा सुरंग चार फेंटा उपरेना सार मोहे कोटिमार हरीदास मंगमें । १ । ડોલ ઉત્સવ (માં) હોદાના શગામાં ગાવાનુ

॥ **दोहा** ॥ डेढ मास पर्यंत यों । किर्तन नवल धमार । ताल परवावज वीणा सहित । करे प्रात सांजे द्वे वार ॥ १ ॥ फीरी रात प्रभु बेठक मांहा । नित्य किंतन करे ही निज भक्त । पहेरामणी प्रभुको करे । बालक सहित अनुरक्त ॥ २ ॥ श्री गोकुलेश रस रग मगे । निज भक्त सबनीं सुख देत । नव नागरी गुण आगरी । सों दीनुं दीनुं अधिक जु हेत ॥ ३ ॥ काम केली रंग रेली बहु । बहेजु रसकी धार । सो सब कहां लगु कही शके । अति अद्‌भूत जु प्रकार ॥ ४ ॥ यो रस वस मगन ज्युत । आयो हे दिन डोल । रुचि रुचि के अति रुचिर । करी समार्या डोल अमोल ॥ ५ ॥ धूप दीप करी डोल को । चंदन चरच्यो सब ठोर । भोग समर्थे प्रथम तांहां । बहु प्रकार कीये ओर ॥ ६ ॥ उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र । बेठाय नाथ जु त्यांहां । श्री गोपाल विठ्ठलराय ज्युत । आनंद बढ्यो मनमांहां ॥ ७ ॥ श्री वहुजी आजु सब आइ हे । वहु बेटी करी श्रींगार । भुषण वस्त्र पहेरे नये । शोभा बढी अपार ॥ ८ ॥ श्रीनाथजी को छीरक ही । केसर चोवा सब अंग । अबीर अति आमोद ज्युत । गुलाल भरे नवरंग ॥ ९ ॥ भोग समर्थे अति रुचिर । नाना भांति पकवान । मिठाइ मेवा ओर सबे कहा लगु कहु प्रमान ॥ १० ॥ यों भोग च्चार धरे स्नेह जुत । आरती जु चार हु वार । चार हु वेर छीरके सुगंध । चोवा केसर जो अपार ॥ ११ ॥ गुलाब अबीर उडाव ही । धोंधरी करी अति सोही । तब भरी पीचकारी छीरक

ही । मन इच्छीत रंग होही ॥ १२ ॥ आंगन मांह किंतन करही । धमार जु मीठे बोले । महावनीआ गाये सबही । अति रसभर कल्लोल ॥ १३ ॥ ताल परववाज बाजे ही । वीणा वेणु मुख चंग । झांझ झमक डफ ढोलकी । शहेनाइ नाना तरंग ॥ १४ ॥ छजे युवती सब सोहही । करी करी श्रींगार अमोल । श्री महाप्रभु ज्युत दर्शन करे । सोहे दक्षिणा मि मुख डोल ॥ १५ ॥ तृतिय भोग नत्रक्ष उतरा । फाल्गुनीमें होय । सिध्धांत अे समुजो सबे । आद्यंत जब होय न होय ॥ १६ ॥ चोथो भाग भयो तबही । श्री गोपाल मन रंग । श्री महाप्रभुको छरक ही । छबी के उठत तरंग ॥ १७ ॥ तब महा मोद आनंद ज्युत । प्रभु अति रुचि छीरके आप । श्री गोपाल विठ्ठलराय आदि । वहु बेटीन के हरे ताप ॥ १८ ॥ भरी भरी पीचकारी डारही । प्रफुलीत मन उल्लास । गुलाल भरे मनमोद ज्युत । चोवा अबीर सुवास ॥ १९ ॥ तब आरती वारे प्रेम ज्युत । नमन करे ज्यों नेग । नाथजु आसन बेठाय के राज भोग वेग । २० । डोल खेल रस रीत बहु । क्यों करी शकुं विस्तार । ताते कछु संक्षेपमें । कह्यो जु यह प्रकार । २१ । वसंत ते आरंभी के । अेह कह्यो डोल रस रास । थोडे में समजो बहुत । करी दंडवत कहे हरीदास ॥ २२ ॥ अब आगे ओर प्रकार कहु । सो सुनो जु मारग रीत । अपने अपने गेह सब । झुलावे डोल अति प्रित ॥ २३ ॥ सेवा श्री चरणाविंद जो । अति ही मनोहर रुप । सानुभाव सर्वत्र प्रेमवश । बेठे गोकुलभुप ॥ २४ ॥ देश देश सब गाम गाम । अरु भवन भवन प्रति डोल । श्री गोकुलपति बेठही अति । आनंद बढे कल्लोल ॥ २५ ॥ सो कछु कहु संक्षेपे अति । अे लीला अमीत अपार । जद्यपि जो बहु ते कहो तउ क्यों हुं न आवे पार ॥ २६ ॥

॥ पद ॥ राग वसंत ॥

झुलत डोल श्री वल्लभ वल्लभ । जग वल्लभ सुखरास । जोइ जोइ कीयो करत हे आगे । भक्त हेत सुं प्रकाश ॥ १ ॥ बनी बनी आइ नवल नवनागरी । वरन वरन रंग सारी । चोली चोवा बिंदी राजे । अरु मंडनी जरतारी ॥ २ ॥ नाना भुषण नंगनी जटित बहु । सोहद सुखद श्रींगार । अंजन तिलक जु चिबुक चारु रुचि । सुवन सुशोभित हार ॥ ३ ॥ अति उत्तंग कुच नव विधि राजत । उदर नाभी कटि छीन । सहज ही नमीत अमित शोभाभर । जुग नितंब बहु त्रीन ॥ ४ ॥ परम कवनीय नव तरुणी बिराजे । वरनों क्यों करी रुप । अपने अपने भाव

झुलावती । प्रफुलीत गोकुलभूप ॥ ५ ॥ केसर मृगमद मथी गुलाल ज्युत । छीरकत भरी पीचकारी । चोवा चंदन अरु अबीर बहु । सुरंग गुलाल सुधारी ॥ ६ ॥ बाजत सारंगी सुर झीणे । डफ बीना मुखचंग । अरु करतार पखावज आवज । उपजत तान तरंग ॥ ७ ॥ नव नागर को नीरखी नीरखी । सब फुलती विविध प्रकार । झुलावती रुची अपनी अपनी । हरीदास मुच्छी रह्यों मारी ॥ ८ ॥ संपूर्ण ।

॥ दोहा ॥

भोग राग बहु भांति को धरे । बीरा सहित बरास । आरती उतारे प्रेम ज्युत । सब दंडवत करे हरीदास ॥ १ ॥ फीरी यह प्रकार कहां लगु कहे । ग्रंथ बढे जु अपार । थोडे में समजु सबे । कह्यो वसंत अरु डोल प्रकार ॥ २ ॥ अब आगे श्री आचार्यजीको जन्म दिवस जुसार । कहु इच्छा वससों कहों । ज्यों महाप्रभु को मोद अपार ॥ ३ ॥

। इति श्री भक्त सुख मंजरी ।

। वसंत वरणनो नाम । द्वादश प्रभाव ॥ १२ ॥ संपूर्ण ॥

। अथ आचार्य जुको जन्म ओच्छव । प्रभाव १३ ।

।। सोरठा ।। श्री महाप्रभु उछाह अति । उठे ज्युहे बडी रात के । जन्म दिवस शुभ जाणी प्रागट्य श्री आचार्यको ॥ १ ॥ किने तिन के नेग । अति सत्वरता सहित सब । नाही प्रकार वेगी । जे जे कही भक्त उवारे वेगी ॥ २ ॥ भीतर पहोंचे रंग । पढी प्रबोध जगावेनाथ ज्यु । श्री ठकुराणी ज्यु संग । श्री गुंसाइ ज्यु सहित सब ॥ ३ ॥ बाल भोग धर्यासार । सामग्री उत्तम सबे । आचार्य उक्त प्रकार । सब कहांलो कही सको ॥ ४ ॥ समे भये सरे भोग बडे ढाग नोले तबे । अब आये भगवदी लोग । मंगल आरती वेग करी ॥ ५ ॥ तब कीने हे अभ्यंग । चंपेलो अति ही सुवास ज्यो मृगमद सब कपुर सुसंग । चंदन केसर बहु करी ॥ ६ ॥ स्नान कराये वेगी । नाथ जुं गुंसाइ ज्यु सव सहित । कीने जु सदाके नेग । भूषण वस्त्र श्रींगार बहुत ॥ ७ ॥ धरी भोग धरे आप । जुमनाजी नाह नाही तही । टारे हे परीताप । दरर्शन दीनो भक्त को ॥ ८ ॥ नीज बेठक में आय । कीये नितके नेग सब । तब और मंदिरमां जाय । दरशन करे पहोंचे तबही ॥ ९ ॥ सब प्रथम कह्यो विस्तार । फीरी फीरी सब कहा कहो । कछुक रह्यो अे प्रकार प्रभु जमुनाजी पौंधारी हे ॥ १० ॥ नित प्रित की जोवांनी वहुजी पेडे मले । सबहीन की तोरी कानी । नेंन मिले अकुलाये के ॥ ११ ॥ प्रगट परस्पर प्रीति । कहां लगु सो छानी रहे । अेक छीनु पे रसरीति । उमंगी चाले रस धार ॥ १२ ॥ निरखे भगवदी साथ । अति प्रसन्न मन होय । तब रीझी रीझी धुनी माथ । देख्यो प्रेम प्रकार ज्यों ॥ १३ ॥ जमुनाजी पहोंचे जाय पहोंचे जाय । नित के नेगजु नाहे ही । तांहां हांडा भरी के लाय । केसर सुवास शींगडार ही ॥ १४ ॥ तब जै जै कहे सब भक्त अति प्रफुलित मनमोदज्युत । जमुनांजी भइ आरकत । सुवास जुं फेली रह्यो बहु ॥ १५ ॥ नित्य नेग त्यां नाहाय । उपकंठे आये फीरी । अंग वस्त्र कीयो जु सुभाय । धोती उपरेणा धरे ॥ १६ ॥ केसरी किनारी सोहे । अति सुंदर गहेरी रंगी । सो प्रथम समर्पी ज्यां ही । भगवदी परम मन भावते ॥ १७ ॥ आचमन कीने नीत्य नेग । पीढे बेठी जु तिलक करो । संध्या जु करी दोउ वेग । प्रात जु अरु मध्यानकी ॥ १८ ॥ सत्वर चाल चाले सुहाइ । फीरी मंदिर पांउधारे ही । दोरी दोरी मिले धाय । संग पहोंची कोउ ना सके ॥ १९ ॥ पेंडे मिले हे जु जोय । सो जब जै जै जै करे । सचु पावे सब कोय श्री गोकुलपति देखीके ॥ २० ॥ फीरी आये बेठक सार । शंख चक्र धरी होम करी मंदिर पांउधारे अपार ।

पार कोउ जाने नहि । २१ । नित भोग धरे श्रृंगार । आरती दीखावे नाथको । फीरी आपनुं चितवे सार । सो निरखे भगवदी सृष्टि सब ॥ २२ ॥ तब श्रीकर ओठी अपार । आरती करी बहु सृष्टि जरी । वहु बेटी तने निहारी । भगवदी ओर चितयो तबे ॥ २३ ।। जे जे कार संज्युक्त । भगवदी सबे दंडवत करे । इकइकते अनुरक्त । मन धर्म क्यों करी कही शको ॥ २४ ॥ खिलोना खिलावे आप । प्रथम कही सब भांतिको । भक्त उपजावे ताप । आसन भेद रचे बहु ॥ २५ ।। कीर्तन करही अपार । महावनीआ गाओ सबे । जन्म वेली अतिसार । ओर जो पद प्रागट्य के ॥ २६ ॥ भोग सबे भयो नाथ । श्रीमुख करी आज्ञा करे । सो सुनी के सब साथ । बहु तकतो चालतो भयो ॥ २७ ॥ रहे रसीक जो सृष्टि । ता सों करकी सेन करी । जुरे जु इन सो दृष्टि । अटारी तें सब हसी चले ॥ २८ ॥ भीतर आयो भोग । नाना विधी खटरस सबही । सरवरी सब संजोग । क्यां व्यंजन बरनो अबे ॥ २९ ॥ राज भोग सर्यो नेग । तब फरार सब आवही । सामग्री भइ विवेक । भांत्य भांत्यकी अति रुचिर ॥ ३० ॥ सो कहां लगु गीनो प्रकार । सिंधोरे के बहु करे । ओक ओक ते अतिसार । भीतरीयानी वेग धरे ॥ ३१ ॥

चोपाइ ॥ कहे रबरी अति सुंदर कीनी फूली बहुत पगीरस भीनी अति उज्वल कोमल सेव करीहे पागी बहुत मिठाइ भरी हे ॥ १ ॥ लुचई पुरी भरी बुरासो । सीरा अति कोमल सुंदर त्यां । रोटी भरी सोंधे त्यों चुपरी । फूली फूली सब भइ जु दुपरी ॥२ ॥ लपटी करी बहुत गुरमेली । अति उजवल कोरी गुर भेली । सामग्री सीधो हे की सब । सुरण अरड़ मेले कहु सब ॥ ३ ।। पूरी कोमल करीजु मोंगभरी । फली बहुत अेक इह पर धरी । मोंन भरी मथी कचे पकोरे । फूली फुली के भये गिंदोरे ॥ ४ ॥ जीरा के जु मठा बोरी डारे । थोडी कराड़ मठामे न्यारे । सुरण के ज्यु बरा बहु कीने । स्वादजु रुचिर मीरच कछु दीने ॥ ५ ।। ओर करी सुरण को आछे । सोंधे धीमे मूज्यो पाछे । इह प्रकार अरइ बहु कीनी । पीडारु भुजी बुरामे दीनी ॥ ६ ॥ शकर कंद कीने जु रताळु । अरु धीमे भूंज्यो पछे जु कचालु ओर कंद गारारी कीने भांति भांति के बहुत नवीने ॥ ७ ॥ कोउ उस अे कोउ ओरा कीने । कोउ भुंजे कोउ तरी लीने । जाको जो संजोग जु होइ । सो सो भांति करे सब सोड़ ॥ ८ ॥ कंद मुल कछु कहे जुअे सब ॥ याके आंके कहु मेवा अली । पागे बरा चीरोजी के करी । ओर चिरोजी भुंजी पागीधरी ॥ ९ ।। भुंजी चिरोजी बाटी समारी । बाटा कीनो अति मनुहारी । बुरामेली जु लड्डुआ कीने । कपुर सुवासित अतिही नवीने ॥ १० ॥ कछु चिरोजी बुरा अेसेही । तीलोजी मीठी धरीजु तेसेंदी ।

पीस्तां भली भ्रांतिजी समारे । कछु भुंजे कछु असेंही धारे ॥ ११ ॥ कातडी बकाम ... समारी । छोटे टु कजो मीसरी न्यारी । अखरोट अरु पिंड खजूर समारे । सलोनी ... ओर सुहारे ॥ १२ ॥ दोउ मीज पागी लड्डुआ जु समारे । खरबुजा पेंडा के न्यारे । अति सुंदर ... रुचिकारी । पालक आकी भांति जुन्यारी ॥ १३ ॥ बेदानी-की, समी सजी बिलाती । ओर द्राक्ष्मन् काजु सुहाती । पाके के राइ खस माटे । मेवा हरे कछुक कहु न्यारे । अनार खरबुजा जु बिलाती । सुंदर सेवे ओर नासपति । कमरख तुतरु नारंगी बहु ज्यां बुकीजु मिठाइ कहां कहो । अंजीर बनारे अति रुचिकारी । अदभुत मीठे महामनुहारी द्राक्षहरी बेदाना पाकी । क्यों कहो कहो मीठाइ वाकी । अने नास फारसे रुक ढहर । ऐसब मधुरे पाके बढहर । काचे केरा केजु बराकरी । ओर बहुत कीने धीमे तरी ॥ १४ ॥ कछु ओर करी पुरन कीनो । सो संज्यागो भांत्य नवीनो । तरे मखाने पागे न्यारे । अरुभुने शिखर न मे्ंडारे ॥ १५ ॥ आछी भांतिकु वली के थोरे। अति सुधरे जुं दही में बोरे । खीर मकाने की करी आ छे । अरु सिधोरेकी कीनी पाछे ॥ १६ ॥ बुरा डार्यो अति रुचिकारी । मेली कपुर सुवा समारी । खोवा सुंदर बास नवीनो । बुरा कपुर मेली सीध्ध कीनो ॥ १७ ॥ माखन बुरा ओर मलाइ शीखवरनी मीठी अति जु सुहाइ । सुथरो गोरस कह्यो न जाइ । अति मीठो कोमल सुखदइ ॥ १८ ॥ बांध्यो दहीं कछु भांति नवेली । मीसरी बुकी छांनी केमेली । मीसरी मेली दूध कीयो तातो । सोंठी सहित जुअति ही सुहातो ॥ १९ ॥ गुलाब पाक सुवास गुलाबी । ऐलची दाना ओर जु लांबी । रेवरी अंदर की ओर तिनगनी । गंनारो दूधपाक सुबुनी ॥ २० ॥ सीरा अमरस आंमरे को ज्यों । अनेनास अरु आदा केसी । मृगमदमेली बरास सुवास ही । पेंडा पाक ही समीपास ही ॥ २ १ ॥ ओरा कुजो पना बहु कीनो । मीरच कपुर सुवास नवीनो । धरो जु आगे केवल बुरा । सींधालोन न्यारो धरी रुचर ॥ २२ ॥ नाम कुहों लगु कहो विस्तरही । कछुक कहे इच्छा अनुसारही । सामग्री उत्तम जु ननिी । वहु बेटी जु जु प्रेम जुतकीनी ॥ २३ ॥ प्रभु ज्यु आनि आनिके धरही । अति वाछभ्य सहितसब करही । श्री आचार्य जु को जन्मदिनु । वल्लभ ज्युको भावे अनुदिन ॥ २४ ॥ भोग सराय आरतीकीनी । उछव जानी मानी रतिलीनी । भक्त सबे कोउ दरशन पायो । भयो जु अतिसे मनको भायो ॥ २५ ॥ दंडवत करीके प्राण उवारे । फीरी फीरी महाप्रभुको जु निहारे । परदा ढारे बाहर आये । सबकोअ बेठक ही सुहावे ॥ २६ ॥ अन अवसर करी महाप्रभु आ आये । भये भगवदी के मन भायो । चरण क्षालीके पहोंचे जबही । श्री

गोपाल ज्यु आवे तबही ॥ २७ ॥ ले चेडी दी कही भीतर पधराये । भक्त सबनीको अति मन भावे । तबही वेग विठ्ठलराय आये । सब घरके बालक जु बुलाये ॥ २८ ॥ भट भाणेज जमाइ जु आये । श्री गोपाल सबको बेठाये । श्री वहु जु ज्यु परोसत आछे । बेटी ओर पतोउ पाछे ॥ २९ ॥ उत्तम सामग्री रस भोगी । प्रती सबे जुं आरोगी । फीरी फीरी दे जु परोसति नीके । प्रेम सहित अति आनंद जी के ॥ ३० ॥ अति रुचिसों प्रभु सरन लीनो । सबको मन संतोष जु कीनो । ओर सबनको रुचे ज्यु ज्यो ज्यो । सबहीन को जु परोसत सो सो ॥ ३१ ॥ नाम कहां फेरी कहो सब । पहेली ही ज्यो कहे कछु सब । भरी भरी पातरी प्रांत पठायो । परदेशी वैश्नव ज्यांहां आये ॥ ३२ ॥ नामे कहां फेरी फेरी कहो अब । पहेले ही ज्यो कहे कछुक सब । भरी भरी पातरी प्रात पठाये । परदेशी वैश्नव ज्यांहां आये ॥ ३२ ॥ भीतरीया परिचारक सबके । पातरी भरी भरी दीनी सबको । ओर लोक मांगन बहु आवे । सो सब कोउ परी पावे ॥ ३३ ॥ मती कोउ भुले श्री मुख करही । भक्त जु सब मनमें वसी रह ही । फराहार करी पहोंचे जबही । नीत्य नेग प्रभु अचवे तबही ॥ ३४ ॥ वेगे नीज मंदिर में आवे । सनमुख सब कोउ भक्त सुहावे । नीरखी नीरखी सब कोउ सचु पावे । रसीक सबनी मन अति ही सुहावे ॥ ३५ ॥ आज मंगल भये बदाये श्री महाप्रभु महामंदिर आये । जे जे कहे भक्त मन मोहे । गादी तकीया बेठे सोहे ॥ ३६ ॥

॥ छंद ॥ पद्मावती ॥

श्री गोकुलनाथ बालक साथ उछव में आनंद भरे । सब मनमें लोभा बेठके शोभा चितशोभा जनम जुहरे । श्री गोकुल राना निपट संयाना उत्तरोत्तर अति भाव भरे । श्री विठ्ठलनंद आनंद कहांसु छंदा रति रमण परे ॥ १ ॥ **॥ कुंडलीआ ॥**

आनंद होय अपार सबे महावनीया गावे । बाजत ताल पखावज गोकुलनाथ ही नाचे । भावे गोकुल नाथ सुरुप अनुप दीखाव ही । भगवदीय सब सृष्टि भेट पहेरामनी लावही भेट रसाल । सब निरखे गोकुलचंद । हरी दास कहे भुषण वसन तील होय आनंद ॥ १ ॥ भक्त सबे रसमत्त जु गांव गांव ते आवही । पढे जु जश आचार्य को सु प्रभुके मन भावही । भावही जश जु अपार । पितामह को अतिभारी । अति ऐश्वर्यादिक सहित । सुनत प्रभु मनुहारी । मनुहारी जश जग विदित । सुने जु अति अनुरक्त । अति प्रसन्न आनंद ज्युत बेठे ही नीज भक्त ॥ २ ॥

॥ छपैया ॥

कृष्ण आश रुचिराश्री । रुचिर सर्वज्ञ भक्त पर । मायावाद । विहंदी । खंडी पाखंड खंडका । मार्ग सेन मर्जाद हेत बहु ग्रंथ जु कीने । आप भये आचार्य नाम निवेदन कीने । पुहमी प्रगटी प्रगटाय । पुष्टी श्री कृष्ण इव सब करन । हरीदास कहे परिताप हरी पाट बिठाये गिरिधरन ॥ १ ॥ परिक्रमा के व्याज काज नाना बहु कीने । भगवद मंदिर पानन सब नीको अति सुख दीने । पुंडरपुर हर्यो आचार्य चरण धरी । मायावाद खंडी पंडितसुं । ब्रह्मवाद स्थिर व्यापी कीया । हरीदास कही सब राज समामें । कनक स्नान कर दीये ॥ २ ॥ श्री वल्लभाचार्य प्रगटी । पृथ्वी पावन करी । पंथ वल्लभी कहाय स्वतंत्र लीला जु देह धरी । माला वल्लभी नाम मुद्रा वल्लभी कहावे । टीका सुबोधिनी वल्लभी । वल्लभी सर्वोपरी रहे । हरीदास कहां लगु कहे । वल्लभी को सब को चहे ॥ ३ ॥ देश देश सब गाम गाम घर घर प्रति उछव । गोकुलेश मनमोद । वल्लभाचार्य महोच्छव । बालक मन उल्लास । सबे वुह बेटी आ दे । महाप्रभु मन उछाह । सहित भगवदी समाजे । वैशाख कृष्ण एकादशी आचार्य प्रागट्य लीयो । हरीदास मर्जाद छांडी के पुष्टी पंथ जु उजवल कीयो ॥ ४ ॥

॥ सोरठा ॥

इह विधि उछव होय । आचार्य जुको सदा । अति प्रसन्न सब कीयो । दरशन करत जु अति मुदा ॥ १ ॥ तब श्रीमुख कहे प्रभु बात । शेठ पुरुषोत्तम दासकी । चोपरा ताकी जाति ॥ १ ॥ क्षत्री संभावीत जु सरेता ॥ २ ॥ वेह उछव करे भली भांति । श्री आचार्य जु को सदा । तो सामग्री बहु खांत्य करे जु बहु प्रकार की ॥ ३ ॥ प्रति सदा इह बानी । फरार वैश्नवको लीवावतही । आचार्य उछव जानी । प्रेम सहित परोंसे बहुत ॥ ४ ॥ प्रभु प्रसन्नता मानी । भगवदी सबे प्रसन्न । अति उत्सव करे जयमानी । सो कहां लगु फीरी कहे सबे ॥ ५ ॥ सदा नित्य के नेग । महा प्रभु पोढे प्रेम भर । घर लाये भगवदी वेगे । अपने अपने भाव भर ॥ ६ ॥

। इति श्री भक्त सुख मंजरी ।

। श्री वल्लभाचार्य जुको उछव वरणनो नाम । त्रयोदश प्रभाव ॥ १३ ॥ संपूर्ण ॥

श्री रमणेशो जयती

। अथ बाग विहार वरणन । प्रभाव १४ ।

॥ दोहा ॥

अब आगे बाग विहार कहु । ज्यों रसिकजन निरसरास । मन भाये रस विलस ही कही ग्रीष्म समे हरीदास ॥ १ ॥ सो सब कहां लगु कहीं शको । लीला रस जु प्रकार । रसिकवर गोकुल नाथकी । लीला रसिक अपार ॥ २ ॥ श्रीनाथजुकी मंडनी हीत । कुसुम लुनन के राज । बागमें पांउधारे हीं । जुरे भक्त जु समाज ॥ ३ ॥ सो बाग वर्णन सब कहु कछुक । ज्यां हां लीला रसके ठोर । अति रमरणीय आराम स्थल । अन्यत्र कहु नही ओर ॥ ४ ॥ ओर ठोर लौकीक सबे । ज्यांहां प्रभुको नहि भोग । इह आधि दैवीक हे सबे । तरुवेली कुसुम संजोग ॥ ५ ॥ अे वृक्ष सब महाभक्त हैं । लीला सहायके हेत । तरुवेली ये सुख देत हे । वल्लभ वल्लभा समेत ॥ ६ ॥ अरु लीला मध्यपातीं जुथ हे । सब लीला देखत नेंन । नीरखी मन सचु पावही । कछु बोले नही मुख बेन ॥ ७ ॥ यह देखन प्रभु लीला करही । इन ते नांहीन कछु ओर । यह प्रभुको ओर जु करी रहे । कुंज निकुंज ठाडकोर ॥ ८ ॥ यह वृक्ष प्राति ते पाइअे । प्रभु रुचि राखे संकेत । ज्यादिन जोइ नायिका सो । रसिक रमन रस हेत ॥ ९ ॥ उत्कृष्टता तरुवेलीकी कहांलो कहु अपार । अति रसिक भक्त भाग्य रास अे । प्रगटे वृक्ष आकार ॥ १० ॥ श्री महाप्रभु को बाग जानी के । इंहा प्रगट भये आय । ज्यांहां गौकुलेश पांउधारे ही । लीला अर्थ सुभाय ॥ ११ ॥ ताते बाग के वृक्ष वेली सब । अलौकीक समजो अेह ॥ १४ ॥ जाके प्रभु अलौकीक सों । सामग्री अलौकीक जानी । ज्यांहां लौकीक त्यांहां लोकीक सबे । सामग्रीयु हे प्रमान ॥ १५ ॥ अलौकीक आप गोकुलपति ही । सब भक्त अलौकीक देह । बाग अलौकीक यह सदा । तरुवेली अलौकीक अेह ॥ १६ ॥ गोधन यह पशु आदिदे । बागमें जु पक्षीरुप । ए आधि दैविक अलौकीक सबे । सामग्री अनुप ॥ १७ ॥ अब बाग वर्णन कहुं कछुक । ज्यांहां लीला रसके धाम । ठोर ठोर रमणीय सब । वृक्ष केली अभिराम ॥ १८ ॥ कुंज बहु ज्यांहां निविड अति । अरु कुसुम जु अनेक प्रकार । फूले हे बहु जाति के सो । कछुक कहु विस्तार ॥ १९ ॥ फुले अनेक अति रुचिर ज्यों । अरु पक्षी नाना जाति । अलौकीक सामग्री सबे । शोभा वर्णु बहुं भांति ॥ २० ॥

॥ फूनीहां ॥ सहकार मझोले मनोहर लांपो नैनहां आरक्त सुं सोहे सचीकण अति बहलात है नमिन हे डार लटके फीरी आइ जु अवनी हे । अति अद्‌भूत कुज नवीन बीराजत रवनीहे अति जांबुनी भेट जुरी बहु लता लवंग हे प्रति अंग अंग अरुगीजु सुशोभीत संग हे । बहु मीठे फल भरभार डारत सब निमित हे फनीहय गहे रे कुंज सुभावही शोभा अमीत हे ॥ २ ॥ हे निबुनी की बहु पांति । रुची रुची खांती सो । क्यारी चहुओर सुहाय । चोकी भांति सो । लत्ता मों लत्ता अरुझी । रवि कीरणन देखी ही **॥ फूनीहां ॥** महा नीवीड कुंज सब ठोर पैखही ॥ ३ ॥ सोहे बीजोरे के वृक्ष । बडे हे बहु । सबसु फलित फले अपार । मनोहर कहां कहो । सुपक्व पीत बहु राजत । अतिही सुहावने **॥ फूनीहां ॥** रइहे निवीड डार बहु पात । कुंज मन भावने ॥ ४ ॥ रची कमरख के बहु कुंज । सुं राजत हे घने । सहज सुभावही । ठोर ठोर कुंज ही बने । लटके फल सुंदर पीत जुं कंगुरा सोहही ॥ १ ॥ **॥ फूनीहां ॥** सर्वइ सुहावने कुंज सर्व सनी मन मोहीत ॥ ५ ॥ केरी रुपि बहु पांति । खांत्य भली भांति हे । चहु ओर ते कुंज बनेसुं । अतिही सुहाती हे । नमी जु रही बहु डारसु । फल ज्युत सोहेही **॥ फूनीहां ॥** रवनीकजु कुंजही कुंज देखी मन मोहही ॥ ७ ॥ बहु बेरजु बांकी डार । भार ते नमी रही । अति मीठे फल अद्‌भूत जाकी सर को नहि । हरी तपित अति लाल । बहुत रंग राजेही **॥ फूनीहां ॥** सब भांति मांति के कुंज बाग में भ्राज ही ॥ ८ ॥ सब कुंज कहां लो गीनो जु केरां दाके बने । इह कंटक कुटिर सुभाव । सहज असे घने । चो, ओर रचे ठाड कोट को । अन्य न आवही । **फूनीहां ।** इह कंटक कुटिल प्रकार प्रभु मन भावही ॥ ९ ॥ आवरेकी जो प्रांति भांति भली भाइ हे । अेकसार बनी नीकी छत नांसी सुहाइ हे । फूल राजत हे अति मोल अमोलक लाल हे **॥ फूनीहां ॥** परीपकव जु सोहत हे । सब अति ही रसाल हे ॥ १० ॥ नारंगी नवनव रुप अनुपम राजही । ललित डार फल फलीनसु सुंदर भ्राजही । अति सुपक्व अद्‌भूत गेहरे रंग सोहही **॥ फूनीहां ॥** अति मधुरे हे रस रासी देखी मन मोही हे ॥ ११ ॥ मीठे अंजीर अमोलककी सर कों करे । परिपकव भये अति सुंदर देखत मन हरे । दराख स्यामे छोटे बीज चुनीकी दूती धरे **॥ फूनीहां ॥** अे फूल महाबड भाग्य प्रभुको रुचे खरे ॥ १२ ॥ अरु राय आंबरेनी नीबु जो मीठे सुहावने । जंबुरा आरक पीस्प गोर मन भावने । श्रीफल के जु बने हे कुंज अनिरवन हे **॥ फूनीहां ॥** सुनी बिड बहुत भांत्य बिराजत भवन हे ॥ १३ ॥ फारसे जु सुंदर सोहत लाल गुलाब जो । अति मधुरता सु स्वाद पके जु रसाल सो । अरु नारी केरी के रोप

खजुर जा पास हे ।। **फूनीहां** ।। गुजरात ते आनि रुपेसु कहे हरीदास हे ।। १४ ।। माधवी से बहु कुंज जुं गुंजत हे अली । मकरंद महा रसमत । जो फुली हे कली फेली रह्यो हे सुवास कहे हरीदास सों ।

।। **फूनीहां** ।। यह अतिहीरवाने कुंज सुबर निसके जुको ।। १५ ।। चंपा बहु फुले फुलडार मन मोह ही साखा पसरी सब डोर कुंज पर सोहही । फेली रह्यो जु सुवास । महा मकरंद हे । **फूनीहां** । सब कुंजनी में ले जात पवन गति मंद हे ।। १६ ।। बढे बोरसली नीके वृक्ष । सुवास जु महकही । लसे कुंजनी उपेरडार आंइ बहु लहकही । कछु पवन परसते सोहती सुंदर लहलहे ।। **फूनीहां** ।। छोटे कंगुराके फूलीसु अद्‌भूत महमहे ।। १७ ।। श्रृंगाररस अति सार । सुं सुंदर देखीयें । डांडी जु लाल प्रवाल रसाल विशेषीये । अरु सुमन जु उज्वल भांति । नइ यह पेखीये ।। **फूनीहां** ।। वैन जु सब रवनीक कहा कहा लेखिये ।। १८ ।। केतकी के बने कुंज । रुचिर अति सोहही । बिराजत हे रवनीय । देखी मन मोहही । बहु फूले फल सुवास फेली सब कोर हे ।। **फूनीहां** ।। हरीदास कहे इह कुंज सब निसिर मों रहे ।। १९ ।। कंद कनेर के कुंज । सोहे इक सार हे । राजे फूले फले ज्युत सेत आरक्त अपार हे । रुचित हेरत गरे जु रंग बिरंगे हे ।। **फूनीहां** ।। वहलागत सुंदर भांति दोउ इह संग हे ।। २० ।। निवारे बडे बेहु फुले सुचेत चाहु ओरते पांत्य भांत्य भली भावही । कुंज बने गेहेरे सबही जु भुलावने । फूनीहां । सुवास सहित सुंदर खनीक सुहावने ।। २१ ।। गुलाब के फूले फूल सबे अति लालहै । विलाती रोप रुपेसुं अति जु रसाल हे । आमोद वहेजु अपार सु मकरंद ही भरे ।। **फूनीहां** ।। सब फुलनीके सीरताज याकी सरको कहे ।। २२ ।। महेके वेली चंबेली जु ओर रायवेल सो । सेवंती अति सुकुमार सार मुचुकंदजो । सोवर्ण ज्युथिका साथसुवकरंग हे ।। **फूनीहां** ।। बंदुक के फूल आरकत सुशोभीत संग हे ।। २३ । महेके मकरंद सुवास सुहाइ हे । बहु भमर करे गुंजार जु अति मन भाइ हे । सबने ते अति सुक्षम जुही अति अभिराम हे ।। **फूनीहां** ।। अतसी कुसुम सोहत अति सुंदर श्याम हे ।। २४ ।। तुलसी के वृंद सुहात जुं सुंदर हरी हरी । अति उग्र सुवासजी फेली सुशोभीत मंजरी । जासुके फुल जा लालसु सोहत संग हे ।। **फूनीहां** ।। विलातके फूल अनेक जु नाना रंग हे ।। २५ ।। अशोक जु पल्लव वृक्ष अति सुहावने गोल हे । गह गहाय गहेरे अतिराजे अमोल हे । बहु सुंदर कोमल पात सचीकरण लाल हे । फूनीहां । शोभा सहित

बिराजत कोउन तोले हे ॥ २६ ॥ अति बडे पेड सुंदर खीरणी के देखीये । फूल लागे हे जु अपार मनोहर पेखीये । परीपकव पीत प्री मीठे पीरे खीरी परत जु अवनी हे **॥ फूनीहां ॥** इह रुषके तरहर शोभा राजत रवनी हे ॥ २७ ॥ अंबली के पेड की प्रांति सुहाती जुहे खरी । गजनी गहरे गंभीर छयांह बहु विस्तरी । तरहर ठाडे मन बोढे जु शीतल शीतल सुखकरी **॥ फूनीहां ॥** लटकी सबडार भार बहु फल फरी ॥ २८ । चाहु वांस की जाल स्याल बनी प्यांत हे । बीच बीच वने हे कुंज अनुपम भांत्य हे । सुं कोउ जाने न गंध असे ठोर हे **॥ फूनीहां ॥** बागवान नही देखे क्यों जाने ओर हे ॥ २९ ॥ वट की छाहया अति शीतल सुखद जु राजही । इह वृक्ष प्रगटे परमारथ काज ही । सुभ्राजत सुंदर भांति नवीन जुपात हे **॥ फूनीहां ॥** देखत ही मन मोहत सबनी सुहात हे ॥ ३० ॥ पीपर पेड उराजत भ्राजत भावे ही । ज्याको चल दल नामसो पात सुहावे ही । चलके झलके जुत्र चिन्यकण रवि किरण निगले **॥ फूनीहां ॥** अति नुतन पत्र सकोमल आछे रगमगे ॥ ३१ ॥ निमजुग हेर गंभीर बात बस धर हरे । सुलागत परम सुदेश सहजही मन हरे । ज्यो देखत मात्र ही अंग अंग शीतल करे **॥ फूनीहां ॥** मत्तभाये कोउ कोउ आपते मद झरे ॥ ३२ ॥ सरवर की सोहे पांत्य ये भली भांत्तिसों । सो राजत हे इकसार रुपे करी खांत्यसो । सकोमल अतिआरे शोभीत हे खरे **॥ फूनीहां ॥** सुजानुं करावही काटी रुचिर करीके धरे ॥ ३३ ॥ करपटा फरे जु अनंत ओर गुलर नये । अरु उस कोमल छोटे सोहे छतना छये । समीसे हे जुना सीसो सब कहां लगु कहो **॥ फूनीहां ॥** ओर जो छोटे वहे बहुत सु केसे के लहो ॥ ३४ ॥ वेली अनंत प्रकार की क्यों करी जाती हों । आपुने रंगमें फूली सुकुंज सुहाती हे । सब रंध्र झुके हे अग्री जानी मन फूनीहे **॥ फूनीहां ॥** अपने बहुदल फल फलित ललित अनुकुल हे ॥ ३५ ॥ सब बाग कुसुम तरुवेली लता मन फूली हे । प्रभु आगम जानी आनंद भयो रस मुल हे । पल्लव कुम फले फल अेकही काल हे **॥ फूनीहां ॥** इह लीला रस उपयोगी रसीक रसाल हे ॥ ३६ ॥ सब बाग रोप रुचि पात जु शाखा तरु कहे । फल इह जु सहित सब बरने ज्यो ज्यो कछु इ कल हे । बेली सुनव सुवास सहित बरने सबे **॥ फूनीहां ॥** गोकुलपति पांउधारे सो सो बरनो अबे ॥ ३७ ॥

|| राग गौडी ||

गोकुलपति भोजन करी आये सुखरुप । सेज्या पर बेठे सुख बरसत हे जु अनुप || १ || हांसी टोक चले बहु वचन जु परम रसाल । सुनी सुनी के प्रफुलीतमन रीझती हे सब बाल || २ || नेन सेन समुजावे जासो जांहां संकेत । श्रीमुख कहे आवेंगे हम कुसुमन के हेत || ३ || उत्थापन ते पहेले तुम सब चालो जु बाग । पाछे ते हमहु आये कहे अति अनुराग || ४ || रसीक मनोहर वचन सुनत मनमां बढे जु रंग । नाना मांति मनोरथ करी चढी भाव तरंग || ५ || चादर ले श्रीमुख उपर तब सब चले जु धाम । दे आशिष कही वेगी उठो करो पुरन काम || ६ || भक्त सब घर आय प्रसाद जु पाये वेग । कछु विश्राम कीयो जु सदा नीत प्रति के नेग || ७ || तबही उठे आतुर अति सब कोउ चले जु बाग । श्रीमुख वचन प्रमाण करे जु सहित अनुराग || ८ || सुंदर वसन जु पहेरी कीये सादा श्रृंगार । आनंदित मनोरथ ज्युत राजति हे जु अपार || ९ || आप आपते आवत सबही भरे अनुराग । अति सत्वर गति पहोंची सबही मनोहर बाग || १० || अपने अपने झुंड ज्यु मृदु मुशकी कहे बात । प्रति प्रभु पांउधारे फुल्यजु अंग न समाती || ११ || विनत कली कुसुमकी मनमें मोदजुं रंग । प्रिय पांउधारें ते तब हम बीनेगे संग || १२ || पेंडो हेरत हे जु अेक चीत सखी समाज । काहे अवेर होत हे मति विरमे कहु काज || १३ || अेक कहे को जाने बागमें आये नाथ । दुरीदुराय कोउ कुंजमें खेलत हे प्रिया साथ || १४ || काहु कोनुं रिह दारुण व्यापत हे अंग । आवत सुधी अनुभवकी विलसी जु हे प्रिया संग || १५ || ज्यों ज्यों रम्य रसीकथल देखती अपने नेग । त्यों त्यों तन परिताप बढे जु होती बीनु चेन || १६ || कोउ गाती रस ज्युत पियकी लीला रस सार । सुन सुनी नको व्यापत विरह जु अनेक प्रकार || १७ || ताकी सखी सहेली समुजती नेनकी सेन । आसपास घेरे रहे मुख ते न बोले बेन || १८ || जोड़ जोइ आवत जातसु अपने अपने रंग । जाय लुनत हे तांहा जांहा सखी सुजाती संग || १९ || मंदिर में ठाकुरजी जागी उठे उलकाय । मतो हे जु बागमें लीला हीत मन भाय || २० || अरुण नयन राजन सबही अंगही अंग अेडात । गति शितल अति राजत बारबार जंभात || २१ || सुरत समे के चिन्ह जु प्रगटीत परम सुदेश । केसेके बरनो अति अद्भूत मनोहर वेश || २२ || अचयो जल बीरा बहु लीने अति ही सुवास । बोलत वचन मधुर विकसीत मुख इषद हास || २३ || मागी पाग वेगी कही आगे धरी खवास । धारी श्याम

मनोहर बांधी अति उल्हास ॥ २४ ॥ उपरेना ओढ्यो अति सत्वरे कहे हरीदास पांउभागे बागमें कोउ नहि तब पास । २५ ।

॥ दोहा ॥

श्री गोपाल जु आवत सब बालक को ले रंग । लाडबाइ के बाग में चले जु अपने रंग ॥ १ ॥ समजुत हे इह भाव सब ठाकुरको जु प्रकार । अनुरोध मन कछु होय हम ते मन में येहे विचारी ।। २ ॥

॥ राग ॥ पेंडो ॥ हेरत हे जु बाग में भक्त जुथ बहु । वल्लभ अजहु न आये मन विरमाय रहे कहु ॥ १ ॥ ज्यों चकोर तरसत हे रजनीमें रकी सही । त्यां इकटक मन चित वत परम प्रेष्ट गोकुलेश ही ॥ २ ॥ तब अछनु अछनु पाउंधारे कुंज कुंज के पाछे । ज्यांहां संकेत रच्यो जु कुंज गहेरेअति आछे ॥ ३ ॥ चकित नयन चहु दश चितवत कोउ देख्यो नाही । निल वसन पहेरे सुभगा दुरी ठाडीरी तोहाही ॥ ४ ॥ आतुर भये आपुन तब प्रिय धसी हसी गही बांही । ज्यों घनमें विजुरी चमकी अति लागी सुहाइ ॥ ५ ॥ दोउ त्रिषारत आरत रती ज्युत रती वीलसन को । दोउ मगनरस चितवत मुख जु विलास हाससो ॥ ६ ॥ दरसत दरस सरस परसत कुच कुच कपोल कर । आलिंगन परिरंभन चुंबन दंपती रतभर ॥ ७ ॥ भाल कपोल अरुगाल नेन दोउ अधर सबऊपर । चिबुंक चारु ठोडी चुंबत सब अंग मनोहर ॥ ८ ॥ दोउ परस्पर मत्त प्रीति ज्युत अति अनुरक्त ही । लीला सागर मगन भये दोउ अति आशक्त ही ।। ९ ॥ नीवी मांचन करत संकोचन दोउ के मन गत क्रीडा जु करत क्रीडा दोउ जो रसीकतन ॥ १० ॥ हारी न मानत कोउ कोउ भये मनसीज बस । अनिरवचनी केसे करी वरनो । अति अथाह रस ॥ ११ ॥ भक्त बहु अकुतात बागमें कुसुम लुनत सब । कोने जु विरमाया पीय अजहु न आये सब ॥ १२ ॥ अेसे वचन बहुत बहु भांतिनी करती त्रीयागण । वल्लभवीण अकुताय चेन नही काहु के मन ॥ १३ ॥ कुंज ओट ते भक्त जुथके वचन सुने जब । विनयी वचन कहीके उनये आज्ञा मांगी तब ॥ १४ ॥ बांये दाहने इत उत फीरी धीरीके आये तांहां । अति आतुर जु त्रषारत भक्त मंडळी हे ज्यांहां ।। १५ ।। बोले वचन रसाल आय के पीठ जु पाछे । सुनत ही फीरी देखे नवनाह निहारत आछे ॥ १६ ॥ सनमुख भइ नख शीख अवलोकीत हे जु त्रियागण । रुप अनुप निहारती हारती वारती हे तन मन धन ॥ १७ ॥ जो रती नेंन कटाक्ष सबे अपने अपने रंग । टारे प्रिय परिताप

नीरखी प्रति प्रति भगवदी अंग ॥ १८ ॥ बाढ्यो हे उछाह थाह केसे कोउ पावे । कुसुम लुनति रंग भरी सबे पीय सनमुख आवे ॥ १९ ॥ वे सुभगाजु आय मीली कुंज में खेली जोइ । पीछे ते जु आय रली मली सखी अनीमें सोइ ॥ २० ॥ दरसन रसजु मगन ताते समुजी नही कोय । सब काहुके संग कुसुम जु लुगनत हे सोउ ॥ २१ ॥ निकट गये वल्लभ के संग जु लुगन त निवारो । श्री गोकुलपति कटि बांध्यो जु कंडीओ न्यारो ॥ २२ ॥ कली वनीके दे सब कोउ ठाकुर जु के कर । भरत अपनपो बासन मनमें अति उछाहा भर ॥ २३ ॥ आप लुनत जु कली काची कछु कही न जाइ । चंचल दीठी चलावत ईत उत ज्यांहां मन भाइ ॥ २४ ॥ न्यारो ठोर कुसुम विनत हे ओर जु भुर ही । सहज सुभाव लुनत हे इच्छा ते वे दूर ही ॥ २५ ॥ इंहां वढे रसपुर सुरस वसन मुख बीने । इक इक ते गुन आगरी नागरी परम प्रविणे ॥ २६ ॥ श्री गोकुल नायक के अंग रंग बढ्यो अतिभारी । नैन नैन सो अटके दीठी न जाति निवारी ॥ २७ ॥ कोउ जु वचन विलास कहे कोउ टोक जु रस भारी । कोउ मुसके चीतवे मुख घुंघट ओट प्रेम पर ॥ २८ ॥ पीय नेन कमल सत्कार करत हे अेक अेक प्रति । सब अपने मनमें प्रसन्न होती अति ॥ २९ ॥ बुनत कुसुम चले जातजु ओर आगे । जासो मन अटक्यो जु कली ताको तकी माहे ॥ ३० ॥ आपुन बुनत कुसुम । सुं देत प्रिय के करमांही । पेखके दूर ते आंखी देखावती हे पीय तांही ॥ ३१ ॥ उपरेणां बांधी कुसुमकी दुकजु समोर । मनभाइ ज्यांहां ठोर । तांकी ता उपर डारे ॥ ३२ ॥ काहुकी सारी करग्रही कंटक उरझावे । नये नये क्षाल करत आपुन जु रसिक मन भावे ॥ ३३ ॥ नेक कीरत झीनी सारी कोउ कटक भइ तब । अतीरस मत्त हसें पीय बहुत हसी त्रियगण सब ॥ ३४ ॥ प्रभुके परम विनोद देखीके सब कोउ फुले । प्रेमदा अरु पक्षी सब वेली वृक्ष समुले ॥ ३५ ॥ शुक अरुपीक सहकार चढे बहु मंगल गावें । अति आनंद भरे उद्दीपन बोल सुनावे ॥ ३६ ॥ मोर मंडलाकर छत्र धरी सनमुख आवें । उध्ध् रस नाचत जू ढेल संग अति ही सुहावें ॥ ३७ ॥ नील चास्य दां हां नां वर्त फीरी फीरी तोरन बांधे । मन भाये मनोरथ करी करी बहु सुकन जु साधें ॥ ३८ ॥ नाना रंग कपोत रसिक जाति मिली आवें । भांति भांति चुंबन परिरंभन करी जु दीखावें ॥ ३९ ॥ खंजन खेलत हे दं पति मिली मिल पिय आगही नैननी सेंन बतावती नागरी अति अनुराग ही ॥ ४० ॥ लाल मुनैयां हरित पीत राते रंग राजे । चँरें आंबरन बरन रुखती पर बहु विभ्रांजे ॥ ४१ ॥ बोली सुनावत हे जु सारिका आछी भांत्य ही ओर जु नाना पक्षीक सब शब्द सुहात ही ॥ ४२ ॥ मत्त मधुप गुंजार करत प्रीय देखी

देखी अब अपने अपने कुंज भवन जु बुलावत हे सब ॥ ४३ ॥ चतुर नायका एक प्रपंच कीओ जु ओर जब । परम चतुरवर वल्लभ मिस कही के बोले तब ॥ ४४ ॥ सुंदर भांती समारी पना गगरा भरी आने नेंन सैन पधराय पीय कुंज निमें छाने ॥ ४५ ॥ लीला सहीत नागरी भली भली राजती अती । गगरा लीने माथ पना पावत अति ही रति ॥ ४६ ॥ विरमावती ज्युबती सबको मिस करीके ऐसें । ज्यों कुंज निमें रंग रेली केली करीके असे । ज्यों कुंज निमें रंग रेली केली बरनों कही केंसे ॥ ४७ ॥ उमग्यो ज्यों रस सागर बांनी बरनी न आवे । विविध बंध रस रास उभय अंग अंग सचु पावें ॥ ४८ ॥ नवनागर गुण अपार नवनागरी रंग राचें । अनिरवयनी जु अलौकिक कोल कला दोऊ नाचे ॥ ४९ ॥ मन भाये मनोरथ दंपति मिली पुरण कीने । नित नित प्रति नव खेल केली बहु भांति नवीने ॥ ५० ॥ पना पान कीजे मीठो फीरी बाहिर आये । बहुरी बढे हरीदास विलास हासमन भायो ॥ ५१ ॥

॥ राग गौडी ॥

ग्वालनी जो वन गर्व महेली ह देखी तब फीरी अद्‌भूत शोभा बाढी । कुसुम लुनत सब सनमुख हाडी ॥ १ ॥ जंगम वेली बहु विध सोहें । प्रति प्रति अंग देखी मन मोहें ॥ २ ॥ अंकुर वल्लभ कुसुम सहित सब । विविध भांति फल फरी जुहें अब ॥ ३ ॥ ठोर ठोर फेली रस वेली । कनक भांति नवेली ॥ ४ ॥ जाते शोभीत हे सब बागें । अद्‌भूत भांति मनोहर लागे ॥ ५ ॥ सुभग शीष परम निरधर राखे । फली उपेंर वंदन रज भ्रांजे । ६ । ता उपर मुक्ता जु वधाओ । सोपरी मनी अति जु सुहाये ॥ ७ ॥ काम कमान केसे अति गाढे । हेसर साधत अति मन बाढे ॥ ८ ॥ ताके ढींग खंजन जुग नाचें । अद्‌भूत देखन पियमन रांचे ॥ ९ ॥ तांहां सोहत शुक परम नकाई । वेली शोभा कही न जाइ ॥ १० ॥ बिंबी फल अति अरुन जो सोहें । शुक तांहां चांच चलावत जो हे ॥ ११ ॥ मधुरी बांनी कोकिल बोले । कोमल पात होत तब लोंले ॥ १२ ॥ अति मीठे फल लागे हे बहु । छोटे बडे सु क्यों करीके कहों ॥ १३ ॥ अतिज तननी ज्युत बसन जु भ्रांखे ताके उपर ध्वनी बिराजें ॥ १४ ॥ परम रुचिर सोभा ईह देखें । प्रीतम द्रिठा लागे ननिमें ॥ १५ ॥ कमल सनाल प्रफुल्लित लटकें । अद्‌भूत वेली देखी मन अटकें ॥ १६ ॥ ओर कमल बहु भांति जु सोहें । जंगम वेली निरखी मन मोहें ॥ १७ ॥ गोकुलपति मन ही मन फुलें । शोभा निरखी ओर सब भूले ॥ १८ ॥ ठोर ठोर लागत जुखाने । वर्णन क्यों करी करों

प्रमाणें । १९ । कुप शुशोभित हे मनुहारी । उपकंठ रहे लागत सुखकारी ॥ २० ॥ यात्रक जु बोले मधुर बांनी । चरस चलत अति शीतल पांनी ॥ २१ ॥ भर्यो चहे बचानी को लागें । जल तही ते धसी जो चले जु आगें ॥ २२ ॥ अवनी पर रवनी अति सोहें । ढोर ही ढोर चलत मन मोहें ॥ २३ ॥ क्यारी सबे भरी बहु छलकें । तातमें प्रतिबिंब जु ललके ॥ २४ ॥ अध उरध अति शोभा राखे । सोहत हे सुंदर जु समाजे ॥ २५ ॥ कुकम लुनत बहु खेलजु कर ही । अनिर वचन जु रसिक रस मरनी ही ॥ २६ ॥ इत उत चाही दीठी बोरावे । जेसें ओर न देखन पावें ॥ २७ ॥ रस मेदी सो जल में देखी ॥ लीला रस प्रतिबींब जु पेखें ॥ २८ ॥ टोक कहे पता जु बतावें । हांसी करत सबे सचु पावें ॥ २९ ॥ लीला वरनण पार न आवें । रास सागर क्यों अंजुली मावे ॥ ३० ॥ बाग लीला रस रातें । भक्त सहित क्रीडत मदमाते ॥ ३१ ॥ बरीआं भई तब फीरी पौधारे । भक्त रसिक जन रही जु निहारे ॥ ३२ ॥ ठाडी ठगी पीयकों तब हेरें । सुधी मूली सबको तीही वेरें । ३३ । मर्जाद डर संग न जाइ । ताते ए सब रही दु:ख पाई ॥ ३८ ॥ बडे मजाद ज्युत जो चलें प्रभु के संग संग सो । ३५ । अति सत्व गति मंदिर आये आंगन में सबको सचु पायें ॥ ३६ । ठोर ठोर बहु छाब जो सोहें । सब कोउ निरखी निरखी मन मोहें ॥ ३७ ।। प्रभु आये जु परम शेभा भर । आनंदित सब कोउ प्रेम पर ॥ ३८ ॥ पिय गादी तकीया जु बिराजे । ठोर ही ठोर छाव बहु भ्राजे । ३९ । बागनी तें को को चली आवें पीय मुख निरखी परम सचु पावें ।। ४० ॥ अनुभवी सृष्टि मली सब साथ ही । गावती गोकुलनाथकी गाथ ही ॥ ४१ ॥ पाछें ते सब चली जु संग ही । सबको मदभरी अपने रंग ही ॥ ४२ ॥ सुमनसि वन पिय संगभिलाषी । रसिक आसमनमें ईह राखी ॥ ४३ ॥ महाप्रभु मनमें पेंडो हे रे । नाहन केही तो होत अवेरें ॥ ४४ ॥ मन भावती सब मंदिर आई । वर वल्लभ जु रसिक मन भाई ॥ ४५ ॥ दीठी दीठी जुरी मृदु मुसके तब । छाब छाब पर बेठ गई सब ॥ ४६ ॥ चोक तीबारी रमनी लागे । अति कवनी राजति पीय आगे ॥ ४७ ॥ फूल सीवत सबकें मन फुले बेठे सनमुख पीय अनुकुले ॥ ४८ ॥ बहु बेटी अपनी बेठक मांहां । कुसुम मागी माला जु करें तांहा ॥ ४९ ॥ प्रभु उठी तेलाभ्यंग करावें । नित तिनके नेग जल धरें नाहावे ॥ ५० ॥ अंग वस्त्र करी धोती धरी धर ही । लावण्य ललित सहित मन हर ही ॥ ५१ ॥ करी जु तिलक मंदिर पौधारे । हरीदास बै आपन पो वारें ॥ ५२ ॥

॥ दोहा ॥

फूल बाग लीला एक कही । कछु थारे में रस रुप । रसिक भक्त गावे पढे । जय गोकुल भूप ॥ १ ।। अब आगे रस फीरी कहु । ज्यों छापर बेठे सोही । सुमन सीवत सुख राश मों । सुख सेख्या पोढें ज्योंही ॥ २ ॥ **राग सामेरी** । प्रभु भीतर पधारे । निजजन सब कोउ प्रान उवारें ॥ १ । चतुर वर परम प्रवीणें । नितके नेग वेग सब कीने ॥ २ ॥ **उथलो** :- ए नित नेग वेग सबें कीओे । श्री आचार्यजी कृत नित्य जे । भोग विविध प्रकारके सब समर्पे । अति प्रेम तें ॥ ३ ॥ सब कह्यो हे नित चरित्र में । सो फेरीके कहा कहों अबें । व्यारु कराय आगनो करी सो विशद करी जो कहों तबें ॥ ४ ॥ **देशी** । मंडनी सेज्य समारी नाना भांति कुसुम मनुहारी ॥ १ ॥ विचित्र बितान जु सोहे । वहु विधि रंग देखी मन मोहें ॥ २ । **उथलो** । ए मन मोहे रंग विचित्र देखत । मंडनी सेज्या रची । झरोखा झाली समारी । विविध भांती जु रची पची ॥ ३ ॥ कुसुम के तोरण समारे । कुसुम के कींदुक बहु । कुसुम की चादर कुसुम की माल सब कहां लों कहे ॥ ४ ।॥ २ ॥ **देशी** ॥ नाथज्यु को पोढाये । वेगी महाप्रभु वेठी के आये ॥ १ ।। भक्त नीके भये आये । श्री मुख निरखी सबें सचु पाये ॥ २ ॥ **उथलो** :- ए सचु पाय श्री मुख देखीं के सब । प्राण तन मन वार हीं । प्रसन्न वदन निहारी के । जय जय कही उच्चार ही ॥ ३ ॥ शोभा बढी आगण तीबारी । छाब सब दीपक सोहें नायका ज्युत जगमगे पीय । दुरी ते देखी रमा मोहें ॥ ४ ।॥ ३ ॥ **देशी** ॥ नेन सेन के बुलावे । अपनी छाब तांहां पीय आवें ॥ १ ॥ ईह लालच सब लोचे । वचन कह्यो नहि जात संकोचे ॥ २ ॥ **उथलो** । संकोच तें कह्यो जात नांही । लालच मनमें बहु रहे । फूल आज बहुत रहें कही । के जु श्री मुख तनव हे ॥ ३ ॥ तब चतुर वर परिताप हर । हसी आये छाब सोहामणी । मनकी अटक तांहां लटकी आये । भाग्य निधी सो भांमिनी । ४ ।॥ ४ ॥ **देशी** ॥ अब सब मनसुख हेरें । महाप्रभु मुसकी रहेंती ही वेर ॥ १ ॥ सुमन प्रोहत मन प्रोहे । भक्त सबें वा छाब ही जोहें ॥ २ ॥ **उथलो** :- ज्यों हे छाब सोहामणी । सब कामिनी फीरी फीरी तांहां । मामिनी अभिरामनी । श्री वल्लभ वर बेठे जांहां ॥ ३ ॥ अति सुगम जोरी सहज सुंदर नेंन भरी भरी देख ही । रसिक वर नागर नवल रस रत्न ज्योति जु पेख ही ॥ ४ ॥॥ ५ ॥ **देशी** ॥ रसवस रसतिक निहारे । आंन चहे तब नेन निवारे । सब रस पूरन कीनें । रसिक सबें जु महा रस भीने ॥ २ ॥

उथलो :- भीजी रस वस मगन भई सब । रस सागर आंगन ज्यों है । बहु छाब सब कुसुम [illegible] भरी । आवर्त अद्भूत ए सोहे ॥ ३ ॥ पार कोउ पावें नहीं । रस उध्धीत रंग आनंद कों । [illegible] लोचन उछलित मीलो चाहें गोकुल चंदको ॥ ४ ॥ ॥ ६ ॥ **देशी** ॥ कुसुम भये सबे [illegible] बिछाई हें नित नेग ॥ १ ॥ चरण क्षालन प्रभुकीने । सेज पधारे परम प्रविणे ॥ २ ॥ **उथलो** । पौधारे परम प्रवीण सेज्या । प्रेमवश निरखें सबें । नित नेग तनीआ पहरी पहरी बेठें । क्यों [illegible] शोभा अवें ॥ ३ ॥ पाग बांधी हे मनोहर तुरा पीत सोहावने चरण संवाहन करत हे भक्त [illegible] मन भावते ॥ ४ ॥ ७ ॥ **देशी** ॥ दरसन करे प्रिया ठाडी । मन रस रीत्य अपर[illegible] वाढी ॥ १ ॥ नव नव रुची नव अंगे । तिय तरंगिनी चढी भाव तरंगे ॥ २ ॥ **उथलो** :- [illegible] भाव तरंगीनी प्रिया पीय रस सागर रली । निरवारी को न्यारी करें । ज्यों अतरांत मन मन मली ॥ ३ ॥ सुख सेज पोढे रसिकवर । अब अनीर वचनी क्यों कहुं । हरिदास आशिष दे फीरें । कहे वेगी उठी करो काज बहु ॥ ४ ॥ ८ ॥ पूर्ण ॥

। ईति श्री भक्त सुख मंजरी ।

। बाग विहार वर्णनो नाम । चतुर्दशः प्रभाव ॥ १४ ॥ संपूर्ण ॥

संवत १८५७ वर्षे प्रथम ज्येष्ठ सुदि ॥ ७ ॥

दीने ली. जो ती नाहन ।

इति श्री भक्त सुख मंजरीय गाम कालोल मध्ये उतारेल ।

ली. देसाई हिंमतलाल माणेकलाल (ओवरसीयर) ना

बे हाथ जोडी विनय सहित जय जय जय श्री रमणेश ॥

॥ जय जय जय श्री गोकुलेश ॥

॥ श्री । श्री । श्री ॥